THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 108 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) श्रावण कृ. 3/4 2080 गुरुवार, 6 जुलाई 2023

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 : 8 रुपये

अजित खुद बने अध्यक्ष

बोले- उम्र हो गई, अब आशीर्वाद दीजिए; शरद का जवाब- अजित खोटा सिक्का

मुंबई, 5 जुलाई (एजेंसियां)। अजित पवार ने शरद पवार को एनसीपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से हटाने का ऐलान किया है। अजित ने खुद को नया राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बताया। प्रफुल्ल पटेल ने पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक बुलाई थी, उसी में यह फैसला लिया गया। इधर, अजित गुट ने चुनाव आयोग में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और उसके चुनाव चिन्ह घड़ी पर अपना दावा जताते हुए पत्र भेजा है। इधर, शरद गुट के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल ने अजित पवार समेत 9 विधायकों को अयोग्य घोषित करने की मांग की है। इससे पहले मुंबई में दोनों गुटों की बैठक हुई। अजित ने शरद की उम्र पर तंज कसा तो, शरद पवार ने उन्हें खोटा सिक्का कहा। बैठक के बाद अजित अपने समर्थक विधायकों को होटल ले गए हैं।

शरद पवार: गलती सुधारना हमारा काम है

वाईबी चह्वाण सेंटर में मीटिंग में शरद पवार ने कहा- जो शिवसेना के साथ हुआ, वही एनसीपी के साथ हुआ है। अजित पवार के मन में कुछ था तो मुझसे बात करनी चाहिए थी। सहमति नहीं हो तो बातचीत से हल निकालना चाहिए। अजित की बात सुनकर अफसोस हुआ। गलती सुधारना हमारा काम है। आपने गलती की है तो सजा भुगतने तैयार रहें। आज की बैठक ऐतिहासिक है। देश का ध्यान इस पर है। अजित की भूमिका देश हित में नहीं है। मैं सत्ता पक्ष में नहीं हूं। मैं जनता के पक्ष में हूं। प्रधानमंत्री जब बारामती आए थे उन्होंने कहा था कि देश कैसे चलाना चाहिए यह मैंने पवार साहब की ऊंगली पकड़कर सीखा है। जो मुझे छोड़कर गए हैं उन्हें विधानसभा में लाने के लिए बहुत मेहनत की है। कार्यकर्ताओं ने इनके लिए मेहनत की। उनके लिए अफसोस है। जो विचारधारा पार्टी की नहीं है उसके साथ जाना ठीक नहीं है। जिन विधायकों ने अलग होने का फैसला किया, उन्होंने हमें विश्वास में नहीं लिया। अजित पवार गुट ने किसी प्रक्रिया का पालन नहीं किया। पार्टी का चुनाव चिह्न हमारे पास है, वह कहीं नहीं जाएगा। हमें सत्ता में लाने वाले लोग और पार्टी कार्यकर्ता हमारे साथ हैं। हम पार्टी का सिंबल किसी को नहीं लेने देंगे। अजित पवार खोटा सिक्का निकला। वे लोग मेरे फोटो का इस्तेमाल क्यों कह रहे हैं। वो मुझे देवता भी कहते हैं और मेरी बात भी नहीं मानते। जो लोग बीजेपी के साथ गए हैं उनका इतिहास याद करो। जो उनके साथ गया वो सत्ता से बाहर हुआ। नागालैंड, मणिपुर सीमाई राज्य हैं वहां स्थिरता के लिए मैं भाजपा के साथ गया।

इमरजेंसी में इंदिरा गांधी के खिलाफ माहौल बना हुआ था, लेकिन शिवसेना ने सोचा कि हमें देशहित में सोचना चाहिए और शिवसेना ने उनके खिलाफ एक भी उम्मीदवार नहीं खड़ा किया जाए। देश में कटुता नहीं बढ़े इसलिए बाला साहेब ठाकरे ने यह फैसला लिया था। भाजपा का हिंदुत्व बांटने वाला है। जहां सत्ता नहीं है, वहां दंगे कराती है।

अजित ने कहा- आपकी उम्र ज्यादा हो गई, आशीर्वाद दीजिए

बांद्रा के भुजबल नॉलेज सिटी के एमईटी सेंटर में हुई बैठक में अजित पवार ने कहा- आपकी (शरद पवार की) उम्र ज्यादा हो गई है। राज्य सरकार के कर्मचारी 58 साल में, केंद्र के 60 साल में, भाजपा में %5 साल में रिटायर्ड हो जाते हैं, लेकिन आप 84 साल के हैं। अब आप आशीर्वाद दीजिए। आपने पहले इस्तीफा दिया, फिर कमेटी बनाई और सुप्रिया सुले को राष्ट्रीय अध्यक्ष बना दिया। जब इस्तीफा वापस लेना ही था तो दिया ही क्यों था। मैं भी राज्य का मुख्यमंत्री बनना चाहता हूं। राज्य की भलाई करने के लिए राज्य प्रमुख का पद होना जरूरी है। तभी मैं महाराष्ट्र की भलाई कर पाउंगा।

अजित ने कहा 2004 के विधानसभा चुनाव में एनसीपी के पास कांग्रेस से ज्यादा विधायक थे अगर हमने उस समय कांग्रेस को मुख्यमंत्री पद नहीं दिया होता, तो आज तक महाराष्ट्र में केवल राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का ही मुख्यमंत्री होता। 2024 के चुनाव में भी मोदी जी ही आएंगे। मुझे ऐसा लगता है। काम करने के लिए पद होना चाहिए। 2004 में एनसीपी का आंकड़ा %1 था। मैं उसे इसके आगे ले जाउंगा। हमें भी सभा लेनी होगी अगर मैं चुप बैठा तो लोग सोचेंगे इसमें कुछ खोट है। मुझमें खोट नहीं है। हम इतने दिन साहब की छाया में थे, लेकिन हम सबका अपना भी एक मत है। हमें शिवाजी के सपने को साकार करना है। साहब (शरद पवार) 1962 में राजनीति में आए, 38 की उम्र में उन्होंने कई काम किए। अगर इतिहास देखो तो लोकशाही में ऐसा कई बार हुआ। हमने हर बार साहब का साथ दिया। दोस्तों सभी का समय होता है। नेता ने जब-जब जैसा बोला हमने किया। आज जो कुछ भी हूं, साहब की वजह से ही हूं।

सुप्रिया का जवाब- ऐज सिर्फ एक नंबर है

शरद पवार गुट की मीटिंग में सुप्रिया सुले बोलीं- ये लड़ाई सत्ता की नहीं है।

>14

नगालैंड में पहाड़ से गिरे पत्थरों ने कारों को कुचला

3 सेकेंड में मलबा बनीं 3 गाड़ियां; 2 की मौत, 3 गंभीर रूप से घायल

कोहिमा, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नगालैंड के कोहिमा-दीमापुर हाईवे पर मंगलवार शाम लैंडस्लाइड की घटना हुई। हाईवे के एक तरफ खड़े ऊंचे पहाड़ों से बड़े पत्थर गिरना शुरू हुए, जिनमें से दो पत्थरों ने हाईवे पर खड़ीं तीन कारों को कुचल दिया। पत्थर इतनी स्पीड में गिरे कि कारें पूरी तरह तहस-नहस हो गईं।

दीमापुर के चुमोकेदीमा में हुए इस हादसे में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन लोग गंभीर रूप से घायल हुए। पत्थरों ने जिन कारों को कुचला, ठीक उनके पीछे खड़ी कार के डैशबोर्ड कैमरा में ये पूरी घटना कैद हो गई। वीडियो में देखा जा सकता है कि कैसे सिर्फ 3 सेकेंड के अंदर एक के बाद एक करके दो बड़े पत्थर तीन कारों पर आकर गिरे।

दीमापुर के पुलिस कमिश्नर केविथुटो सोफी ने बताया कि हादसा मंगलवार शाम 5:30 बजे दीमापुर के ओल्ड चुमोकेदीमा पुलिस चेक गेट के आगे हुआ। हादसे में चार वाहन क्षतिग्रस्त हुए। एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन लोगों को रेस्क्यू करके दीमापुर के अस्पताल भेजा गया। इलाज के दौरान एक व्यक्ति ने दम तोड़ दिया।

पुलिस कमिश्नर ने बताया कि इस हादसे की वजह से हाईवे पर लंबे समय तक ट्रैफिक जाम रहा। हादसे की जानकारी मिलने पर ट्रैफिक पुलिस के जवान मौके पर पहुंचे। कुछ अफसर मृतकों और घायलों की जानकारी जुटाने के लिए अस्पताल गए।

एनसीपी की लड़ाई पहुंची चुनाव आयोग

अजित पवार धड़े ने ठोका पार्टी पर अपना दावा, दाखिल किए 40 हलफनामे

मुंबई , 5 जुलाई (एजेंसियां)। महाराष्ट्र की सियासत में अजित पवार की एनसीपी से बगावत के बाद सरगर्मी तेज हो गई है। पार्टी में फूट के बाद शुरू हुई लड़ाई अब एनसीपी पर अधिकार पर आ गई है। चाचा-भतीजे दोनों ने अपने-अपने दावे किए हैं। दोनों का कहना है कि उनके पास सबसे ज्यादा विधायक है। अब पार्टी पर अधिकार की ये जंग चुनाव आयोग के दरवाजे तक पहुंच गई है। पता चला है कि अजित पवार के नेतृत्व वाले समूह ने उनके समर्थन में आयोग में विधायकों और सांसदों के 40 से अधिक हलफनामे दाखिल किये हैं। इसमें कहा गया है कि पार्टी के ज्यादा विधायक हमारे पक्ष में हैं। इस तरह उन्होंनें पार्टी पर अपना दावा ठोक दिया है।

चुनाव आयोग के सूत्रों ने बताया है कि भारतीय चुनाव आयोग को अजित पवार की ओर से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और पार्टी चिह्न पर दावा करने वाली याचिका मिली है। वहीं, शरद पवार खेमे ने भी चुनाव आयोग के समक्ष एक कैविएट दायर किया है। इसमें अनुरोध किया गया है कि दोनों गुटों में चल रही पार्टी की लड़ाई के संबंध में कोई भी निर्देश पारित करने से पहले उनकी बात सुनी जाए। साथ ही आयोग को जयंत पाटिल से भी एक चेतावनी मिली है कि उन्होंने 9 विधायकों के खिलाफ अयोग्यता प्रक्रिया शुरू कर दी है।

सूत्रों का कहना है कि चुनाव आयोग आने वाले दिनों में इन आवेदनों पर कार्रवाई कर सकता है। इसके लिए वह दोनों पक्षों से उसके समक्ष प्रस्तुत संबंधित दस्तावेजों का आदान-प्रदान करने के लिए कह सकता है।

पंचायत चुनाव से 3 दिन पहले बंगाल में फिर हिंसा

साउथ 24 परगना में टीएमसी -आईएसएफ समर्थकों के बीच बमबाजी; नाबालिग युवक की मौत

कोलकाता, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल में 3 दिन बाद होने वाले पंचायत चुनाव से पहले फिर एक बार हिंसा की घटना हुई है। साउथ 24 परगना जिले के देगंगा इलाके में मंगलवार रात टीएमसी और आईएसएफ समर्थक आपस में भिड़ गए। इसके बाद दोनों ने एक-दूसरे पर क्रूड बम से हमला किया। इसमें 17 साल के एक टीएमसी समर्थक की मौत हो गई। इससे पहले 3 जुलाई को साउथ 24 परगना जिले के बसंती इलाके में टीएमसी कैंडिडेट के पिता की गोल मारकर हत्या कर दी गई थी। इसी दिन साउथ 24 परगना जिले में क्रूड बम के फटने से एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। पुरुलिया में भी एक भाजपा कार्यकर्ता का शव मिला था। पश्चिम बंगाल पुलिस ने 3 जुलाई को बताया था कि 9 जून यानी पंचायत चुनाव के नॉमिनेशन की तारीख के बाद अलग-अलग घटनाओं में 10 लोग मारे गए हैं। यानी आज की घटना को लेकर अब तक कुल 11 लोगों की मौत हो चुकी है।

आरोपी के वकील बोले-ईडी पर लगाम जरूरी

बंसल ब्रदर्स की गिरफ्तारी पर कहा- जब तक ईडी पावरफुल, तब तक देश में कोई सुरक्षित नहीं

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट में सीनियर एडवोकेट हरीश साल्वे और मुकुल रोहतगी ने ईडी की शक्तियों पर सवाल उठाए हैं। साल्वे ने कहा कि जब प्रवर्तन निदेशालय ईडी के पास उसे दी गईं कठोर शक्तियां हैं, तब तक देश में कोई सुरक्षित नहीं है, इसलिए इसकी शक्तियों पर लगाम लगाने की जरूरत है।दोनों वकील मनी लॉन्ड्रिंग केस में गिरफ्तार एम3एम डायरेक्टर्स बसंत बंसल और पंकज बंसल की तरफ से दलील रख रहे थे। सुनवाई जस्टिस एएस बोपन्ना और जस्टिस एमएम सुंदरेश की बेंच कर रही थी।

रियल्टी ग्रुप एम3एम के डायरेक्टर्स के वकील हरीश साल्वे ने मंगलवार को सुनवाई के दौरान कहा कि ईडी को दी गई कठोर शक्तियां पर लगाम नहीं लगाया जाता है, तो इस देश में कोई भी सुरक्षित नहीं है। देखिए कैसे उनकी गिरफ्तारी हुई। वे जांच में सहयोग कर रहे थे। गिरफ्तारी उनके अधिकारों का उल्लंघन था। इसलिए एजेंसी की शक्तियों पर लगाम लगाने की जरूरत है।

गौरतलब है कि बसंत और पंकज बंसल को एक पूर्व जज रिश्वत मामले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में गिरफ्तार किया गया था।

सुनवाई दौरान जस्टिस बोपन्ना और जस्टिस सुंदरेश ने दोनों को जमानत के लिए हरियाणा हाईकोर्ट में अपील करने का आदेश दिया। इसके साथ ही बंसल ब्रदर्स का सुप्रीम कोर्ट पहुंची याचिका का भी निपटारा कर दिया गया।

बंसल ब्रदर्स को ईडी ने 14 जून को पीएमएलए के तहत गिरफ्तार किया था। बाद में उन्हें हरियाणा के पंचकुला में स्पेशल पीएमएलए कोर्ट में पेश किया गया। बाद में उन्हें 5 दिन की ईडी की हिरासत में भेज दिया। इसके पहले 9 जून को हाईकोर्ट ने रियल एस्टेट फर्म आईआरईओ से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में बसंत और पंकज बंसल को 5 जुलाई तक गिरफ्तारी से अंतरिम राहत दी थी। बंसल ने दलील दी कि इस तरह की हिरासत अवैध हिरासत की तरह है। इतना ही नहीं यह हाईकोर्ट के उस आदेश से बचने की कोशिश है, जिसमें दोनों को एक दूसरे मनी लॉन्ड्रिंग केस में सजा से सुरक्षा देती है। जिस मनी लॉन्ड्रिंग मामले में बंसल बंधुओं को गिरफ्तार किया गया है, वह हरियाणा पुलिस के एंटी करप्शन ब्यूरो की एफआईआर से जुड़ी है, जो 1% अप्रैल को दर्ज की गई थी। ईडी ने दावा किया कि परमार रियल एस्टेट फर्म, आईआरईओ से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोपियों के लिए पक्षपात दिखा रहे थे। एसीबी के केस दर्ज करने के बाद, पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने परमार को सस्पेंड कर दिया। 1 जून को ईडी ने एम3एम ग्रुप और उसके निदेशकों के साथ-साथ दिल्ली और गुरुग्राम में आईआरईओ के खिलाफ छापेमारी की। ईडी ने आरोप लगाया कि एम3एम ग्रुप के मालिक, नियंत्रक और प्रमोटर बसंत, रूप कुमार, पंकज और बाकी लोग छापे के दौरान जानबूझकर जांच से बचते रहे। इसमें आरोप लगाया गया कि इस मामले में एम3एम ग्रुप के माध्यम से सैकड़ों करोड़ रुपए की बड़ी रकम का हेर-फेर किया गया है।

खालिस्तान मूवमेंट चला रहे एसएफजे प्रमुख पन्नू की मौत

अमेरिका में कार एक्सीडेंट में गई जान खालिस्तानियों की हत्या के बाद अंडरग्राउंड था

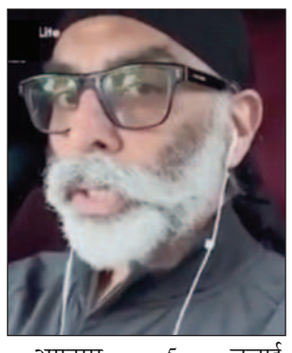

अमृतसर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। कुख्यात खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू की अमेरिका में सड़क दुर्घटना में मौत हो गई है। हालांकि इसकी किसी तरफ से औपचारिक पुष्टि नहीं की गई है, लेकिन चर्चा है कि सिख फॉर जस्टिस का चीफ पन्नू अब इस दुनिया में नहीं रहा।

पन्नू पिछले काफी समय से अंडरग्राउंड था। पाकिस्तान में परमजीत सिंह पंजवड़ की हत्या, फिर लंदन में अवतार सिंह खांडा की मौत और कनाडा में हरदीप सिंह निज्जर के कत्ल के बाद पन्नू को डर था कि उसकी भी हत्या हो सकती है।

विदेश में बैठकर देता था धमकी

पन्नू पिछले काफी समय से भारत विरोधी बातें करता रहता था। वह आए दिन कोई न कोई वीडियो जारी कर खालिस्तान समर्थकों को उकसाता था। भारत की एजेंसियों को बदनाम कर उन पर दबाव बनाने की कोशिश करता था। हाल ही में उसने खालिस्तान समर्थकों की हत्या के बाद इसके लिए कनाडा और अमेरिका में भारतीय दूतावास के अफसरों को जिम्मेदार ठहराते हुए वीडियो भी जारी किया था। यह उसका धमकी भरा आखिरी वीडियो था।

>14

मोदी सात-आठ जुलाई को चार राज्यों में विकास परियोजनाओं का करेंगे शिलान्यास

पीएम शनिवार की सुबह तेलंगाना आएंगे

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पीएम शुक्रवार को ही छत्तीसगढ़ के बाद उत्तर प्रदेश का दौरा करेंगे। इसके तहत पीएम सबसे पहले गोरखपुर पहुंचकर गीता प्रेस गोरखपुर के शताब्दी समारोह में हिस्सा लेंगे। गौरतलब है कि मोदी सरकार ने हाल ही में गीता प्रेस गोरखपुर को गांधी शांति सम्मान दिया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आगामी सात और आठ जुलाई को तीन चुनावी राज्यों छत्तीसगढ़, तेलंगाना, राजस्थान और उत्तरप्रदेश का तूफानी दौरा करेंगे।

>14

तेलंगाना में 8 जुलाई को कई विकास कार्यों का शुभारंभ करेंगे पीएम

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 8 जुलाई को तेलंगाना का दौरा करेंगे। 8 जुलाई को सुबह लगभग 10.45 बजे, प्रधानमंत्री वारंगल पहुंचेंगे और एक सार्वजनिक कार्यक्रम में भाग लेंगे जहां वह लगभग 6,100 करोड़ रुपये की कई महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे। वह 5,550 करोड़ रुपये से अधिक की 176 किलोमीटर लंबी राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला भी रखेंगे। परियोजनाओं में नागपुर-विजयवाड़ा कॉरिडोर का 108 किलोमीटर लंबा मंचेरियल-वारंगल खंड शामिल है। यह खंड मंचेरियल और वारंगल के बीच की दूरी को लगभग 34 किमी कम कर देगा। वह एनएच-563 के 68 किलोमीटर लंबे करीमनगर-वारंगल खंड को मौजूदा दो लेन से चार लेन में अपग्रेड करने की आधारशिला भी रखेंगे। इससे हैदराबाद-वारंगल औद्योगिक गलियारे, काकतीय मेगा टेक्सटाइल पार्क और वारंगल में एसईजेड से कनेक्टिविटी में सुधार करने में मदद मिलेगी।

प्रधानमंत्री रेलवे विनिर्माण इकाई, काजीपेट की आधारशिला भी रखेंगे, जिसे 500 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित किया जाएगा। इस आधुनिक विनिर्माण इकाई से वैगन निर्माण क्षमता में वृद्धि होगी। यह नवीनतम प्रौद्योगिकी मानकों और सुविधाओं जैसे वैगनों की रोबोटिक पेंटिंग, अत्याधुनिक मशीनरी और आधुनिक सामग्री भंडारण और हैंडलिंग के साथ सयंत्र से सुसज्जित होगा। इससे स्थानीय रोजगार सृजन और आस-पास के क्षेत्रों में सहायक इकाइयों के विकास में मदद मिलेगी।

वंदे भारत ट्रेनों के किराए की होगी समीक्षा

और व्यावहारिक बनाने की तैयारी

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। रेलवे कम यात्रियों वाली वंदे भारत ट्रेनों के किराए की समीक्षा कर रहा है ताकि उन्हें लोगों के लिए अधिक व्यावहारिक बनाया जा सके। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार कुछ कम यात्रियों वाली ट्रेनों को छोड़कर इस सेमी-हाई स्पीड ट्रेन की अधिकांश सेवाएं वर्तमान में पूरी क्षमता के साथ चल रही हैं। सूत्रों ने बताया कि इंदौर-भोपाल, भोपाल-जबलपुर और नागपुर-बिलासपुर एक्सप्रेस जैसी वंदे भारत ट्रेनों के साथ कुछ अन्य ट्रेनों के किराए की समीक्षा की जा रही है। जून के अंत के आंकड़ों के अनुसार भोपाल-इंदौर वंदे भारत ट्रेन में केवल 29 प्रतिशत बुकिंग दर्ज की गई, वहीं, इंदौर-भोपाल वंदे भारत एक्सप्रेस की वापसी यात्रा में केवल 21 फीसदी सीटों की ही बुकिंग हुई। दोनों शहरों के बीच की यात्रा में लगभग तीन घंटे लगते हैं और एसी चेयर कार टिकट के लिए 950 रुपये और प्रति यात्री एक्जीक्यूटिव चेयर कार के लिए 1525 रुपये का खर्च आता है। सूत्रों ने बताया कि इस ट्रेन के किराए की समीक्षा की जा सकती है। वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों की सबसे लंबी यात्रा लगभग 10 घंटे की है और सबसे छोटी यात्रा लगभग तीन घंटे की है।

"किराए की समीक्षा वंदे भारत ट्रेनों के यात्रियों को बेहतर सुविधा मुहैया कराने के लिए की जा रही है। रेलवे से जुड़े सूत्र के अनुसार, हमने स्थिति की समीक्षा की है और हमारा मानना है कि कुछ वंदे भारत ट्रेनें, विशेष रूप से दो से लगभग पांच घंटे के बीच की छोटी अवधि वाली ट्रेनें बुकिंग के लिहाज से बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं यदि उनकी कीमतें कम कर दी जाए।

>14

भगवान महावीर के बाद सबसे कठोर तप वाले जैन मुनिश्री

विरागमुनि ने पूरे किए 172 दिन के उपवास; डॉक्टर्स की टीम डब्ल्यूएचओ को रिपोर्ट देगी

बालाघाट, 5 जुलाई (एजेंसियां) । बालाघाट का जैन दादाबाड़ी इन दिनों जैन समाज ही नहीं बल्कि सभी के लिए उत्सुकता का केंद्र बना हुआ है। यहां जैन मुनि श्री विरागमुनि जी (46) उपवास पर हैं। वो भी कुछ दिनों से नहीं, बल्कि पूरे 171 दिन से। बुधवार को 172वां दिन है, लेकिन उन्होंने ईश्वरीय मर्यादा को ध्यान में रखते हुए बुधवार को उपवास बंद कर पारणा का निश्चय किया है। ये ईश्वरीय मर्यादा ये है कि भगवान महावीर स्वामी ने अपने जीवनकाल में 178 दिन के उपवास रखे थे। इससे अधिक दिनों तक उपवास का वर्णन जैन समाज में नहीं है।

डॉक्टर्स की एक रिसर्च टीम ने मुनि श्री विरागमुनि जी की सेहत की जांच की है और उन्हें पूरी तरह फिट देखकर हैरानी भी जताई है। ये रिपोर्ट टीम डब्ल्यूएचओ को देगी।

भगवान महावीर और उनके उपवास

भगवान महावीर का जन्म वैशाली गणराज्य के कुंडग्राम में ईसा से 540 साल पहले हुआ था। जैन ग्रंथों और मान्यताओं के अनुसार उन्होंने छह मासी तप किया था जो 178 दिनों तक चला। इसके अलावा उन्होंने 4 मास की तपस्या अपने जीवनकाल में 9 बार की। भगवान महावीर को जैन समाज 24वें तीर्थंकर के रूप में मानता है।

15 जनवरी 2023 को महाराष्ट्र के चंद्रपुर से जैन मुनि श्री विरागमुनि जी ने आहार का त्याग कर दिया था। खुद मुनि श्री के शब्दों में-' आत्मा की शक्ति अनंत है। इस उपवास से युवा पीढ़ी और पूरी दुनिया ये जान सकेगी कि ये शक्ति कितनी विराट है। उपवास सिर्फ इस शक्ति के प्रकटीकरण के लिए है। योग, ध्यान, प्राणायाम, सूर्य और पानी की ऊर्जा से यह तप संभव हो सका है।'

मुनि श्री के उपवास को मंगलवार को 171 दिन पूरे हो गए और बुधवार को 172वां दिन है। श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट, मैनेजिंग ट्रस्टी अजय लूनिया ने बताया कि 171 उपवास की दीर्घ तपस्या के पारणा का लाभ उसी परिवार को मिलेगा, जो त्याग, तपस्या, उत्सव और महोत्सव करना चाहते हैं। इस भावना को एक पर्ची में लिखकर जो भी परिवार यह लाभ लेना चाहता है, उसे मंगलवार रात 11 बजे तक श्री जिनकुशल सूरी दादाबाड़ी मंदिर में चातुर्मास समिति के पास जमा करवाना था। भाग्यशाली व्यक्ति के यहां गुरुदेव पारणा के लिए पधारेंगे।

बड़ौदा के सुमनदीप विद्यापीठ विश्वविद्यालय से तीन डॉक्टरों की रिसर्च टीम मंगलवार को बालाघाट पहुंची। डॉ. शाह ने बताया कि ये रिसर्च इसलिए भी अहम है क्योंकि सामान्यत: बिना भोजन के सिर्फ गर्म पानी पीकर इतने दिनों तक उपवास पर रहने के बाद स्वस्थ तो दूर जीवित रहना भी करीब असंभव है।

डॉ. शाह का कहना है कि एनालिसिस रिपोर्ट की जांच के बाद ही सामने आ पाएगा कि ऐसा कैसे संभव हुआ, लेकिन फिलहाल गुरुदेव फिजिकली नार्मल हैं। कुछ ना खाते हुए भी उनमें एनर्जी लेवल पूरी तरह मेंटेन है। ये देखकर हमें खुशी भी हुई और हैरानी भी। मुनि श्री लंबे उपवास के बाद भी पूरी तरह स्वस्थ हैं।

उपवास के दौरान ही तीन राज्यों की पदयात्रा

15 जून 2023 को निराहार रहने का संकल्प लेकर चंद्रपुर से निकले मुनि श्री विरागमुनि जी छत्तीसगढ़ पहुंचे। यहां राजनांदगांव, दुर्ग, रायपुर, खैरागढ़ से मध्यप्रदेश के बालाघाट तक सफर किया। इस दौरान उन्होंने कुल मिलाकर करीब 400 किमी की पदयात्रा कर ली है।

दिनचर्या और गुरुओं एवं साथियों के लिए आहार लेने स्वयं जाते

मुनि श्री की दिनचर्या सुबह 3 बजे से शुरू हो जाती है, जो रात्रि विश्राम तक चलती है। इस दौरान वे प्रातः उपाध्याय, प्रवचन, दोपहर अध्ययन, गुरुओं और साथी छोटे साधुओं के लिए आहार लेने वे स्वयं जाते हैं।

>14

शिंदे की मानसिक स्थिति ठीक नहीं

बंगले में मौजूद हथियारों को तुरंत जब्त करें फडणवीस'- सामना में किया गया कटाक्ष

मुंबई, 5 जुलाई (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में सियासी घमासान के बीच शिवसेना ने अपने मुखपत्र सामना के जरिए एक बार फिर बीजेपी पर निशाना साधा है। इस बार सामना के संपादकीय में लिखा गया है कि महाराष्ट्र में भाजपा ने जो किया है, उससे पूरे देश में उसकी छीः थू हो रही है। अब तो सिर्फ मेहुल चोकसी, नीरव मोदी, विजय माल्या को ही अपनी पार्टी में शामिल कराकर उन्हें पद देना बाकी रह गया है। इन तीनों में से एक को पार्टी का राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, दूसरे को नीति आयोग और तीसरे को देश के रिजर्व बैंक का गवर्नर नियुक्त किया जाना चाहिए। क्योंकि भ्रष्टाचार, लूटमार, नैतिकता अब उनके लिए कोई मुद्दा ही नहीं रह गया है

चक्की पिसवाने की कही थी बात

सामना में लिखा गया है कि सिंचाई घोटाले के चलते अजित पवार को चक्की पीसने के आरोप में जेल जाना पड़ेगा, ऐसा देवेंद्र फडणवीस बार-बार बोल रहे थे, लेकिन उन्हीं अजित पवार ने फडणवीस की मौजूदगी में उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली और सोमवार को यही 'चक्की पिसिंग' फडणवीस के 'सागर' बंगले में बैठकर अपने गुट के लिए विभागों का बंटवारा कर रहे थे, आश्चर्य ही है"।

शिंदे को लेकर भी कसा तंज

शिवसेना के मुखपत्र सामना के संपादकीय में शिंदे को लेकर भी तंज कसा गया है। इसमें लिखा है- विभाग बंटवारे की चर्चा मुख्यमंत्री के 'वर्षा' बंगले पर होनी चाहिए थी, लेकिन अजित पवार और उनका गुट पहुंचा 'सागर' पर। इसे आश्चर्य ही कहा जाएगा। मुख्यमंत्री की यह अवस्था असहज है और दिन-ब-दिन और दयनीय होती जाएगी। राष्ट्रवादी कांग्रेस और अजित पवार के कारण हमें शिवसेना छोड़नी पड़ी, ऐसी गर्जना करने वाले घाती गुट के एक मंत्री गुलाबो पाटील का राजभवन में अजित पवार के चरणों में लोटना ही बाकी रह गया था। राष्ट्रवादी के कारण शिवसेना छोड़ी, फिर उन्हीं के पैरों में लोटने वालों के उतरे चेहरों को देखकर लोग हंस रहे थे।

'शिंदे की मानसिक स्थिति ठीक नहीं'

सामना में आगे लिखा गया, राष्ट्रवादी हमारे साथ सत्ता में शामिल हुई तो हम सरकार से बाहर हो जाएंगे, ऐसी गर्जना करने वाले घाती गुट के सभी प्रवक्ता अचानक से गायब हो गए हैं। मुख्यमंत्री की तो बोलती ही बंद हो गई है। घाती गुट के एक मंत्री, सावंतवाड़ी के दीपू केसरकर ने पंद्रह दिन पहले ही कहा था, 'अगर बगावत विफल हो जाती तो शिंदे ने अपने ही सिर पर पिस्टल चला ली होती। उस समय उनकी मानसिक अवस्था बहुत ही खराब थी, लेकिन अजित पवार के शपथ ग्रहण के बाद मुख्यमंत्री की मानसिक स्थिति सूरत और गुवाहाटी से भी ज्यादा ही खराब हो गई होगी।

'अब क्या करेंगे देवेंद्र फडणवीस?'

सामना में देवेंद्र फडणवीस पर भी चुटकी ली गई है और कहा गया है कि अब वो किसे चक्की पीसने जेल भेजने वाले हैं? इसमें लिखा है- श्रीमान फडणवीस की भी स्थिति इससे अलग नहीं है। अजीत पवार, हसन मुश्रीफ, भुजबल, प्रफुल्ल पटेल, इन सभी के उनके तंबू में सम्मानपूर्वक प्रवेश करने से अब वे चक्की पीसने के लिए किसे भेजनेवाले हैं? मुलुंड के पोपटलाल, अंजलिबाई दमानिया अब क्या करें? भुजबल के विरुद्ध क्या कम अभियान चलाया था? सिंचाई घोटाले के ही गाड़ी भर सबूतों को लेकर फडणवीस बैलगाड़ी पर सवार हुए थे। उन्होंने तो जेल में नवाब मलिक के बगल वाली कोठरी इन सभी के लिए आरक्षित ही कर रखी थी। अब फडणवीस क्या करेंगे? 'सागर' बंगले पर इस मंडली के साथ कूल्हे से कूल्हा मिलाकर विभागों का बंटवारा करने की नौबत मोदी-शाह ने उन पर लाद दी। फडणवीस पहले मुख्यमंत्री थे, बाद में शिंदे के कैबिनेट में उपमुख्यमंत्री बने। अब अजीत पवार भी पांचवीं बार उपमुख्यमंत्री बन गए हैं। इस वजह से फडणवीस आधे उपमुख्यमंत्री रह गए हैं। महाराष्ट्र की यह अवस्था मतलब 'एक फुल, दो हाफ' की तरह हो गई है। लेकिन जो फुल है वह भी 'डाउटफुल' होने से चिंताग्रस्त चेहरे के साथ घूम रहा है। 'एक (डाउट) फुल, टू हाफ', यह नई फिल्म राज्य में लगी है, पर लोगों ने इसका बहिष्कार कर दिया है!

पंजाब में फिर साथ आएंगे अकाली-भाजपा

सुनील जाखड़ की नियुक्ति के बाद मिले संकेत

चंडीगढ़, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पंजाब में शिरोमणि अकाली दल और भाजपा में एक बार फिर गठबंधन हो सकता है। पंजाब भाजपा के अध्यक्ष पद पर सुनील जाखड़ की नियुक्ति के बाद से दोनों दलों के बीच दोस्ती बहाल होने का संकेत मिला है। भाजपा ने पंजाब में पहले की तरह अकाली दल से गठबंधन कर हिंदू-सिख भाईचारा की नीति पर चलने का संकेत दिया है। सूत्रों का कहना है कि जल्द होने वाले मंत्रिमंडल विस्तार में अकाली दल की हरसिमरत कौर फिर से केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होंगी। वहीं चर्चा ये भी है कि इस बार अकाली दल के प्रधान सुखबीर बादल को केंद्र में मंत्री बनाया जा सकता है।

1996 में हुआ गठबंधन 2021 में टूटा था

शिरोमणि अकाली दल और भाजपा के बीच 1996 में गठबंधन हुआ था। अकाली दल एनडीए के सबसे पुराने साथियों में से था। 2021 में तीन कृषि कानूनों के विरोध में हुए किसान आंदोलन के कारण दोनों ने अपने रिश्ते खत्म कर दिए थे। इसी साल अकाली दल के वरिष्ठ नेता और पूर्व सीएम प्रकाश सिंह बादल के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी श्रद्धांजलि देने पहुंचे थे। तभी से दोनों दलों के गठबंधन की चर्चाएं तेज हो गई थीं। हालांकि जालंधर उपचुनाव दोनों ने अलग अलग ही लड़ा।

लॉरेश बिश्नोई को लेकर पंजाब पुलिस और स्पेशल सेल के बीच अनबन! दिल्ली लाने पर फंसा पेंच

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। कुख्यात गैंगस्टर लॉरेश बिश्नोई को लेकर पंजाब पुलिस और स्पेशल सेल के बीच अनबन सामने आई है। सूत्रों ने बताया कि लॉरेश बिश्नोई को एक्सटॉर्शन के मामले में दिल्ली लाया जाना है, लेकिन पंजाब पुलिस ने फोर्स नहीं होने का हवाला देकर उसे दिल्ली लाने से मना किया। सूत्रों के मुताबिक दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल पंजाब के भटिंडा में मौजूद थी और उसे दिल्ली लाने की फ़ॉरमिलिटी पूरी कर दिल्ली लाना था, लेकिन भटिंडा पुलिस ने फोर्स नहीं होने का हवाला दिया, जिसके चलते लॉरेश को दिल्ली लाने का पेच फंस गया। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने लॉरेश की कस्टडी के लिए पहले के बाद दूसरा प्रोडक्शन वारंट लिया था, जिसकी मियाद खत्म होने वाली है। अब तीसरी बार फिर दिल्ली पुलिस लॉरेश को कस्टडी में लेने के लिए कोर्ट से प्रोडक्शन वारंट लेगी। सुरक्षा एजेंसियों को इनपुट्स मिले हैं कि लॉरेश पर हाई थ्रेट है, इसलिए उसे पंजाब से दिल्ली लेकर आने में पंजाब पुलिस की भारी फोर्स की भी जरूरत होती है, लेकिन पंजाब पुलिस ने दूसरी बार फोर्स नहीं होने का हवाला दिया।

'जबरन अश्लील वीडियो दिखाता है पति

टॉर्चर से परेशान महिला थाने पहुंची

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। दिल्ली के शाहदरा इलाके में एक महिला ने अपने पति पर गंभीर आरोप लगाए हैं। महिला का कहना है कि उसका पति पोर्न एडिक्ट है और उसने शादी के तीसरे ही दिन फिजिकली टॉर्चर किया। इसके अलावा उसने शरीर को पोर्न स्टार्स जैसा बनाने का दबाव बनाया। शाहदरा के रोहतास नगर में 30 साल की महिला ने अपने पति के खिलाफ पुलिस में केस दर्ज कराया है। महिला का आरोप है कि उसका पति पोर्न एडिक्ट है। इसके साथ ही उसने शादी के तीसरे ही दिन फिजिकली टॉर्चर करने, युवती के शरीर को अपनी पसंदीदा पोर्न स्टार जैसा करने का दबाव बनाने का आरोप लगाया है।

दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में पेश हुईं जैकलीन फर्नांडिस

200 करोड़ की उगाही मामले से जुड़े तार

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। बॉलीवुड अभिनेत्री और तिहाड़ जेल में बंद महाठग से करीबी का रिश्ता रखने वाली जैकलीन फर्नांडिस बुधवार को दिल्ली के पटियाला हाउस कोर्ट में पेश हुईं। उन्हें महाठग सुकेश चंद्रशेखर के 200 करोड़ के उगाही मामले में दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट ने कुछ दिनों पहले इस ठगी के मामले में पेश होने का आदेश जारी किया था। बता दें कि महाठग सुकेश चंद्रशेखर से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग केस मामले में नाम आया था। तभी वो जांच एजेंसियों रडार पर हैं। इससे पहले भी वह धन शोधन में पटियाला हाउस कोर्ट में कई बार पेश हो चुकी हैं। सुकेश चंद्रशेखर और अन्य से संबंधित 200 करोड़ रुपये के मामले में जैकलीन फर्नांडीज का नाम शामिल है। ठग सुकेश चंद्रशेखर को बॉलीवुड इंडस्ट्री में बड़ी-बड़ी एक्ट्रेस को महंगे तोहफे देने के लिए जाना जाता है। ठगी और एक्सटॉर्शन के एक मामले में सुकेश चंद्रशेखर को जबरन वसूली और मनी लॉन्ड्रिंग केस में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। सुकेश पर रसूखदार लोगों से ठगी करने का भी आरोप है। इस समय सुकेश तिहाड़ जेल में है। वह समय-समय पर आप नेताओं ने भ्रष्टाचार का आरोप लगाने की वजह से सुर्खियों में रहता है।

इस वजह से भी सुर्खियों में हैं जैकलीन

तीन दिन पहले ही जैकलीन फर्नांडिस देश की अर्थिक राजधानी मुंबई में आलीशान घर खरीदने को लेकर भी सुर्खियों में आई थीं। उनके इस घर से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर अभिनेता सलमान खान का भी अपार्टमेंट है। शाहरुख खान का भी घर आसपास ही है। सुकेश के मामले में जैकलीन फर्नांडिस का नाम आने से वह कई हिंदी फिल्मों में अपने शानदार अभिनय के बल पर लोगों के दिलों में अपनी जगह बना चुकी हैं।

मुंबई में सड़क धंसने से कई वाहन फंसे

मुंबई, 5 जुलाई (एजेंसियां)। मुंबई के चूनाभट्टी इलाके में बुधवार सुबह सड़क का एक बड़ा हिस्सा धंसने से वहां खड़े कई वाहन फंस गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। दमकल विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि इसमें फिलहाल किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है। अधिकारी ने बताया कि प्राथमिक जानकारी के अनुसार चूनाभट्टी इलाके में एक कॉलेज के पास सुबह करीब नौ बजे एक सड़क धंस गई। उन्होंने बताया कि घटना की सूचना मिलने पर दमकल विभाग, नगर निकाय के कर्मी तथा पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और क्षतिग्रस्त सड़के तथा आसपास के इलाके में घेराबंदी की गई।

ई रिक्शा ड्राइवर ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

इंदौर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। शहर के खजराना इलाके में रहने वाले एक ई रिक्शा के ड्राइवर ने रात फांसी लगाकर जान दे दी। रात में मां ने उसे देखने कमरे में पहुंची थी। दरवाजा नहीं खोला तो मां ने बाहर से झांककर देखा। बेटा कमरे में फंदे पर लटका हुआ था। इसके बाद माँ में परिवार के लोगों को आवाज लगाई। परिजन एमवाय अस्पताल लेकर पहुंचे। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस घटना की सुचना मिलने पर मौके पर फुकी पुलिस ने मामला दर्ज कर शव को पीएम के भेजा। पुलिस के मुताबिक आकाश (30) पुत्र राजू यादव निवासी कृष्णबाग कॉलोनी ने मंगलवार देर रात अपने घर में फांसी लगा ली।

'दिसंबर में हो सकते हैं लोकसभा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव

शरद पवार के पोते का बड़ा दावा

मुंबई, 5 जुलाई (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में चल रही सियासी उथलपुथल के बीच एनसीपी ने दावा किया है कि लोकसभा चुनाव और महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव इसी साल हो सकते हैं। एनसीपी के विधायक और शरद पवार के पोते रोहित पवार ने न्यूज एजेंसी एएनआई से बातचीत में कहा कि लोकसभा और विधानसभा चुनाव से 5-6 महीने पहले ईवीएम मशीन चेक की जाती हैं और चार दिन पहले महाराष्ट्र के अधिकारियों को ईवीएम तैयार करने के निर्देश मिले हैं। रोहित पवार ने कहा कि ये सीधे तौर पर इशारा है, लोकसभा चुनाव और महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव इसी साल दिसंबर में हो सकते हैं। उन्होंने ऐसा होने की संभावना का कारण बताते हुए कहा कि इसके पीछे की मुख्य वजह बीजेपी की कर्नाटक चुनाव में हार है।

राजोरी में दर्दनाक सड़क हादसा, खाई में गिरा वाहन, चार महिलाओं की मौत, आठ घायल

जम्मू, 5 जुलाई (एजेंसियां)। राजोरी के थन्नामंडी इलाके में बुधवार की रात को दर्दनाक सड़क दुर्घटना हो गया। इस हादसे में चार लोगों की मौत हो गई और आठ अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार, यात्रियों को ले जा रहा एक ईको वाहन रात करीब ढाई बजे थन्नामंडी -भांगई सड़क मार्ग पर गहरी खाई में जा गिरा। वाहन में 12 यात्री सवार थे। इनमें से तीन की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक अन्य ने उपजिला अस्पताल थन्नामंडी में दम तोड़ दिया।

1901 के बाद इस बार भारतीय प्रायद्वीप में सबसे गर्म रहा जून

बिहार और यूपी में चली थी गंभीर लू: मौसम विभाग

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने बताया कि 1901 के बाद से भारतीय प्रायद्वीप में यह सबसे गर्म जून का महीना रहा, क्योंकि इस क्षेत्र में औसत अधिकतम तापमान 34. 05 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इस क्षेत्र में 1901 के बाद जून में तीसरा सबसे अधिक औसत न्यूनतम तापमान 26. 04 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। विभाग द्वारा शाम को जारी मासिक मौसम समीक्षा में यह भी कहा गया कि मुख्य रूप से पूर्व और पूर्वोत्तर, दक्षिण प्रायद्वीप और उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में अधिकतम तापमान सामान्य से 4. 4 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा।

कितनी दर्ज हुई बारिश?

भारतीय प्रायद्वीप में जून में 88. 6 मिमी बारिश हुई, जो 1901 के बाद से सबसे कम है। इस क्षेत्र में जून में सामान्य बारिश 161 मिलीमीटर होती है। इससे पहले 1976 में सबसे कम 90। 7 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई थी। मौसम विभाग ने कहा कि 1901 के बाद जून के दौरान पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत में औसत अधिकतम तापमान 1979 (34. 47 डिग्री सेल्सियस), 1958 (34. 26 डिग्री सेल्सियस) दर्ज किया गया था।

लू का प्रकोप

देश के पूर्वी हिस्सों को भी जून में लू का प्रकोप झेलना पड़ा। बिहार में एक से 22 जून तक, बंगाल में एक से 18 जून तक और पूर्वी उत्तर प्रदेश में 12 से 21 जून तक लगभग सभी तारीखों पर लू से लेकर गंभीर लू चली।

झड़प के बाद भीड़ ने आईआरबी कर्मी के घर में लगा दी आग, की शिविर से हथियार लूटने की कोशिश

इंफाल, 5 जुलाई (एजेंसियां)। (मणिपुर) पुलिस ने बुधवार को बताया कि मणिपुर के थौबल जिले में गुस्साई भीड़ ने इंडियन रिजर्व बटालियन के एक जवान के घर में आग लगा दी। यह घटना रात को समाराम में हुई जब 27 साल के रोनाल्डो नाम के एक व्यक्ति की झड़प में मौत हो गई जब 700-800 लोगों की भीड़ ने 4 किमी दूर वांगबल में तीसरे आईआरबी के शिविर पर हमला करने की कोशिश की और उनके हथियार लूटने की भी कोशिश की। बलों ने स्थिति को नियंत्रण में लाने की कोशिश की और पहले आंसू गैस के गोले और रबर की गोलियों का इस्तेमाल किया। अधिकारियों ने कहा कि लेकिन जैसे ही सशस्त्र भीड़ ने गोलियां चलाईं, बलों ने जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने बताया कि भीड़ ने अतिरिक्त बलों को वहां पहुंचने से रोकने के लिए कई स्थानों पर शिविर की ओर जाने वाली सड़कों को भी अवरुद्ध कर दिया, लेकिन बल फिर भी आगे बढ़ गया। इस दौरान भीड़ ने कैंप की ओर जा रही असम राइफल्स की एक टीम पर हमला कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने असम राइफल्स के जवानों पर गोलीबारी की, जिसमें एक जवान घायल हो गया और उनके वाहन को आग लगा दी। झड़प में रोनाल्डो नाम के एक व्यक्ति को गोली मार दी गई। उसे पहले थौबल जिला अस्पताल ले जाया गया, लेकिन बाद में उनकी हालत गंभीर होने के कारण इंफाल के एक अस्पताल में रेफर कर दिया गया।

तीस हजारी कोर्ट परिसर में गोलीबारी, वकीलों के बीच हुई बहस के बाद फायरिंग

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। देश की राजधानी दिल्ली के तीस हजारी कोर्ट परिसर में गोलीबारी की घटना सामने आई है। गोलीबारी में किसी के घायल होने की खबर नहीं है। पुलिस का कहना है कि वकीलों के बीच हुई बहस के बाद यह घटना हुई। जानकारी के अनुसार, बुधवार की दोपहर करीब डेढ़ बजे गोलीबारी की घटना की सूचना मिली। जब पुलिस टीम मौके पर पहुंची, तो पता चला कि वकीलों की आपस में बहस हुई। इसके बाद दो अलग-अलग गुटों ने कथित तौर पर हवा में गोलीबारी की थी। घटना में किसी को भी नुकसान नहीं हुआ है। इस समय स्थिति सामान्य है।

पहले भी हो चुकी हैं कई घटनाएं

इससे पहले भी दिल्ली की कोर्ट में फायरिंग की घटनाएं सामने आती रही हैं। अप्रैल महीने में भी साकेत कोर्ट में कड़ी सुरक्षा के बावजूद एक शख्स ने महिला पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दी थीं। इसके बाद भी कोर्ट परिसर में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े हुए थे। तीस हजारी कोर्ट में वकीलों के बीच आपस में फायरिंग हुई। फायरिंग करने वाले एडवोकेट का नाम मनीष शर्मा है जोकि दिल्ली बार एसोसिएशन का वाइस प्रेसिडेंट हैं। पहले भी गोली चलाने के मामले को लेकर इन पर एफआईआर दर्ज है।

पत्नी बेकार बैठकर पति से न मांगे पूरा गुजारा

हाईकोर्ट ने दी काम करने की सलाह

बेंगलूरू, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पत्नी खाली बैठकर पूरी तरह से भत्ते के लिए अलग हो चुके पति पर निर्भर नहीं रह सकती है। हाल ही में गुजारा भत्ते से जुड़े मामले पर हुई सुनवाई के बाद कर्नाटक हाईकोर्ट ने यह टिप्पणी की है। साथ ही कोर्ट का कहना है कि महिला को आजीविका के लिए काम करना चाहिए। अदालत ने कहा कि महिला पति से केवल मदद योग्य भत्ते की ही मांग कर सकती है।

क्या था मामला

कोर्ट में महिला की तरफ से अपील की गई थी, जिसमें सत्र न्यायालय की तरफ से गुजारा भत्ता को कम किए जाने और मुआवजे की रकम घटाने के आदेश को चुनौती दी गई थी। सत्र न्यायालय ने महिला को मिलने वाले भत्ते की रकम 10 हजार से घटाकर 5000 रुपये और मुआवजा 3 लाख रुपये से कम कर 2 लाख करने का आदेश जारी किया था।

क्या बोले जज

मामले की सुनवाई कर रहे जस्टिस रजेंद्र बदामीकार ने पाया कि महिला शादी से पहले काम कर रही थी और इस बार उसकी तरफ से ऐसी कोई जानकारी नहीं दी गई कि वह अब काम क्यों नहीं कर सकती हैं। जज ने कहा, 'उन्हें खाली बैठकर पति से पूरा गुजारा नहीं मांगना चाहिए। साथ ही वह आजीविका के लिए काम करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य है और पति से केवल मदद योग्य गुजारा मांग सकती है।' याचिकाकर्ता का कहना था कि मुआवजा कम है और कोर्ट ने बगैर कोई सफाई दिए इसे कम कर दिया। इधर, हाईकोर्ट ने पाया था कि अपीलीय अदालत ने बच्चे को गुजारा भत्ता देने के आदेश की पुष्टि की है। साथ ही केवल पत्नी को मिलने वाले भत्ते को कम किया है। साथ ही उच्च न्यायालय ने यह भी पाया कि महिला सास और अविवाहित ननद के साथ रहने की इच्छुक नहीं है। कोर्ट का कहना है कि प्रोविजन स्टोर चलाने वाले पति पर उसकी मां और अविवाहित बहन की भी जिम्मेदारी है।

पॉर्न स्टार जैसी नहीं दिखती पत्नी: सनकी पति ने ढाए जुल्म पर जुल्म, कई बार बनाया अप्राकृतिक संबंध

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। दिल्ली के शाहदरा इलाके में एक ऐसी घटना सामने आई है जिसने पति-पत्नी के पवित्र रिश्ते को भी शर्मसार कर दिया। यहां एक सनकी की पति की करतूतें सामने आई हैं जिसके चलते अब वह सलाखों के पीछे पहुंच गया है। आरोप है कि मारपीट करने के साथ ही उसने पत्नी के साथ अप्राकृतिक तरीके से संबंध बनाए। 30 वर्षीय महिला की शिकायत पर सोमवार को पुलिस ने कुकर्म, उत्पीड़न समेत विभिन्न धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की है।

ब्रह्मांड को कैसे सिग्नल देती है 'जीवित' पृथ्वी, चंद्रयान-3 के साथ जा रहा 'एसएचएपीई ' रखेगा नजर

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) जल्द ही मिशन चंद्रयान-3 लॉन्चिंग करने वाला है। इसरो के चेयरमैन एस. सोमनाथ ने अभी संभावित तारीख 13 जुलाई बताई है लेकिन इसमें फेरबदल भी किया जा सकता है। चंद्रयान-2 मिशन की आखिरी समय में आंशिक असफलता के बाद इसरो चंद्रयान-3 मिशन को लेकर काफी अलर्ट है और चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग के लिए कई चंद्रयान-3 में कई अत्याधुनिक उपकरण लगाए हैं।

एसएचएपीई करेगा धरती से भेजे सिग्नल का अध्ययन

चंद्रयान-3 के लैंडर में 4 पेलोड के साथ साथ 6 चक्के वाले रोवर में भी 2 पेलोड लगाए हैं। इसके अलावा चंद्रयान-3 के साथ रहने योग्य ग्रह पृथ्वी की स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री (एसएचएपीई) भी भेजा जा रहा है, जो चांद पर धरती की ओर से भेजे गए सिग्नल का अध्ययन करेगा। यह एक्सो-प्लेनेट की ओर से आने वाले परावर्तित प्रकाश के जरिए छोटे ग्रहों पर जीवन की संभावनाओं का पता लगाने का कार्य करेगा।

ऐसे समझें एसएचएपीई का महत्व

दुनियाभर के खगोल वैज्ञानिक धरती के समान जीवन की संभावनाओं वाले ग्रह की तलाश में जुटे हैं। खगोल वैज्ञानिक हर ग्रह के आने वाले रेडिएशन के जरिए संबंधित ग्रह के बारे में अध्ययन करते हैं और पता करते हैं हैं कि उसके गुण धर्म कैसे हैं और क्या वहां जीवन संभव है या नहीं। चूंकि धरती पर पहले से जीवन मौजूद हैं और वह अभी ब्रह्मांड में अपना रेडिएशन उत्सर्जित करती है। ऐसे में वैज्ञानिक यह पता करना चाहते हैं कि चांद की सतह पर 'जीवित' धरती से किस प्रकार के संकेत पहुंचते हैं, वैसे ही सिग्नल यदि धरती पर भी ब्रह्मांड से आ रहे हैं तो उस ग्रह पर जीवन की खोज की जा सकती है।

स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री के जरिए इन बादलों का अध्ययन

हर ग्रह के वायुमंडल की विशेषता उसकी गैसीय संरचना और वहां निर्मित एरोसोल (बादलों) निर्धारित करते हैं। स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री के जरिए किसी ग्रह की गैसीय संरचना का अध्ययन किया जाता है। मंगल ग्रह के वायुमंडल में बहुत कम मात्रा में जल वाष्प होती है, जो मंगल की धूल के साथ मिलकर अधिकतम 30 से 50 किमी की ऊंचाई पर बादल बनाती है। धरती पर स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री के जरिए इन बादलों का अध्ययन किया जा सकता है। ऐसे ही बादल धरती पर सघन मात्रा में बनते हैं और चांद की सतह पर इसके सिग्नल अलग तरह से पहुंचते हैं। इन सिग्नलों के जरिए ब्रह्मांड में अन्य जीवन योग्य ग्रहों को खोजने में मदद मिल सकती है।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

गुरुवार, 6 जुलाई, 2023 3

सुविचार: अगर कुछ गलत हो रहा हैं तो, उससे भागने की बजाए उसे, ठीक करे तभी आगे बढ़ पाएंगे!

नशीले पदार्थों के खतरे को कम करने के लिए बहुआयामी रणनीति बनें : शांति कुमारी

मुख्य सचिव ने अधिकारियों के साथ बैठक की

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्य सचिव शांति कुमारी ने प्रवर्तन एजेंसियों को तेलंगाना में नशीली दवाओं के खतरे को कम करने के लिए एक बहुआयामी रणनीति विकसित करने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य विभागों के साथ जुड़ने का निर्देश दिया। बुधवार को यहां नार्को समन्वय केंद्र की राज्य स्तरीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए, मुख्य सचिव ने सर्वोत्तम संभव तरीके से दवाओं के उपयोग को कम करने के लिए उचित कार्रवाई विकसित करने के लिए सभी विभागों के समन्वित प्रयास की आवश्यकता को रेखांकित किया। मुख्य सचिव ने कहा कि राज्य सरकार ने तेलंगाना को नशीली दवाओं से मुक्त राज्य बनाने और नशीली दवाओं की तस्करी के खतरे से व्यापक रूप से निपटने की दृष्टि से एक मादक द्रव्य निरोधक ब्यूरो की स्थापना की है। उन्होंने देश में लंबे समय से रह रहे विदेशियों के निर्वासन के लिए केंद्र सरकार द्वारा एक उचित नीति बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। बैठक के दौरान यह महसूस किया गया कि सरफेस वेब और डार्क वेब की निगरानी की आवश्यकता है। मनोदैहिक पदार्थों के दुरुपयोग और पूर्ववर्ती रसायनों के दुरुपयोग को रोकने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। फार्मा उत्पादन इकाइयों और रासायनिक प्रयोगशालाओं की निगरानी बढ़ाने का भी निर्णय लिया गया। स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि सभी जिला अस्पतालों में नशामुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र कार्यरत हैं। शिक्षा विभाग को कॉलेजों में नशीली दवाओं के विरोधी क्लब स्थापित करने और दवाओं के हानिकारक प्रभावों पर जागरूकता कार्यक्रम चलाने के लिए कहा गया है। एनसीबी के जोनल निदेशक अरविंदन ने देश में नशीली दवाओं के परिदृश्य का संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने बैठक में बताया कि वर्ष 2021, 2022 और 2023 के दौरान एनसीबी हैदराबाद ने अल्प्राजोलम की पर्याप्त मात्रा की जब्ती से संबंधित गुप्त प्रयोगशालाओं का भंडाफोड़ किया था। ऐसे उदाहरण हैं जहां ऐसी अवैध परियोजनाओं के लिए रासायनिक विशेषज्ञों को काम पर रखा गया है। बैठक में डीजीपी अंजनी कुमार, पुलिस आयुक्त सीवी आनंद, राचकोंडा सीपी डीएस चौहान, प्रमुख सचिव गृह जितेंद्र, प्रमुख सचिव राजस्व नवीन मित्तल, सचिव स्वास्थ्य रिजवी, सचिव स्कूल शिक्षा करुणा, सचिव एससीडी राहुल बोज्जा और अन्य अधिकारी शामिल हुए।

हैदराबाद एयरपोर्ट पर 1.37 करोड़ रुपये का सोना जब्त किया गया

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सीमा शुल्क अधिकारियों ने अलग-अलद लोगों से 2.27 किलोग्राम सोना जब्त किया, जिसकी कीमत 1.37 करोड़ है। पहले मामले में, 1196 ग्राम सोने बरामद किया गया है। यूएई के रास अल खैमा से हैदराबाद पहुंचे विमान में कुछ लोगों ने यात्री सीट के पीछे सोना छुपाया। यह पेस्ट के रूप में है। बरामद सोने का मूल्य 72 लाख रुपए बताया जा रहा है। दूसरे मामले में, सीमा शुल्क अधिकारियों ने यात्री प्रोफाइलिंग और निगरानी के आधार पर एक यात्री को पकड़ा, जिसने कटे हुए टुकड़ों के रूप में सोने की तस्करी करने की कोशिश की थी। उसके पास से 752 ग्राम सोना जब्त किया गया।

यात्री कुवैत से दुबई होते हुए हैदराबाद पहुंचा। तीसरे मामले में सीमा शुल्क अधिकारियों ने शारजाह से आये एक यात्री से 331 ग्राम सोना जब्त किया। यात्री ने अंडरगारमेंट में सोने का पेस्ट छिपा रखा था। एक अन्य मामले में, सीमा शुल्क अधिकारियों ने कंबोडिया से बैंकॉक पहुंचे एक यात्री से 1 लाख रुपए सिगरेट की छड़ें जब्त कीं।

जीएसटी विभाग के दो अधिकारियों का अपहरण, अपहरणकर्ता हिरासत में

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। लोगों के एक समूह ने केंद्रीय उत्पाद शुल्क विभाग के दो अधिकारियों का अपहरण कर लिया और उन पर हमला किया, जब वे बुधवार को कथित तौर पर सरूरनगर में दो प्रतिष्ठानों पर छापेमारी करने गए थे। बाद में दोनों अधिकारियों को पुलिस ने बचा लिया और चार अपहरणकर्ताओं को हिरासत में ले लिया।

डीसीपी (एलबी नगर), साईश्री के अनुसार दो अधिकारी मणि शर्मा और आनंद सरूरनगर के साई कृष्णानगर में एक स्क्रैप की दुकान और एक वेल्डिंग की दुकान पर छापेमारी करने गए थे, जब लोगों के एक समूह ने उन पर हमला किया, उनकी पहचान छीन ली। कार्ड और उन्हें एक कार में जबरदस्ती बैठाया। अधिकारियों को कथित तौर पर सूचना मिली थी कि दोनों प्रतिष्ठान जीएसटी कर की चोरी कर रहे हैं।

दोनों अधिकारियों को रिहा करने के लिए गिरोह ने 5 लाख रुपये की फिरौती मांगी। अपहरण की सूचना पर वाहन चेकिंग की गयी और दोनों अधिकारियों को हमने बचाया। डीसीपी ने कहा कि चार लोगों को हिरासत में लिया गया है. जांच चल रही है और हिरासत में लिए गए लोगों का विवरण और उनकी पृष्ठभूमि जल्द ही साझा की जाएगी।

राजगोपाल रेड्डी भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बने

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना भाजपा के नए अध्यक्ष के रूप में जी. किशन रेड्डी और तेलंगाना में पार्टी की चुनाव प्रबंधन समिति के अध्यक्ष के रूप में इटेला राजेंदर की नियुक्ति के बाद, पार्टी के मुनुगोड उपचुनाव उम्मीदवार और पूर्व सांसद के राज गोपाल रेड्डी को पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया है। राज गोपाल रेड्डी कथित तौर पर पूर्व राज्य भाजपा प्रमुख बंडी संजय कुमार के खिलाफ पार्टी में असंतुष्ट नेताओं में से एक थे। संजय को हटाया जाना उनके लिए बहुत बड़ा झटका था क्योंकि कुछ दिन पहले ही बीजेपी के तेलंगाना प्रभारी महासचिव तरुण चुघ ने नेतृत्व में बदलाव से इनकार किया था। संजय को हटाए जाने से नाराज बीजेपी की नलगोंडा शहर इकाई के अध्यक्ष एम. नागेश्वर राव ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। तेलंगाना में भाजपा के प्रवक्ता के कृष्ण सागर राव ने कहा कि राज्य पार्टी अध्यक्ष के रूप में किशन रेड्डी की नियुक्ति से "अन्य दलों से आए विभिन्न नेताओं के बीच अधिकांश संघर्ष" का समाधान हो जाएगा। वह (किशन रेड्डी) एक अनुभवी नेता हैं। वह बैठ सकते हैं और मुद्दों को सुलझा सकते हैं, विस्तृत विवरण में जा सकते हैं। उनके पास यह सुनिश्चित करने के लिए वरिष्ठ नेताओं के साथ बैठने के लिए शिष्टता, संयम और कद है कि इन चिंताओं का समाधान किया जाए। उन्होंने कहा कि किशन रेड्डी का अनुभव, कद और संचालन शैली पार्टी के अंदर और बाहर कई समाधान सामने लाएगी जो वर्तमान में पार्टी के विकास की गति को बाधित कर रहे हैं। जब उनसे कहा गया कि विधानसभा चुनावों के लिए राज्य भाजपा को उत्साहित करना और सत्तारूढ़ बीआरएस और कांग्रेस से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना कठिन है, तो कृष्ण सागर राव ने बताया कि कांग्रेस दो महीने पहले खेल में नहीं थी और कहा कि इस चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबले की स्थिति से भाजपा को फायदा होगा।

हैदराबाद के लिए 24 घंटे जलापूर्ति करने की योजना बना रही है सरकार : केटीआर

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। नगरपालिका प्रशासन और शहरी विकास मंत्री केटी रामाराव ने बताया कि राज्य सरकार भविष्य में हैदराबाद के निवासियों को 24 घंटे पेयजल आपूर्ति प्रदान करने की योजना बना रही है। बुधवार को यहां एमए एंड यूडी विभाग की 10 साल की रिपोर्ट, 'ड्राइविंग ग्रोथ थ्रू अर्बनाइजेशन' और अगले एक साल के लिए कार्ययोजना जारी करते हुए मंत्री केटी रामा राव ने कहा कि विभाग ने 2014-2023 के दौरान 1,21,294 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। यह पिछली सरकार द्वारा 2004-2014 तक खर्च किए गए 26,211.5 करोड़ रुपये की तुलना में 462.8 प्रतिशत की वृद्धि है। मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा खर्च किया गया वित्तीय आवंटन किसी भी क्षेत्र में अतीत की तुलना में कई गुना अधिक है और तेलंगाना ने बुनियादी ढांचे की योजना में महत्वपूर्ण वृद्धि हासिल की है।

इस अवधि के दौरान एमए एंड यूडी का निवेश 44,021.99 करोड़ रुपये है, जबकि 2004-2014 तक खर्च किया गया 4636.38 करोड़ रुपये था। हैदराबाद में शहरी बुनियादी ढांचे पर राज्य का समर्पित फोकस एसआरडीपी, सीआरएमपी, एचआरडीसी और एसएनडीपी जैसे परियोजना आधारित एसपीवी के माध्यम से संभव हुआ। केटीआर ने कहा कि नगर निकाय ने इस अवधि के दौरान अपनी बैलेंस शीट के आधार पर बांड और बैंक ऋण के माध्यम से संसाधन भी जुटाए।

केटीआर ने खुलासा किया कि राज्य सरकार सभी कस्बों में केंद्रीय प्रकाश व्यवस्था स्थापित कर रही है। इसके अलावा, सभी कस्बों में एकीकृत शाकाहारी और गैर-शाकाहारी बाजार भवनों का निर्माण किया जा रहा है। कुछ स्थानों पर, ये बाजार पहले से ही उपलब्ध हो गए हैं।

आरपीएफ ने 10 लाख रुपये का गांजा जब्त किया

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। ऑपरेशन नारकोस के तहत की गई जांच के दौरान, रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ), सिकंदराबाद डिवीजन की टीमों ने दो अलग-अलग मामलों में तीन लोगों को हिरासत में लिया और उनके पास से गांजा जब्त किया। आरपीएफ, सिकंदराबाद की अपराध निरोधक टीम ने सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन पर ट्रेन नंबर 11020 की जांच की और एस1 कोच में ट्रॉली सूटकेस के साथ एक संदिग्ध व्यक्ति को पाया। ट्रॉली से भूरे रंग के प्लास्टर में पैक सूखे गांजे के पांच पैकेट बरामद किए गए। प्रत्येक पैकेट का वजन लगभग 2 किलो गांजा और अनुमानित कीमत 10 लाख रुपये है। एक अन्य मामले में, आरपीएफ टीम ने उत्पाद शुल्क टीम के साथ संयुक्त रूप से विकाराबाद रेलवे स्टेशन पर अभियान चलाया और प्लेटफार्म नंबर 2 पर एक पुरुष और एक महिला को दो सफेद पॉलिथीन बैग रखने के आरोप में हिरासत में लिया, जिनमें से प्रत्येक बैग में 10 पैकेट गांजा था। कुल 20 पैकेट गांजा जब्त किया गया जिसका वजन लगभग 39.5 किलोग्राम और कीमत 39.50 लाख रुपये है। वर्ष 2022 के दौरान, आरपीएफ सिकंदराबाद डिवीजन ने 35 घटनाओं में 7.84 करोड़ रुपये मूल्य के नशीले पदार्थ उत्पाद बरामद किए हैं और 41 लोगों को गिरफ्तार किया है। 2023 में, डिवीजन ने 15 घटनाओं में 3.48 करोड़ रुपये मूल्य के नशीले पदार्थ उत्पाद बरामद किए और 14 लोगों को गिरफ्तार किया। सिकंदराबाद के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त देबास्मिता चट्टोपाध्याय बनर्जी ने कहा, 'हमने ड्रग तस्करों को लक्षित करने के लिए एनसीबी और अन्य कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ समन्वय में ट्रेनों में जांच तेज कर दी है।'

आईआईटी हैदराबाद के शोधकर्ताओं को ब्रह्मांड के गुंजन के प्रमाण मिले

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। भारत, जापान और यूरोप के खगोलविदों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम का हिस्सा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-हैदराबाद (आईआईटी-एच) के शोधकर्ताओं की एक टीम ने दुनिया की छह सबसे संवेदनशील पल्सर, प्रकृति की सर्वोत्तम घड़ियों की निगरानी के परिणाम प्रकाशित किए हैं। दुनिया के सबसे संवेदनशील रेडियो दूरबीनों में से, जिसमें भारत का सबसे बड़ा दूरबीन यूजीएमआरटी भी शामिल है। परिणाम अल्ट्रा-लो फ्रीक्वेंसी गुरुत्वाकर्षण तरंगों के कारण ब्रह्माड के ढांचे के निरंतर कंपन के साक्ष्य का संकेत प्रदान करते हैं। ऐसी तरंगें बड़ी संख्या में नाचते ब्लैक होल जोड़े से उत्पन्न होने की उम्मीद है, जो हमारे सूर्य से करोड़ों गुना भारी हैं। मिली जानकारी के अनुसार टीम के नतीजे गुरुत्वाकर्षण तरंग स्पेक्ट्रम में एक नई, खगोलीय रूप से समृद्ध खिड़की खोलने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हैं। ऐसे नाचते हुए ब्लैक होल जोड़े, जिनके टकराने वाली आकाशगंगाओं के केंद्रों में छिपने की उम्मीद है, हमारे ब्रह्मांड के ताने-बाने में तरंगें पैदा करते हैं, और खगोलशास्त्री उन्हें नैनो-हर्ट्ज गुरुत्वाकर्षण तरंगें कहते हैं क्योंकि उनकी तरंग दैर्ध्य कई लाख करोड़ किलोमीटर हो सकती है। उन्होंने कहा, बड़ी संख्या में सुपरमैसिव ब्लैक होल जोड़े से गुरुत्वाकर्षण तरंगों की निरंतर ध्वनि हमारे ब्रह्मांड में लगातार गुंजन पैदा करती है।

टीम, जिसमें यूरोपीय पल्सर टाइमिंग ऐरे (ईपीटीए) और इंडियन पल्सर टाइमिंग ऐरे (आईएनपीटीए) कंसोर्टिया के सदस्य शामिल हैं, ने एस्ट्रोनॉमी और एस्ट्रोफिजिक्स जर्नल में दो पत्रों में अपने परिणाम प्रकाशित किए, और उनके परिणाम ऐसी गुरुत्वाकर्षण तरंगों की उपस्थिति का संकेत देते हैं। उनका डेटा सेट इन परिणामों में दुनिया के छह सबसे बड़े रेडियो दूरबीनों से 25 वर्षों में एकत्र किए गए पल्सर डेटा का विश्लेषण शामिल है। इस खोज में भाग लेने वाली आईआईटी-एच टीम में भौतिकी विभाग और एआई विभाग के संकाय डॉ. शांतनु देसाई, भौतिकी पीएचडी छात्र अमन श्रीवास्तव, दिव्यांश खरबंदा (इंजीनियरिंग भौतिकी में 2023 बीटेक स्नातक), श्वेता अरुमुगम (ईई में उभरते बीटेक सीनियर), ईई में एक अन्य बीटेक छात्रा, प्राग्ना ममदीपका, भी आईएनपीटीए का हिस्सा है और चल रहे आईएनपीटीए प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभा रहे है। आईआईटी-एच 2018 से इसका हिस्सा रहा है, और आईआईटी-एच के कुछ पिछले छात्र खगोल भौतिकी और संबंधित उद्योग में उच्च अध्ययन कर रहे हैं। इस परिणाम के महत्व और आईआईटीएच के योगदान पर जोर देते हुए आईआईटीएच के निदेशक प्रोफेसर बीएस मूर्ति ने कहा कि इन खोज में शामिल इनपीटीए सहयोग और आईआईटीएच की टीम को बधाई। आईआईटीएच के प्रोफेसर शांतुन देसाई ने कहा कि मुझे खुशी है कि भौतिकी और इलेक्ट्रकल इंजीनियरिंग दोनों के आईआईटीएच छात्र इस ऐतिहासिक खोज का हिस्सा बन सकते है। ये परिणाम कई वैज्ञानिकों के कई वर्षो के श्रमसाध्य प्रयासों के कारण है।

टास्कफोर्स ने तीन मोबाइल फोन झपटमारों को पकड़ा

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। कमिश्नर टास्कफोर्स (दक्षिण-पूर्व) की टीम ने बुधवार को एक किशोर सहित तीन लोगों को पकड़ा, जिन्होंने दस दिन पहले आईएस सदन में कथित तौर पर एक मोबाइल फोन छीन लिया था। पुलिस ने उनके पास से दो मोबाइल फोन और एक मोटरसाइकिल बरामद की है। जो लोग पकड़े गए हैं उनमें चत्रिनाका का रसुमल्ला साकेत उर्फ साकेत (23), बदनपेट का मल्ले पदु तरूण (19) और एक किशोर शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, 23 जून की रात, तीनों बहादुरपुरा में एक जन्मदिन की पार्टी से लौट रहे थे, जब उन्होंने तीन लोगों को एक वाहन को खींचते हुए देखा क्योंकि उसमें ईंधन खत्म हो गया था। डीसीपी टास्कफोर्स, पी. राधा किशन राव ने कहा कि तरुण और साकेत गए और किसी मामूली बहाने से अजनबियों से झगड़ा किया और उनसे दो मोबाइल फोन छीन लिए और अपनी बाइक पर भाग गए। एक शिकायत के बाद आईएस सदन पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया और आईएस सदन पुलिस के साथ टास्क फोर्स ने तीनों को पकड़ लिया।

सड़क दुर्घटना में तीन इंजीनियरिंग छात्रों की मौत हो गई

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। रंगारेड्डी जिले के इब्राहिमपटनम में एक कार ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी, जिससे तीन इंजीनियरिंग छात्रों की मौत हो गई। पीड़ितों की पहचान भानु प्रसाद, नारायण रेड्डी और नवीन के रूप में की गई, ये सभी भारत इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग का कोर्स कर रहे थे। पुलिस के मुताबिक, तीनों मोटरसाइकिल पर जा रहे थे, तभी शाम करीब 5 बजे इब्राहिमपट्टनम और रायपोल गांव स्थित एचपी पेट्रोल पंप के पास विपरीत दिशा से आ रही एक कार ने बाइक में टक्कर मार दी। इब्राहिमपटनम इंस्पेक्टर जी. राम कृष्ण ने कहा कि कार चालक अपने वाहन को तेजी और लापरवाही से चला रहा था जिसके परिणामस्वरूप दुर्घटना हुई। तीनों पीड़ितों को गंभीर चोटें आईं और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को इब्राहिमपटनम के सरकारी अस्पताल में पहुंचाया। कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

मैंने हाईकमान से कभी कुछ नहीं मांगा : किशन रेड्डी

नई दिल्ली, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्रीय मंत्री और तेलंगाना बीजेपी के नए अध्यक्ष जी. किशन रेड्डी ने आज कहा कि मैंने पार्टी से कभी कुछ नहीं मांगा।

तेलंगाना राज्य भाजपा अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति के बाद दिल्ली में मीडियाकर्मियों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने एक अनुशासित कार्यकर्ता के रूप में पार्टी आलाकमान द्वारा उन्हें दी गई सभी जिम्मेदारियों को पूरा किया है। उन्होंने कहा कि वह पहली बार सांसद के रूप में जीते हैं। चार वर्षों में से, मैं लगभग दो वर्षों तक केंद्रीय गृह राज्य मंत्री रहा हूँ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुझे केंद्रीय मंत्री के तौर पर जिम्मेदारियां सौंपी हैं। अगले दो वर्षों के लिए मैं केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री बना। मैंने पार्टी से कभी कुछ नहीं मांगा। उन्होंने कहा कि पार्टी ने ही उन्हें पहचाना है और कहा कि उन्होंने अब तक पार्टी के निर्देशों का पालन किया है। उन्होंने कहा कि हम पार्टी नेताओं के साथ चर्चा करेंगे और तेलंगाना में अगले विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता में लाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि चूंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 8 जुलाई को वारंगल का दौरा करेंगे, इसलिए उन्होंने सार्वजनिक बैठक के लिए की जाने वाली व्यवस्थाओं के बारे में चर्चा की।

तेलंगाना भाजपा प्रमुख बनने के बाद किशन रेड्डी केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में नदारद

नई दिल्ली, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना भाजपा अध्यक्ष के रूप में अपनी नियुक्ति के एक दिन बाद, केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में शामिल नहीं हुए। हालाँकि उनकी अनुपस्थिति का कोई आधिकारिक कारण नहीं बताया गया है, लेकिन कुछ नेताओं का मानना है कि यह केंद्रीय मंत्रिमंडल में अपेक्षित फेरबदल से पहले उनके बाहर निकलने का संकेत हो सकता है। केंद्रीय संस्कृति, पर्यटन और उत्तर पूर्व क्षेत्र के विकास मंत्री रेड्डी को मंगलवार को भाजपा की तेलंगाना इकाई का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। भाजपा में भी एक व्यक्ति-एक पद का नियम है। रेड्डी के एक करीबी सूत्र ने इस पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया कि क्या वह मंत्रिमंडल से इस्तीफा देंगे। सूत्र ने कहा, वह दशकों से एक समर्पित पार्टी कार्यकर्ता रहे हैं और नेतृत्व उन्हें जो भी जिम्मेदारी देगा, वह उसका निर्वहन करेंगे।

उम्मीद है कि प्रधानमंत्री मोदी जल्द ही अपने मंत्रिपरिषद में फेरबदल करेंगे और भाजपा में संगठनात्मक बदलावों को इसके अग्रदूत के रूप में देखा जा रहा है क्योंकि सत्तारूढ़ पार्टी इस साल कई राज्य चुनावों और उसके बाद 2024 में लोकसभा चुनावों की तैयारी कर रही है। केंद्रीय मंत्रिपरिषद में व्यापक रूप से अटकलों वाले फेरबदल पर पार्टी या सरकार की ओर से कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं आई है।

भाजपा विधायक रघुनंदन राव हिरासत में लिए गए

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के दुब्बाका के भाजपा विधायक रघुनंदन राव को पुलिस ने अलवाल में हिरासत में ले लिया। वह छत्रपति शिवाजी की प्रतिमा को अपवित्र करने को लेकर सोमवार को हुई झड़प में घायल हुए लोगों से मिलने गजवेल जा रहे थे। पुलिस ने विधायक को हकीमपेट वायु सेना स्टेशन के पास हिरासत में ले लिया और उन्हें अलवाल पुलिस स्टेशन में स्थानांतरित कर दिया। सोमवार की रात एक व्यक्ति द्वारा शिवाजी की प्रतिमा के पास शौच करने के बाद पिछले दो दिनों में गजवेल में सांप्रदायिक अशांति की सूचना मिली थी। शख्स को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया गया। मंगलवार को एक मस्जिद पर पथराव के बाद कस्बे में तनाव बरकरार है।

स्थापना दिवस पर बोले लालू- देश को तोड़ रहे हैं पीएम मोदी

विधायकों को खरीद कर बनाते हैं सरकार

पटना, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पार्टी के स्थापना दिवस पर आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव बुधवार (5 जुलाई) को पीएम नरेंद्र मोदी और बीजेपी पर हमलावर दिखे। स्थापना दिवस पर प्रदेश कार्यालय में सभा को संबोधित करते हुए लालू ने कहा कि आज आरजेडी के 27 साल हो गए। देश में भाईचारे को तोड़ा जा रहा।

नफरत फैलाई जा रही। नरेंद्र मोदी देश को तोड़ रहे हैं। लालू यादव ने कहा कि बाबा साहेब ने जो संविधान दिया था उसको बीजेपी खत्म कर रही है। हर क्षेत्र में और हर चुनाव में आरजेडी ने कीर्तिमान स्थापित किया। रघुवंश प्रसाद की कमी महसूस हो रही है। उन्होंने कहा कि पार्टी (आरजेडी) अपने स्थापना काल से लेकर अब तक मजबूती से देश की एकता, धर्मनिरपेक्षता के लिए खड़ी है। विधायकों की खरीद बिक्री कर नरेंद्र मोदी सरकार बनाते हैं।

लालू यादव ने की देशवासियों से अपील

पार्टी के स्थापना दिवस पर लालू यहीं नहीं रुके। उन्होंने बीजेपी को निशाने पर लेते हुए आगे कहा कि मोदी सरकार में महंगाई है, गरीब तबाह हो गया। लालू यादव ने बिहार और देशवासियों से अपील करते हुए कहा कि झुकना नहीं है। इस कार्यक्रम के दौरान पार्टी के तमाम वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। जिलों से भी कार्यकर्ता पहुंचे थे। नौकरी के बदले जमीन मामले में तेजस्वी यादव के खिलाफ भी आरोप पत्र दाखिल किया गया है। लालू ने कहा कि जो आवाज उठा रहा है उसके पीछे जांच एजेंसियों को लगाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आवाज दबाने की कोशिश है लेकिन कोई डरने वाला नहीं है। लालू ने कहा कि जगदानंद आरजेडी को अच्छे से चला रहे हैं। मौके पर भारी संख्या में कार्यकर्ता नारा लगा रहे थे- लालू यादव मत घबराना, तेरे पीछे सारा जमाना।

युवक पर पेशाब करने वाले बीजेपी कार्यकर्ता पर मायावती बोलीं

'जितनी भी निन्दा की जाए कम, सरकार भी संलिप्त'

लखनऊ, 5 जुलाई (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के सीधी जिले में एक व्यक्ति द्वारा एक आदिवासी युवक पर पेशाब करने का वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने मंगलवार को मामला दर्ज किया। पेशाब करते हुए वायरल वीडियो में आरोपी बीजेपी नेता के घर पर बुलडोजर चलाने की तैयारी की जा रही है। वहीं इसपर बीएसपी चीफ मायावती की प्रतिक्रिया आई है। मायावती ने कहा, मध्य प्रदेश के सीधी जिले में एक आदिवासी/दलित युवक पर स्थानीय दबंग नेता द्वारा पेशाब किए जाने की घटना अति-शर्मनाक, जिस अमानवीय कृत्य की जितनी भी निन्दा की जाए वह कम। इसका वीडियो वायरल होने के बाद ही सरकार का जागना इनकी संलिप्तता को साबित करता है, यह भी अति-दुःखद। बीएसपी चीफ ने कहा, मध्य प्रदेश की बीजेपी सरकार द्वारा इस सम्बंध में मुजरिम को बचाने व उसे अपनी पार्टी का न बताने आदि को त्याग कर उस अपराधी के खिलाफ केवल एनएसए नहीं बल्कि उसकी सम्पत्ति को जब्त/ध्वस्त करने की कार्रवाई करनी चाहिए। ऐसी घटनायें सभी को शर्मसार करती हैं। जबकि आकाश आनंद ने कहा, मध्य प्रदेश में एक गरीब आदिवासी लड़के पर पेशाब करने का बेहद अमानवीय और घिनौनी वीडियो सामने आया है। ये घटना एमपी की कानून व्यवस्था का हाल बयां करती है। जहां कमजोर की कोई सुनवाई नहीं। आरोपी व्यक्ति को तत्काल गिरफ्तार कर सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए और पीड़ित को स्वास्थ्य जाँच और संरक्षण प्रदान किया जाए।

अपराधियों की कोई जाति नहीं

वहीं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार रात को इस घटना को बेहद निंदनीय बताते हुए कहा, ''हम इस मामले में कड़ी से कड़ी सजा देंगे ताकि दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया जा सके। हम उसे किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेंगे।" यह पूछे जाने पर कि क्या आरोपी बीजेपी से है, चौहान ने कहा, ''अपराधियों की कोई जाति, धर्म और पार्टी नहीं होती। अपराधी तो अपराधी ही होता है। उसे बख्शा नहीं जाएगा।''एमपी बीजेपी अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा ने कहा, ''मैं इसकी कड़ी निंदा करता हूं। यह न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है बल्कि ऐसे लोगों को कड़ी सजा दी जाएगी।'' यह पूछे जाने पर कि क्या आरोपी विधायक प्रतिनिधि है, शर्मा ने कहा कि ऐसे लोग किसी पार्टी के नहीं होते हैं। जब विशेष रूप से पूछा गया कि क्या उन्हें पार्टी से हटा दिया गया है, तो शर्मा ने कहा, 'बिल्कुल।' चौहान और शर्मा दोनों बीजेपी की कोर कमेटी की बैठक के बाद पत्रकारों से बात कर रहे थे।

गया में रेलवे ट्रैक से मिलीं 3 कटी लाशें

मरने वालों में एक बच्चा भी शामिल, पहचान में जुटी पुलिस

गया, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पंडित दीनदयाल उपाध्याय-गया रेलखंड पर तीन कटी लाशें मिलने के बाद हड़कंप मच गया। पहली घटना परैया रेलवे स्टेशन के समीप की है। मंगलवार (4 जुलाई) की देर रात रेलवे ट्रैक पर एक 35 वर्षीय पुरुष के साथ एक बच्चे (करीब 01 साल) का कटा हुआ शव मिला। आशंका जताई जा रही है कि ट्रेन की चपेट में आने से दोनों की मौत हुई होगी। घटना की सूचना यात्रियों को तब हुई जब दूसरे ट्रेन के यात्री एक प्लेटफॉर्म से दूसरे पर जा रहे थे। उन्होंने देखा कि डाउन मेन लाइन पर प्लेटफॉर्म के किनारे क्षत विक्षत शव पड़ा है। लाश देखने के बाद यात्रियों ने तुरंत इसकी सूचना रेलवे के कर्मियों को दी। इसके बाद आरपीएफ ने शव को बरामद किया। पोल संख्या 485 के पास से शव को बरामद किया गया है। दोनों शवों की पहचान नहीं हो सकी है। इन दोनों शवों को लेकर रेल पुलिस जांच में जुटी थी कि बुधवार (5 जुलाई) की सुबह गया-डीडीयू रेलखंड के डाउन ट्रैक पर एक और व्यक्ति का कटा हुआ शव मिल गया। रेलवे ट्रैक पर शव की सूचना मिलते ही आसपास के ग्रामीणों की भीड़ लग गई। शव की पहचान नहीं हो सकी है। 35 वर्षीय युवक और बच्चे की मौत आत्महत्या है या दुर्घटना यह भी साफ नहीं हुआ है। तीनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजा गया है। इस घटना को लेकर परैया स्टेशन मास्टर योगेश सिन्हा ने बताया कि शव मिलने की सूचना सबसे पहले रेल पुलिस को दी गई। ट्रेन से गिरकर मौत हुई है या हत्या के बाद ट्रैक पर शव को फेंका गया है यह पुलिस की जांच का विषय है। फिलहाल तीनों शव की पहचान अभी तक नहीं हो सकी है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला, कहा

हम लिव इन रिलेशनशिप के नहीं, अवैध संबंधों के हैं खिलाफ

इलाहाबाद, 5 जुलाई (एजेंसियां)। हाईकोर्ट ने लिव इन रिलेशनशिप पर बड़ा फैसला सुनाया है। कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा, हम लिव इन रिलेशनशिप के खिलाफ नहीं हैं लेकिन अवैध संबंधों के खिलाफ हैं। इतना ही नहीं कोर्ट ने दूसरे पुरूष के साथ लिव-इन में रह रही शादीशुदा महिला को पति से खतरे पर पुलिस सुरक्षा देने से इंकार कर दिया। इलाहाबाद हाईकोर्ट की ये टिप्पणी सामाजिक ताने-बाने की कीमत पर अवैध संबंधों को लेकर थी। जिसमें मांग की गई थी कि उन महिलाओं को पुलिस सुरक्षा नहीं दी जा सकती है। कोर्ट ने कहा कि अवैध संबंध रखने वाले को सुरक्षा देने का अर्थ है कि अवैध लिव-इन-रिलेशनशिप को मान्यता देना। कोर्ट ने दूसरे पुरूष के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रह रही शादीशुदा महिलाओं की याचिका को भी खारिज कर दिया।

याचिका में क्या रखी थी मांग?

महिलाओं ने हाईकोर्ट में अपने पति से सुरक्षा को लेकर खतरे की आशंका पर याचिका दाखिल करते हुए सुरक्षा की मांग रखी थी। ये याचिका प्रयागराज की सुनीता और अन्य की ओर से दाखिल की गई थी। याची की ओर से तर्क दिया गया कि वह 37 साल की महिला है। वह पति के यातनापूर्ण व्यवहार के कारण छह जनवरी 2015 से ही लिव-इन में रह रही है। महिला ने कहा था कि दूसरे याची के स्वेच्छा और शांतिपूर्वक तरीके से लिव इन में रह रही है। दोनों के खिलाफ कोई आपराधिक केस नहीं हैं और न ही इस मामले में कोई केस दर्ज है। लेकिन पति से उसकी सुरक्षा को खतरा है। जबकि सरकार की तरफ से कहा गया कि याची पर पुरूष के साथ अवैध रूप से लिव-इन में रह रही है।

कोर्ट ने क्यों किया सुरक्षा देने से इनकार

सरकार की ओर से कहा गया कि वह शादीशुदा है और अभी तलाक नहीं हुआ है, उसका पति जीवित है। हालांकि कोर्ट ने पहले भी इस तरह के मामले में सुरक्षा देने से इंकार कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि संरक्षण नहीं दिया जा सकता है, क्योंकि कल को याचिकाकर्ता यह कह सकते हैं कि कोर्ट ने उनके अवैध संबंधों को स्वीकार किया है। कोर्ट ने कहा कि पुलिस को उन्हें सुरक्षा देने का निर्देश अप्रत्यक्ष रूप से ऐसे अवैध संबंधों को हमारी सहमति मानी जायेगी। विवाह की पवित्रता में तलाक पहले से ही शामिल है। यदि याची को अपने पति के साथ कोई मतभेद है तो उसे लागू कानून के अनुसार सबसे पहले अपने पति या पत्नी से अलग होने के लिए आगे बढ़ना होगा।

यूपी: निजी तकनीकी संस्थानों में बढ़ेगी 10 फीसदी तक फीस

सरकारी की नहीं; 61200 रुपये सालाना होगा बीटेक का शुल्क

कानपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। निजी तकनीकी संस्थानों से डिग्री और डिप्लोमा कर रहे छात्रों को इस बार ज्यादा फीस चुकानी पड़ सकती है। प्रदेश भर के निजी संस्थानों में शुल्क निर्धारण करने वाली प्रवेश और फीस नियमन समिति ने फीस में दस फीसदी तक वृद्धि का प्रस्ताव तैयार किया है। कोर्सों के मुताबिक फीस तय कर ली गई है। हालांकि, इस संबंध में घोषणा छह जुलाई को लखनऊ में होने वाली बैठक में होगी। इससे करीब चार लाख छात्रों को ज्यादा शुल्क देना होगा। वहीं, सरकारी संस्थाओं में डिप्लोमा कर रहे दो लाख छात्रों की फीस में कोई बदलाव नहीं किया जा रहा है। फीस नियमन समिति की नई सूची के मुताबिक, इस बार निजी पॉलिटेक्निकों से इंजीनियरिंग डिप्लोमा करने के लिए छात्रों को प्रति वर्ष 33600 रुपये फीस देनी पड़ेगी। अभी इसके लिए उन्हें 30150 रुपये फीस जमा करनी पड़ती है। तीन साल के डिप्लोमा के लिए 3450 रुपये प्रति वर्ष के हिसाब से 10350 रुपये और ज्यादा चुकाने पड़ेंगे। इसी तीन साल के डिप्लोमा के लिए सरकारी पॉलिटेक्निकों के छात्रों को प्रति वर्ष केवल 12670 रुपये के हिसाब से 38010 रुपये चुकाने पड़ते हैं। प्राविधिक शिक्षा विभाग के अंतर्गत प्रदेश में 149 सरकारी पॉलिटेक्निक, 19 सहायता प्राप्त और 1266 निजी संस्थान हैं। इनमें कुल 2,35,464 सीटें हैं। सरकारी संस्थाओं में 59,028 और निजी में 1,76,434 सीटें हैं। निजी क्षेत्र के इंजीनियरिंग कॉलेजों से बीटेक करने के इच्छुक छात्रों को इस बार 61,200 रुपये सालाना फीस चुकानी पड़ेगी।

प्रशांत किशोर का यूसीसी को लेकर बड़ा बयान

पीके ने कहा- 'अगर यह लागू हुआ तो

समस्तीपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। देश में समान नागरिक संहिता को लेकर तरह-तरह की बहस हो रही है। सभी राजनीतिक दलों के नेताओं की अलग-अलग प्रतिक्रियाएं भी सामने आ रही हैं। इस बीच प्रशांत किशोर ने को समस्तीपुर में यूनिफॉर्म सिविल कोड पर बड़ा बयान दिया। प्रशांत किशोर ने कहा कि बीजेपी के घोषणा पत्र में राम मंदिर, धारा 370 और यूनिफॉर्म सिविल कोड ये आज से नहीं पिछले 20 से 25 सालों से हैं। पीके ने कहा कि बीजेपी ने दो को लागू कर दिया है। स्वाभाविक तौर पर उनकी बहुमत है और देश में उनकी बड़ी ताकत भी है इसलिए तीसरे मुद्दे को भी उठाएंगे। अगर उनकी अगली सरकार चुनकर आ जाती है और लोगों ने उसी पक्ष में मैंडेट दिया तो उनके घोषणा पत्र में जो है उसे लागू करेंगे ही करेंगे। जब तक उनको जनता ने आशीर्वाद नहीं दिया था तब तक ये मुद्दा उनके घोषणा पत्र में था, लागू नहीं हुआ था। अब जनता जो वोट करके उन्हें सरकार में ला रही है, तो स्वाभाविक है कि लागू करने का प्रयास करेंगे।

इतना आसान है नहीं जितना लग रहा

यूसीसी को लेकर प्रशांत किशोर ने कहा कि संघ के बड़े नेताओं यानी संस्थापक सदस्यों में से एक रहे नेताओं का बयान या इंटरव्यू देख लीजिए, हकीकत सामने आ जाएगी। यूसीसी को लागू करना इतना आसान नहीं है। देश की जो विविधता है उसको देखते हुए इसे लागू करना इतना आसान नहीं है जितना यह लग रहा है। पीके ने कहा कि धारा-370 ये कश्मीर से जुड़ा हुआ मामला था। भारत के एक भू-भाग को प्रभावित करता था। हालांकि, मानसिक तौर पर भले ही वो पूरे देश से जुड़ा मामला हो, लेकिन सीधे तौर पर जो लोग उससे प्रभावित हुए वो एक राज्य के लोग थे। राम मंदिर बना, उससे भी पूरे देश की जनता प्रभावित नहीं होती है। जो उसकी भावना से जुड़ा है, उसके पक्ष और विपक्ष में थे, वही लोग प्रभावित हुए।

'अगर यूसीसी लागू हुआ तो

आगे यूनिफॉर्म सिविल कोड को लेकर प्रशांत किशोर ने कहा कि यह मुद्दा वो है जो सीधे तौर पर पूरे देश की जनता को प्रभावित करता है। ये लागू करना ज्यादा कठिन है। यूसीसी अगर देश में लागू होता है तो इसके परिणाम या दुष्परिणाम भी उतने ही बड़े हो सकते हैं।

दलित महिला से छेड़खानी करने वाले को चार वर्ष का कारावास

श्रावस्ती, 5 जुलाई (एजेंसियां)। घर में घुसकर अनुसूचित जाति की महिला के साथ छेड़खानी करने के आरोपी को अपर सत्र न्यायाधीश (एससी-एसटी न्यायालय) उमेश कुमार ने दोष सिद्ध ठहराते हुए मंगलवार को चार वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई। साथ ही कोर्ट ने 15 हजार रुपये के अर्थदंड से दंडित भी किया। अर्थदंड न देने पर अतिरिक्त सजा भुगतनी पड़ेगी। विशेष लोक अभियोजक प्रेम कुमार मिश्रा ने बताया कि 19 जनवरी 2011 को सोनवा थाना क्षेत्र के एक गांव में अनुसूचित जाति की महिला घर में मौजूद थी। इसी दौरान गांव का ही रामदेव दीवार कूदकर उसके घर में घुस गया और महिला के साथ छेड़खानी करने लगा। महिला के शोर मचाने की आवाज जब गांव वालों को सुनाई दी तो वे दौड़ पड़े। गांव वालों को आता देखकर आरोपी फरार हो गया। पति के आने पर महिला ने इसकी जानकारी उसको दी।

मेरी गन मर्डर के लिए तैयार है

हमीरपुर में बीजेपी एमएलए को फेसबुक पर मिली जान से मारने की धमकी

हमीरपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में हमीरपुर सदर से बीजेपी विधायक मनोज प्रजापति को फेसबुक पर जान से मारने की धमकी मिली है। विधायक ने इस संबंध में एसपी दीक्षा शर्मा को मेल भेज कर शिकायत दर्ज कराई है। इस शिकायत के आधार पर पुलिस आरोपी की पहचान करने में जुट गई है। आरोपी ने विधायक को धमकी देते हुए लिखा है कि उसकी गन मर्डर के लिए तैयार है। या तो वह विधायक को मरवा देगा या फिर खुद मर जाएगा। इस संबंध में आरोपी ने अपने फेसबुक एकाउंट से दो पोस्ट किए हैं। उधर, विधायक मनोज प्रजापति ने कहा कि इस तरह का फेसबुक पोस्ट कर धमकी देने वाले युवक को वह जानते तक नहीं हैं। पुलिस के मुताबिक अभी तक आरोपी युवक की पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस आरोपी के फेसबुक एकाउंट और उसके मोबाइल फोन के आईपी एड्रेस की मदद से उसकी पहचान करने की कोशिश कर रही है। जानकारी के मुताबिक हमीरपुर में सदर विधानसभा सीट से बीजेपी विधायक मनोज प्रजापति इस समय घूमने के लिए परिवार के साथ कहीं बाहर गए हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें फेसबुक पोस्ट के जरिए जान से मारने की धमकी मिली है। यह धमकी अन्नी भाई नामक एकाउंट से मिली है। उन्होंने बताया कि आरोपी के फेसबुक प्रोफाइल को खोल कर उन्होंने युवक की पहचान करने की कोशिश की, लेकिन वह इस युवक को नहीं पहचान पाए। उन्होंने इस फेसबुक पोस्ट का स्क्रीनशॉट लेकर एसपी हमीरपुर दीक्षा शर्मा को मेल कर दिया है। पुलिस ने इस आधार पर केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि विधायक को दिए धमकी में आरोपी ने दो पोस्ट किए हैं। पहले पोस्ट में आरोपी ने लिखा है कि मेरी गन मर्डर के लिए तैयार है सुन लो राजनेता। इसके बाद आरोपी ने दूसरा पोस्ट किया है। इसमें लिखा है कि या तो वह विधायक मनोज प्रजापति को मरवा देगा या खुद मर जाएगा। विधायक को धमकी भरे इस पोस्ट के सोशल मीडिया पर वायरल होते ही प्रशासन में हड़कंप मच गया है। एसपी दीक्षा शर्मा ने आनन फानन में आरोपी की पहचान के लिए साइबर सेल की टीम को लगा दिया, वहीं उसकी धर पकड़ के लिए अलग अलग पुलिस टीमों का गठन किया है। अपर पुलिस अधीक्षक मायाराम वर्मा ने बताया कि विधायक को धमकी वाला पोस्ट सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। पुलिस ने वायरल पोस्ट के आधार पर सुमेरपुर थाने में केस दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू की है।

फतेहपुर में लव जिहाद और रेप के आरोपी के घर चला बुलडोजर, एक्शन से इलाके में हड़कंप

फतेहपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। फतेहपुर में लव जिहाद और रेप के आरोपी सोनू उर्फ सिकंदर के घर पर बुलडोजर एक्शन हुआ है। सूत्रों की मानें तो फतेहपुर में पीड़िता की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। इस घटना के बाद जब मामले ने तूल पकड़ी तो यूपी पुलिस एक्शन में आई। इसके बाद पुलिस ने आरोपी के पिता और उसके भाई पर भी एफआईआर दर्ज किया। अब लव जिहाद के इस मामले में आरोपी के घर पर बुलडोजर एक्शन हुआ है। आरोपी सोनू उर्फ सिकंदर के घर मंगलवार को बुलडोजर चला है। पहले आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की चार टीमें बनाई गई थीं, जिसकी अगुवाई सीओ कर रहे थे। इसके बाद मंगलवार को फोर्स ने लव जिहाद के आरोपी के घर पर बुलडोजर चलाया है। बुलडोजर के एक्शन से इलाके में हड़कंप मच गया है। फोर्स ने ज्वालागंज इलाके को पहले छावनी में बदल दिया।

राकेश टिकैत को दिया जाए भारत रत्न

इस पूर्व आईपीएस ने भारत सरकार से कर दी बड़ी मांग

मुजफ्फरनगर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। हमेशा से चर्चाओं में रहने वाले पूर्व आईपीएस और आजाद अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ ठाकुर ने कहा मुजफ्फरनगर स्थित भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत के आवास पर पहुंचकर उनसे शिष्टाचार मुलाकात की। इस दौरान अमिताभ ठाकुर ने भारत सरकार से राकेश टिकैत को भारत रत्न पुरस्कार दिए जाने की मांग कर दी। पूर्व आईपीएस अमिताभ ठाकुर ने कहा, "राकेश टिकैत द्वारा देश के लिए और देश के किसानों के लिए जो अद्भुत कार्य किया गया है, देश को विशेष स्थिति में बचाया गया है, तीन काले कानूनों को खत्म किया गया है, इसलिए मैं उन्हें सम्मान देने आया हूं और साथ ही आपके माध्यम से भारत सरकार से यह मांग करता हूं इस व्यक्ति ने देश की सच्ची सेवा की है। इन्हें भारत रत्न पुरस्कार दिया जाए। हमारी आजाद अधिकार सेना इस मांग को लेकर पुरजोर तरीके से आगे बढ़ेगी। अमिताभ ठाकुर ने आगे कहा, "श्री चंद्रशेखर आजाद पर जो हमला हुआ है, वह सरकार द्वारा पोषित है। यह भी स्पष्ट है कि इस मामले को दबाया जा रहा है। मैंने चंद्रशेखर आजाद से मुलाकात की। उनका साफ कहना है कि मामले को रफा-दफा किया जा रहा है। हम पुलिस की इस थ्योरी को पूरी तरह नकारते हैं। इस दौरान राकेश टिकैत ने भी मीडिया से बात करते हुए चंद्रशेखर आजाद पर हुए हमले को लेकर कहा कि 'चंद्रशेखर की सिक्योरिटी को बढ़ाना चाहिए,

पुरुषों की तुलना में बिहार की महिलाएं अधिक मुखर

सीएम नीतीश कुमार के सामने उठा रहीं अपने हक की बात

पटना, 5 जुलाई (एजेंसियां)। बिहार की महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक मुखर होकर अपनी बात मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सामने रख रही हैं। जनता दरबार में पहुंची महिलाओं ने सीएम के सामने अपनी बात स्पष्ट रूप से रखा। जनता दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में समस्या लेकर आए लोगों की सीएम के समक्ष अपनी बात रखने के अंदाज का विश्लेषण करें तो यह दिखता है कि महिलाएं ज्यादा स्पष्ट तरीके से टू द प्वाइंट अपनी बात कह रहीं हैं। इस बात से कहा जा सकता है कि महलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ा है। इसलिए वह अधिक सशक्त होकर अपनी बात कह रही हैं। अगर उनके शैक्षिक स्तर का विश्लेषण करें तो बड़ी संख्या मे अनपढ़ महिलाएं भी अपनी बात लेकर मुख्यमंत्री के समक्ष पहुंचतीं हैं। वह शुद्ध हिंदी में बात नहीं करती हैं, बल्कि अपने क्षेत्रीय भाषाओं में संवाद करती दिखती हैं। मुख्यमंत्री भी इन महिलाओं के साथ कभी-कभी भोजपुरी और मैथिली में संवाद करते दिखे हैं। ऐसा नहीं कि महिलाएं सिर्फ मामले अटक जाने और उस पर कार्रवाई की गुहार के साथ पहुंच रहीं। हाल के दिनों में यह ट्रेंड भी दिखा है कि वह अपने हक की बात करती दिखीं हैं। जिस सोमवार को मुख्यमंत्री समाज कल्याण विभाग से जुड़े विषय पर गुहार सुनते हैं, उस दिन महिलाओं की यह शिकायत खूब पहुंचती थी कि आंगनबाड़ी सेविका के चयन में धांधली की गई है। उनका नंबर अधिक था, पर दूसरी महिला का चयन हो गया। ऐसे में बड़ी संख्या में इस तरह की शिकायतें आईं तो इसके लिए नियमावली पर काम शुरू हुआ।

पति के हत्यारे की गिरफ्तारी पर भी कर रहीं बात

कई मामले इस तरह के भी सामने आए जब महिलाएं अपनें पति की हत्या के मामले में हत्यारे की गिरफ्तारी नहीं हो पाने की गुहार भी बगैर रोए कर रहीं। एक-दो मामले ऐसे भी दिखे कि दहेज की वजह से बेटी को प्रताड़ित करने की बात भी कह रहीं। जमीन को लेकर धांधली की बात भी पूरी तकनीक के साथ बता रहीं महिलाएं।

नई पीढ़ी की लड़कियां भी योजनाओं के हक पर बोल रहीं

नई पीढ़ी की लड़कियां भी समूह में पहुंच मुख्यमंत्री से अपने हक की बात कर रहीं। कुछ माह पहले तक इस तरह के मामले खूब पहुंच रहे थे जब लड़कियां समूह में पहुंचकर मुख्यमंत्री मेधावृत्ति योजना की राशि भुगतान की गुहार लगा रहीं थीं।

ये शिकायतें भी आईं

2014 में शादी हुई थी अब दहेज में स्कॉर्पियो मांग रहा, नहीं देने पर प्रताड़ित किया जा रहा

मेरे पति नगर निगम में थे, तीन साल पहले उनकी मृत्यु हो गई पर अभी तक किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं मिली

आठ फीट चौड़ी सड़क होने के बाद भी हर घर नाली गली का लाभ नहीं मिल रहा

मेरे घर के ऊपर से बिजली का तार गुजर रहा, उसे हटवा दीजिए

बदलेगी चंबल की पहचान, घोषित होगा डॉल्फिन अभयारण्य

आगरा, 5 जुलाई (एजेंसियां)। कभी डाकुओं के पनाहगार के रूप में कुख्यात चंबल की पहचान अब बदलने वाली है। सरकार इसे डॉल्फिन अभयारण्य के रूप में घोषित कर पर्यटकों को आकर्षित करने जा रही है। इसके लिए राष्ट्रीय चंबल सेंचुअरी प्रोजेक्ट की उप वन संरक्षक (वन्यजीव) आरुषि मिश्रा ने एक प्रस्ताव शासन को भेजा है। डॉल्फिन अभयारण्य के लिए इटावा स्थित राष्ट्रीय चंबल सेंचुरी के सहसों क्षेत्र का चयन किया है जहां बड़ी संख्या में डॉल्फिन पाई जाती हैं। आगरा में ताजमहल देखने आने वाले पर्यटक और वन्यजीव प्रेमी चंबल सेंचुअरी के साथ अब जल्द ही डॉल्फिन सफारी का भी आनंद ले सकेंगे। इटावा स्थित चंबल सेंचुरी के सहसों के 20 किलोमीटर क्षेत्र में बड़ी संख्या में डॉल्फिन पाई जाती है। यहां पर इनकी संख्या में लगातार इजाफा देखा जा रहा है। राष्ट्रीय चंबल सेंचुअरी प्रोजेक्ट की उप वन संरक्षक (वन्यजीव) आरुषि मिश्रा ने बताया कि राष्ट्रीय जलीय जीव डॉल्फिन के संरक्षण के लिए डॉल्फिन अभयारण्य का एक प्रस्ताव शासन को भेजा गया है। इटावा स्थित राष्ट्रीय चंबल सेंचुअरी के सहसों क्षेत्र को डॉल्फिन सेंचुरी के लिए चयन किया है। इसमें उन्होंने इटावा के सहसों का 20 किलोमीटर का दायरा चिह्नित किया है। इस स्थान पर 50 से 80 के करीब डॉल्फिन हैं। सैलानी यहां बैठकर डॉल्फिन को देख सकेंगे।

केदारनाथ मंदिर में मोबाइल ले जाने पर लगेगा प्रतिबंध

वायरल वीडियो के बाद बीकेटीसी ने पुलिस को लिखा पत्र

केदारनाथ धाम, 5 जुलाई (एजेंसियां)। केदारनाथ धाम में बड़ी संख्या में देश-विदेश से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। इस बीच सोशल मीडिया पर कुछ ऐसे वीडियो भी सामने आए, जिन्हें लेकर विवाद हुआ। पिछले दिनों मंदिर के गर्भगृह में एक महिला नोट उड़ाते हुए दिखी तो वहीं एक ब्लॉगर ने अपने ब्वॉयफ्रेंड को प्रपोज करते हुए रील बनाई। जिससे धार्मिक भावनाएं आहत हो रही हैं और लोगों में गुस्सा देखा जा रहा है।

केदारनाथ मंदिर में इस तरह की घटनाएं न हों इसे लेकर अब बद्री-केदार मंदिर समिति सख्त हो गई है। समिति ने मंदिर के अंदर मोबाइल ले जाने पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने की तैयारी कर ली है। बीकेटीसी के कार्यकारी अधिकारी आरसी तिवारी ने पुलिस चौकी केदारनाथ को पत्र लिखकर यहां आने वाले यूट्यूबर्स, रील्स और वीडियो बनाने वालों पर कड़ी निगरानी रखने और ऐसी घटनाओं पर कठोर कार्रवाई करने के लिए लिखा है ताकि इस तरह की घटनाएं मंदिर परिसर के अंदर घटित न हो पाएं। इसके साथ ही समिति अब केदारनाथ मंदिर के भीतर मोबाइल ले जाने पर भी प्रतिबंध लगाने जा रही है। इसके लिए जरूरी तैयारियां की जा रही हैं। जिसके बाद यहां आने वाले श्रद्धालु अब न तो मंदिर के अंदर मोबाइल ले जा सकेंगे और न ही वीडियो आदि बना सकेंगे।

सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो के बाद एक्शन

दरअसल, पिछले दिनों सोशल मीडिया पर मशहूर ब्लॉगर विशाखा का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें वो केदारनाथ मंदिर के सामने घुटनों के बल बैठकर अपने ब्वॉयफ्रेंड के प्रपोज करते और उसे अंगूठी पहनाते दिखती है। इस वीडियो को लेकर सोशल मीडिया पर कई तरह की प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं। कई लोगों का कहना है कि ऐसे वीडियो की वजह से लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत हो रही हैं। केदारनाथ मंदिर आस्था का केंद्र है, लेकिन कई लोग इसे पिकनिक स्पॉट बना रहे हैं।

श्री केदारनाथ-बदरीनाथ मंदिर समिति के मुख्य कार्याधिकारी योगेन्द्र सिंह ने कहा है कि अब श्रद्धालुओं को मंदिर में प्रवेश करने से पहले अनिवार्य रूप से अपना मोबाइल फोन बंद करने का नियम बनाया है। जिसके बाद अब जल्द ही मंदिर के अंदर मोबाइल फोन ले जाना प्रतिबंधित कर दिया जाएगा।

मंदिर परिसर में भोलेनाथ के सामने पति ने पत्नी की मांग में भरा सिंदूर वीडियो हुआ वायरल

केदारनाथ, 5 जुलाई (एजेंसियां)। केदारनाथ मंदिर परिसर में भोलेनाथ के सामने पति ने पत्नी की मांग में सिंदूर भरा। इसका वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। कुछ दिन पहले ही मशहूर व्लॉगर विशाखा का केदारनाथ में अपने प्रेमी को अंगूठी पहनाने का वीडियो वायरल हुआ था। लोगों ने इस पर अलग-अलग प्रतिक्रिया दी है। कुछ लोगों ने धाम में इस तरह के कृत्यों पर रोक लगाने की मांग की है। उनका कहना है कि केदारनाथ आने वाले यात्रियों को मर्यादा का पालन करना चाहिए।

गरीबी से तंग आकर मां ने 800 रुपये में कर दिया नवजात का सौदा

दूसरी बेटी होने से खुश नहीं थी महिला

मयूरभंज, 5 जुलाई (एजेंसियां)। ओडिशा के मयूरभंज जिले में एक सनसनीखेज घटना सामने आई है। यहां दूसरी बार भी बेटी पैदा होने पर उसकी मां ने 800 रुपये में बच्ची का सौदा कर दिया। जब उसके पति को खबर लगी तो शिकायत पुलिस से की गई। इसके बाद पुलिस ने छानबीन कर बच्ची को बरामद कर लिया। पुलिस ने नवजात बच्ची को बेचने के मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार, यह घटना मयूरभंज जिले की खूंटा पुलिस सीमा के तहत महुलिया गांव की है। बताया जा रहा है कि गरीबी और दूसरी बेटी के जन्म से एक महिला परेशान थी। उसने कथित तौर पर अपनी आठ महीने की बच्ची को महज 800 रुपये में एक दंपत्ति को बेच दिया। इस सौदे के बारे में महिला के पति को पता नहीं था, क्योंकि वह काम के सिलसिले में तमिलनाडु गया था। महिला दूसरी बार बेटी को जन्म देने के बाद खुश नहीं थी। उसने इस मामले में माही मुर्मू नाम के शख्स से चर्चा की थी। माही ने नवजात शिशु को 800 रुपये में खरीदने के लिए एक दंपत्ति से बात की। बच्ची के पिता ने इस संबंध में पुलिस से की गई शिकायत में कहा कि मैं जब तमिलनाडु से घर पहुंचा तो मेरी छोटी बेटी नहीं थी। इसके बाद जब उसके बारे में पूछताछ की तो पता चला कि पत्नी ने मेरी बेटी को बेच दिया है। इसके बाद तत्काल इस संबंध में खूंटा थाने में शिकायत की। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी। पुलिस ने बच्चे के बेचे जाने की शिकायत मिलने के बाद तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया। इनमें बिचौलिया और बच्ची को खरीदने वाला शामिल है। पुलिस ने बच्ची को बरामद कर उसके माता-पिता को सौंप दिया है। गिरफ्तार किए गए लोगों में बच्ची की मां और बच्ची को खरीदने वाले दंपत्ति फुलमंडी मरांडी और तुदुकुड शामिल हैं। वहीं बिचौलिया माही मुर्मू को भी गिरफ्तार कर लिया गया है।

बोरे में बंद लडकी की लाश मुंबई में समुद्र किनारे मिली

मुंबई, 5 जुलाई (एजेंसियां)। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई के वर्ली इलाके में समुद्र किनारे एक लड़की का शव मिला है। यह शव एक बोरी में बंद पाया गया है। मृत लड़की के हाथ-पैर टूटे हुए हैं। मुंबई पुलिस ने इस मामले में अनजान शख्स के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। लड़की की उम्र करीब 18 से 30 साल की बताई जा रही है। इस तरह मुंबई जैसे शहर में समुद्र किनारे बोरी में एक लड़की का शव बरामद होने से एक बार फिर शहर में महिलाओं की सुरक्ष को लेकर सवाल खड़े हो गए हैं। लोगों में दहशत फैल गई है। वर्ली पुलिस की ओर से दी गई जानकारियों के मुताबिक लड़की का शव वर्ली सी फेस के पास एक बोरी में बंद पाया गया है। पुलिस के अंदाज के मुताबिक मृत लड़की 18 से 30 साल की है। जिस तरह से लड़की के हाथ पैर टूटे हुए हैं, उससे समझ आ रहा है कि लड़की की हत्या की गई है और सबूत मिटाने के लिए उसे यह रूप देकर बोरी में पैक कर फेंका गया है। फिलहाल पुलिस ने अनजान शख्स के खिलाफ केस दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

पिछले कुछ वक्त से लगातार मुंबई में महिलाओं के साथ इस तरह की घटनाएं सामने आ रही हैं। हाल ही में मुंबई से सटे मीरा-भायंदर इलाके में सरस्वती वैद्य नाम की महिला की हत्या कर उसके लिव इन पार्टनर ने शव के कई टुकड़े कर उन्हें मिक्सर में पीस कर कूकर में उबाल कर सबूत मिटाने की कोशिश की थी। कुछ दिनों पहले मुंबई के ही एक गर्ल्स हॉस्टल में वहीं के एक वॉचमैन ने लड़की का रेप किया था। लड़की के अभिभाववकों का आरोप है कि लगातार शिकायत करने के बाद भी हॉस्टल प्रशासन ने लड़की को ऊपर के एक अलग-थलग पड़े कमरे में रखा था।

क्या प्रवेश शुक्ला के घर पर चलेगा बुलडोजर

नरोत्तम मिश्रा ने दिया दो टूक जवाब

सीधी, 5 जुलाई (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के सीधी जिले में आदिवासी समुदाय से ताल्लुक रखने वाले शख्स के पर पेशाब करने के मामले में सरकार हरकत में आ गई है। आरोपी प्रवेश शुक्ला की गिरफ्तारी के बाद अब सरकार एनएसए की कार्रवाई करने के साथ ही आरोपी के खिलाफ बुलडोजर एक्शन लेगी। मध्य प्रदेश के सीधी में एक आदिवासी शख़्स पर प्रवेश शुक्ला नाम के व्यक्ति ने बेहद निंदनीय कृत्य किया। उस पर पेशाब कर दिया। वीडियो वायरल होने के बाद कांग्रेस ने सरकार को जमकर घेरा। वहीं मुख्य मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस मामले का संज्ञान लेते हुए आरोपी पर कड़ी कार्रवाई करने की बात कही। आरोपी पर एनएसए लगाने को लेकर भी कहा गया। बता दें कि

आरोपी को रात के दो बजे गिरफ़्तार किया गया। गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि,ये बहुत ही निंदनीय कृत्य है। मुख्य मंत्री ने आदेश दिए थे कि इस मामले में एनएसए के तहत कार्यवाही की जाये और वही हो रही है।

जहां अतिक्रमण की जानकारी मिली वहां बुलडोज़र चलेगा

बुलडोज़र एक्शन पर नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि, जहां अतिक्रमण होगा वहां बुलडोज़र चलेगा। गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने एक बयान में कहा कि,अतिक्रमण के बारे में जानकारी मिली है। बुलडोज़र भी चलाया जाएगा। हाल ही में भोपाल में एक शख़्स को कुत्ता बनाया गया था उसके बाद महज़ 6 घंटे के भीतर बुलडोज़र की कार्यवाई हुई थी। आज भी उसी तरह की तस्वीर नज़र आएगी।

बीजेपी ने कहा- हमारा कार्यकर्ता नहीं

प्रवेश शुक्ला की बीजेपी सदस्यता पर गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि, हमारे वहां के विधायक का बयान आ गया है उन्होंने बता दिया है। ऐसी घटना क्यू हुई ? ये देखने में ही बहुत घृणित लग रहा है । इस मामले में कांग्रेस ने आरोप लगाया कि ये शख़्स बीजेपी का है। मगर गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा स्थानीय विधायक केदार शुक्ला कह चुके हैं कि उनका कोई लेना देना नहीं है। आरोपी प्रवेश शुक्ला की पत्नी बोलीं, 'गलत किया होगा तो सजा मिलनी चाहिए सीधी (मध्य प्रदेश) वायरल वीडियो मामले के आरोपी प्रवेश शुक्ला की पत्नी का कहना है मेरे पति ने अगर कुछ गलत किया है तो जो होना होगा वह होगा ही। अगर उन्होंने गलत किया है तो सजा मिलनी चाहिए। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन पर कोई दबाव डाल रहा है या पुलिस उन्हें परेशान कर रही है तो उन्होंने ऐसी किसी बात से साफ इनकार किया।

ईडी ने 429 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी मामले में

सेवा विकास सहकारी बैंक के पूर्व अध्यक्ष को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को कहा कि सेवा विकास सहकारी बैंक के पूर्व अध्यक्ष अमर साधुराम मूलचंदानी को धन शोधन निवारण अधिनियम के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया गया है। उन्हें एक विशेष पीएमएलए अदालत के समक्ष पेश किया गया जिसने उन्हें 7 जुलाई तक ईडी की हिरासत में भेज दिया। अधिकारी ने कहा कि यह गिरफ्तारी सेवा विकास सहकारी बैंक धोखाधड़ी मामले में चल रही जांच के सिलसिले में की गई है, जिसमें बैंक को 124 एनपीए ऋण खातों में 429 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इससे बैंक दिवालिया हो गया और हजारों छोटे जमाकर्ताओं को नुकसान हुआ। ईडी ने मूलचंदानी और अन्य निदेशकों, अधिकारियों और ऋण चूककर्ताओं के खिलाफ पुणे में दर्ज कई एफआईआर के आधार पर पीएमएलए जांच शुरू की। जांच से पता चला है कि मूलचंदानी बैंक को एक पारिवारिक कारोबार की तरह चला रहा था। उन्होंने बैंक में सार्वजनिक जमा को अपनी निजी जागीर माना और अपने पसंदीदा उधारकर्ताओं को मनमाने तरीके से, साख योग्यता और पर्याप्त संपार्श्विक प्रतिभूतियों की जांच किए बिना. अवैध रूप से ऋण स्वीकृत करने के लिए सभी विवेकपूर्ण बैंकिंग मानदंडों का उल्लंघन किया। अधिकारी ने कहा, उसने स्वीकृत ऋण राशि के 20 प्रतिशत कमीशन की दर से रिश्वत भी ली। ईडी ने कहा कि मूलचंदानी ने अपने परिवार के सदस्यों को बैंक में निदेशक के रूप में रखा था ताकि निदेशक मंडल में उनकी इच्छा और पसंद के अनुसार ऋण स्वीकृत करने के लिए उनके पास भारी बहुमत हो। इसके चलते 92 प्रतिशत से अधिक ऋण खाते एनपीए में बदल गए, जो अंततः बैंक के पतन का कारण बना। आरबीआई ने बैंक का लाइसेंस रद्द कर दिया है। इससे पहले इस मामले में अमर साधुराम मूलचंदानी की विभिन्न बेनामी संपत्तियों सहित 122। 35 करोड़ रुपये की संपत्ति अस्थायी रूप से कुर्क की गई थी।

नो इंग्लिश नो एडमिशन! लोरेटो कॉलेज के इस फैसले से मचा हड़कंप, मांगी माफी

कोलकाता, 5 जुलाई (एजेंसियां)। कलकत्ता यूनिवर्सिटी के लोरेटो कॉलेज के अंग्रेजी मीडियम में पढ़ाई नहीं करने पर एडमिशन नहीं देने वाले फैसले से हड़कंप मच गया, जिसके बाद कॉलेज ने माफी मांगी। कॉलेज के इस फैसले के बाद राज्य के कई वर्ग के लोगों ने सोशल मीडिया पर नाराजगी जाहिर की और प्रदर्शन शुरू हो गए, इस वजह से कॉलेज को अपने इस फैसले को वापस लेना पड़ा। पश्चिम बंगाल में स्नातक में प्रवेश लेने के लिए प्रक्रिया शनिवार (1 जुलाई) को शुरू हुई, जिसमें कैथोलिक संस्था ने ऑनलाइन घोषणा की थी कि बंगाली और हिंदी माध्यम स्कूलों के आवेदकों का स्वागत नहीं है। 2023-24 अंडर ग्रेजुएट के लिए सिलेक्ट किए गए बच्चों के साथ एक नोट में लिखा हुआ था कि स्थानीय माध्यम स्कूलों के उम्मीदवारों को प्रवेश के लिए कंसीडर नहीं किया गया, क्योंकि संस्थान में सभी निर्देश, परीक्षाएं और किताबें अंग्रेजी में हैं।

केरल में तेज बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त, तीन जिलों में 'रेड अलर्ट' जारी

तिरुवनंतपुरम, 5 जुलाई (एजेंसियां)। केरल के कई हिस्सों में लगातार तेज बारिश हुई, जिससे बड़े पैमाने पर पेड़ उखड़ गए, घरों को नुकसान पहुंचा और जलभराव हो गया। कोल्लम, अलाप्पुझा, त्रिशूर, कोट्टायम और एर्नाकुलम समेत कई जिलों में बड़े पेड़ उखड़ गए, जिससे कई लोग बाल-बाल बच गए। इन इलाकों में सोमवार रात से तेज बारिश हो रही है। राज्य के कई हिस्सों में पेड़ों के गिरने से बिजली के खंभों को हुए नुकसान के कारण बिजली गुल होने की खबर है। भारी बारिश और तेज हवाओं के कारण पेड़ों के गिरने से कई स्थानों पर घर क्षतिग्रस्त हो गए और व्यस्त कोल्लम-शेनकोट्टई मार्ग पर यातायात अवरुद्ध हो गया। हालांकि, सड़क पर गिरी लकड़ियों को हटाकर वाहनों की आवाजाही बहाल कर दी गई। भारी बारिश के कारण मध्य केरल की कई नदियों में जल स्तर बढ़ गया है, जिससे निचले इलाकों में रहने वाले लोगों के विस्थापित होने का खतरा पैदा हो गया है। पंबा नदी में जल स्तर बढ़ने के साथ ही पथनमथिट्टा जिले के कुरुम्बनमुझी में एक आदिवासी कॉलोनी के सैकड़ों परिवार फंस गए। मीनाचिल नदी भी उफान पर है, जिससे कोट्टायम जिले के कई इलाकों में रहने वाले लोग चिंतित हो गए हैं। बंदरगाह शहर कोच्चि में भारी बारिश के दौरान कई स्थानों पर जल भराव हो गया, जिसके चलते यात्रियों को परेशानी हुई। समुद्री उथल-पुथल और तेज हवाओं के बाद तटीय इलाकों को 'हाई अलर्ट' पर रखा गया है। विशाल लहरों और समुद्र के बढ़ते जल स्तर ने एर्नाकुलम जिले के नयारामबलम में तटीय निवासियों के बीच चिंता पैदा कर दी है। तिरुवनंतपुरम जिले के मुथलापोझी में कुछ मछुआरे उस समय बाल-बाल बच गए जब खराब मौसम के कारण उनकी नाव पलट गई। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने मंगलवार के लिए इडुक्की, कासरगोड और कन्नूर जिलों में "रेड अलर्ट" और बाकी 11 जिलों में "ऑरेंज अलर्ट" जारी किया है। भारी बारिश के चलते अधिकारियों ने कुछ जिलों के शैक्षणिक संस्थानों में छुट्टी घोषित कर दी और नियंत्रण कक्ष स्थापित कर दिए गए हैं। एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि दक्षिणी अलाप्पुझा में भारी बारिश की आशंका है, इसलिए जिला प्रशासन ने स्कूलों सहित सभी शैक्षणिक संस्थानों और कॉलेजों में छुट्टी घोषित कर दी है एहतियात के तौर पर उत्तरी कासरगोड जिले में कॉलेजों को छोड़कर सभी शैक्षणिक संस्थानों में छुट्टी घोषित कर दी गई। जिला प्रशासन ने भूस्खलन के खतरे को देखते हुए लोगों से ऊंचे स्थानों की सड़कों पर अनावश्यक यात्रा करने से बचने की अपील की है। कई जगहों पर जलभराव की सूचना को देखते हुए दो दोपहिया वाहन चालकों को राष्ट्रीय राजमार्गों से बचने की सलाह दी गई है। जिले के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि समस्या का जल्द से जल्द समाधान करने के निर्देश जारी किए गए हैं। एर्नाकुलम के जिला कलेक्टर के आधिकारिक फेसबुक पेज पर कहा गया है कि जिले में 'भारी बारिश' को देखते हुए सभी शैक्षणिक संस्थानों में छुट्टी घोषित कर दी गई है। बुधवार को जिले में जारी 'ऑरेंज अलर्ट' को देखते हुए एर्नाकुलम में खनन और भूविज्ञान विभाग ने सभी प्रकार के खनन और संबंधित कार्यों को रोकने का आदेश दिया। पथनमथिट्टा में बारिश के कारण किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए जिला कलेक्टरेट और तालुक कार्यालयों में विशेष नियंत्रण कक्ष शुरू किए गए हैं, जो 24 घंटे काम करेंगे। अधिकारियों ने बताया कि निकटवर्ती कोट्टायम जिले के सभी तालुकों में भी पूरी रात भारी बारिश हुई है। आसमान में बादल छाए हुए हैं और कई जगहों पर बारिश जारी है। मौसम विज्ञानियों के अनुसार, अगले पाच दिनों के दौरान कुछ क्षेत्र में हल्की से मध्यम और कुछ स्थानों पर भारी बारिश का अनुमान है। एक रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मंगलवार और बुधवार को केरल में विभिन्न स्थानों पर अत्यधिक भारी बारिश हो सकती है। दक्षिणी राज्य में भारी बारिश के चलते सोमवार को एक लड़की की मौत हो गई जिसके बाद मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने लोगों को नदियों के नजदीक और पहाड़ी क्षेत्रों में यात्रा न करने की सलाह दी है। रेड अलर्ट के दौरान 24 घंटे में 20 सेंटीमीटर तक और ऑरेंज अलर्ट में छह से 20 सेंटीमीटर बारिश की संभावना रहती है।

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल ने एसईसी के राजभवन नहीं आने पर उन्हें सीलबंद लिफाफा भेजा

कोलकाता, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी वी आनंद बोस ने राज्य निर्वाचन आयुक्त (एसईसी) राजीव सिन्हा के उनसे मुलाकात करने के लिए राजभवन नहीं आने के बाद सिन्हा को एक सीलबंद लिफाफा भेजा है। एक अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि सिन्हा ने तर्क दिया था कि वह चुनाव संबंधी कार्य में बहुत व्यस्त हैं और राज्यपाल से मिलने के लिए राजभवन नहीं आ सकेंगे। अधिकारी ने एजेंसी से कहा, 'राज्यपाल ने एसईसी को चुनाव संबंधी हिंसा की हालिया घटनाओं पर चर्चा करने के लिए राजभवन बुलाया था, लेकिन सिन्हा उनसे मिलने नहीं आए और उन्होंने कहा कि वह चुनाव संबंधी कार्य में व्यस्त हैं। इसके बाद बोस ने एसईसी को एक सीलबंद लिफाफा भेजा जिसमें संवेदनशील कागजात हैं। ' उन्होंने दस्तावेजों के विषय वस्तु के बारे में कोई जानकारी नहीं दी। सिन्हा से इस संबंध में बात करने के लिए कई बार फोन किया गया, लेकिन उनसे बात नहीं हो पाई। राज्यपाल ने दक्षिण 24 परगना जिले के कैनिंग, भांगर और बसंती तथा राज्य के उत्तरी हिस्से में स्थित दिनहाटा और सीताई में हिंसा प्रभावित इलाकों का दौरा किया था। राज्य में पिछले एक महीने में चुनावी हिंसा के कारण कई लोग हताहत हुए हैं। राज्य में आठ जुलाई को जिला परिषदों, पंचायत समितियों और ग्राम पंचायतों की लगभग 74,000 सीटों के लिए त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव होंगे।

'जवाबदेही से भागने के लिए पीएम और रेल मंत्री ने फैलाई झूठी थ्योरी'- बालासोर हादसे पर कांग्रेस ने उठाए सवाल

बालासोर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। ओडिशा के बालासोर में हुए रेल हादसे को लेकर जो रिपोर्ट सामने आई है, उसमें बताया गया है कि गलत सिग्नल सिस्टम के चलते ये भीषण हादसा हुआ। अब इस रिपोर्ट को लेकर विपक्ष ने मोदी सरकार को घेरना शुरू कर दिया है। टीएमसी के बाद अब कांग्रेस ने भी सवाल उठाए हैं। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि मोदी सरकार की गलत प्राथमिकताओं के चलते ये हादसा हुआ है। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री और रेल मंत्री ने अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने के लिए एक थ्योरी तैयार की थी, जो अब फेल हो चुकी है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने ट्विटर पर लिखा, ये साफ हो चुका है कि प्रधानमंत्री और रेल मंत्री की तरफ से पेश की गई थ्योरी जवाबदेही से बचने और हेडलाइन मैनेजमेंट के लिए किया गया। रेल सेफ्टी कमिश्नर ने अपनी जांच में बताया है कि संबंधित प्रक्रियाओं और प्रणालियों में गंभीर कमियों के कारण बालासोर ट्रेन दुर्घटना हुई। लेकिन आखिर सुन कौन रहा है? वंदे भारत ट्रेनों का उद्घाटन लगातार जार है। । । मोदी सरकार की गलत प्राथमिकताओं के चलते एक भीषण हादसा हो गया। जयराम रमेश ने एक अंग्रेजी न्यूजपेपर में छपे आर्टिकल का जिक्र करते हुए लिखा कि इसमें साफ तौर पर बताया गया है कि जिस ट्रिपल ट्रेन हादसे में करीब 300 लोगों की मौत और 100 से ज्यादा घायल हुए, उसकी जांच में क्या पाया गया है। इसके बाद जयराम रमेश ने अलग-अलग प्वाइंट में इसके कारणों को बताया है। रेलवे संरक्षा आयोग (सीआरएस) की उच्च स्तरीय जांच में पाया गया कि ''गलत सिग्नल' बालासोर में हुए भीषण रेल हादसे का मुख्य कारण बना।

जांच में सिग्नलिंग और दूरसंचार (एस ऐंड टी) विभाग में '' कई स्तर पर खामियों'' को रेखांकित किया गया है। रिपोर्ट में संकेत दिया गया है कि अगर खामियों से पहले अवगत कराया गया होता तो हादसे को टाला जा सकता था। रेलवे बोर्ड को सौंपी गई स्वतंत्र जांच रिपोर्ट में कहा गया है कि सिग्नलिंग कार्य में खामियों के बावजूद, एस एंड टी कर्मचारियों की तरफ से उपचारात्मक कार्रवाई की जा सकती थी, बशर्ते बाहानागा बाजार स्टेशन जहां पर हादसा हुआ था, के प्रबंधक ने दो समानांतर पटरियों को जोड़ने वाले स्विचों के ''बार-बार असामान्य व्यवहार'' की सूचना दी होती।

कुख्यात तस्कर कमल राणा का सहयोग करने वाले छह पुलिसकर्मी निलंबित, एसपी ने 24 घंटे में लिया एक्शन

नीमच, 5 जुलाई (एजेंसियां)। मध्यप्रदेश व राजस्थान में मादक पदार्थ की तस्करी का सिंडिकेट चलाने वाले 70 हजार के इनामी कुख्यात तस्कर कमल राणा को उसके चार साथियों के साथ जयपुर क्राइम ब्रांच ने शिर्डी से गिरफ्तार किया था। रिमांड के दौरान पूछताछ में उसने अपने सहयोगियों के नाम बताए। जिनके संरक्षण व सहयोग से वह नीमच जिले की सीमा में रहकर डोडाचूरा तस्करी का नेटवर्क संचालित कर रहा था। पूछताछ में खाकी की आड़ में तस्कर राणा को सहयोग करने वाले छह पुलिसकर्मी के नाम भी सामने आए थे। इनकी जानकारी क्राइम ब्रांच ने नीमच एसपी को भेजी गई थी। 24 घंटे में एसपी अमित तोलानी ने कड़ा एक्शन लेते हुए नीमच व जीरन थाने के छह पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया है।

दिल्ली-पंजाब के बाद अब हिमाचल में सियासी दरार आप नेता बोले- सच हो रही अरविंद केजरीवाल की बात

शिमला, 5 जुलाई (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व वाली सरकार में विधानसभा से पारित दो विधेयक कानून नहीं बन सके हैं। हिमाचल राजभवन ने एक विधेयक को अपने पास रखा है, जबकि दूसरे को दोबारा परीक्षण के लिए वापस भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने लोकतंत्र प्रहरी सम्मान विधेयक को मंजूरी नहीं दी है। वहीं, सुखाश्रय विधेयक को भी राज्य सरकार के पास कुछ बिंदुओं पर स्थिति स्पष्ट करने के लिए कहा है। हिमाचल प्रदेश मेल उपज रहे इस सियासी तकरार में आम आदमी पार्टी भी कूद गई है। आम आदमी पार्टी के नेता और दिल्ली से विधायक नरेश बालियान ने ट्वीट करते हुए लिखा- 'पहले ही अरविंद केजरीवाल ने कहा था कि दिल्ली तो बस शुरुआत है। पूरे देश में ये राज्यपाल के द्वारा सत्ता हथियाना चाहेंगे। अब अजय माखन क्या करोगे? यहां भी मत मदद करना अपने मुख्यमंत्री को, यहां मदद किया तो फिर दिल्ली में क्या जवाब दोगे? आप लोग इसी चक्कर में पांडिचेरी खो चुके हो। 'इससे पहले विपक्षी एकता की बैठक में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल इसी बात को लेकर नाराज हो गए थे कि कांग्रेस केंद्र सरकार की ओर से पारित अध्यादेश मामले में आम आदमी पार्टी का साथ नहीं दे रही है। बैठक से पहले केजरीवाल ने कहा था- 'केंद्र सरकार ने दिल्ली अध्यादेश के सहारे एक प्रयोग किया है। अगर वो इसमें सफल हो जाती है, तो फिर एक-एक कर सभी गैर-बीजेपी राज्यों के लिए समवर्ती सूची के तहत आने वाले विषयों पर अध्यादेश जारी कर राज्यों के अधिकार छीन लिए जाएंगे। इसी लिए सभी पार्टियां मिलकर इसे किसी हालत में संसद में पास न होने दें। ' बता दें कि मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने बजट सत्र के दौरान लोकतंत्र प्रहरी सम्मान निरसन विधेयक को पारित करने का प्रस्ताव किया था। भारतीय जनता पार्टी ने विधेयक निरसन को लेकर खूब हंगामा किया और विरोध में वॉकआउट कर दिया। इस बीच सत्तापक्ष ने ध्वनिमत से इस कानून विधेयक को पारित किया। इसके तहत पूर्व भाजपा सरकार ने आपातकाल के वक्त जेल में रहने वाले नेताओं की अलग-अलग दो श्रेणियों में 20 हजार रुपए और 12 हजार रुपए हर महीने सम्मान राशि के तौर पर देने का प्रावधान किया था। सुक्खू सरकार ने इसे राजनीति से जुड़ा हुआ बताते हुए खत्म करने का प्रस्ताव पेश किया। सत्तापक्ष कांग्रेस के कई विधायकों ने इसे आरएसएस और भाजपा के लोगों को फायदा देने वाला बताया था। सदन में भारी विरोध के बीच सरकार ने लोकतंत्र सम्मान प्रहरी निधि को खत्म करने का फैसला ले लिया।

स्वतंत्र वार्ता

गुरुवार, 6 जुलाई- 2023

ईरान को एससीओ का सदस्य बनने से भारत से नजदीकी और बढ़ेगी

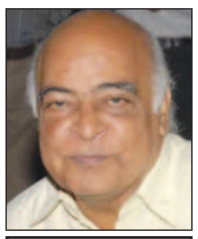

अशोक भाटिया

ईरान मंगलवार को शंघाई सहयोग संगठन का नया स्थायी सदस्य बन गया। एससीओ के एक ऑनलाइन शिखर सम्मेलन में यह घटनाक्रम हुआ जिसकी मेज़बानी भारत ने की। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रभावशाली समूह का पूर्ण सदस्य बनने पर ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी और वहां के लोगों को बधाई दी। प्रधानमंत्री मोदी ने इस मौके पर राष्ट्रपति रईसी और ईरान के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि हम बेलारूस की एससीओ सदस्यता के लिए मेमोरेंडम ऑफ ऑब्लिगेशन पर हस्ताक्षर करने का भी स्वागत करते हैं।" उन्होंने कहा कि अब एससीओ में शामिल होने के लिए अन्य देशों की रुचि इस संगठन के महत्व का प्रमाण है।

भारत के प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में हुए शिखर सम्मेलन में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, उनके रूसी समकक्ष व्लादिमीर पुतिन, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और समूह के अन्य नेता शामिल हुए। अपनी टिप्पणी में ईरान के राष्ट्रपति रईसी ने उम्मीद जताई की कि (एससीओ) में ईरान की उपस्थिति सामूहिक सुरक्षा और सतत विकास के साथ-साथ देशों के बीच एकता हासिल करने के लिए एक मंच प्रदान करेगी। शिखर सम्मेलन के समापन पर जारी एक घोषणा पत्र में कहा गया कि सदस्य देशों ने एक पूर्ण सदस्य राष्ट्र के रूप में (एससीओ) में इस्लामी गणराज्य ईरान के प्रवेश के ऐतिहासिक महत्व पर जोर दिया। घोषणा में कहा गया है कि उन्होंने (एससीओ) के सदस्य का दर्जा प्राप्त करने के लिए बेलारूस गणराज्य की ओर से मेमोरेंडम ऑफ ऑब्लिगेशन पर हस्ताक्षर करने के महत्व को भी रेखांकित किया।

ज्ञात हो कि एससीओ की स्थापना 2001 में शंघाई में एक शिखर सम्मेलन में रूस, चीन, किर्गिज गणराज्य, कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपतियों की ओर से की गई थी। वहीं वर्ष 2017 में भारत के साथ पाकिस्तान इसका स्थायी सदस्य बना। शंघाई शिखर सहयोग संगठन यानि एससीओ में अभी तक भारत, पाकिस्तान, चीन, रूस, उज्बेकिस्तान, तजाकिस्तान, किर्गिस्तान ही सदस्य थे मगर अब रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने ईरान को भी इसमें शामिल करा लिया है। इस प्रकार अब एससीओ के ईरान समेत कुल आठ सदस्य हो गए हैं।

ईरान को एससीओ का सदस्य बनाए जाने से पहले यह समझना जरूरी है कि यह संगठन है क्या और इसकी महत्ता कितनी अधिक है। आपको बता दें कि एससीओ शिखर की स्थापना वर्ष 2001 में रूस व चीन ने उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान और तजाकिस्तान जैसे देशों को साथ लेकर की थी। यह महत्वपूर्ण क्षेत्रीय प्रभावशाली और आर्थिक सुरक्षा ब्लॉक है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के एससीओ का सदस्य बनने के बाद पहली बार इसे सिक्योर नाम दिया। प्रधानमंत्री ने इसका अर्थ S-से सुरक्षा, E- से इकोनॉमिकल डेवलपमेंट, C- से कनेक्टिविटी, U- से यूनिटी (एकता), R- यानी क्षेत्रीय अखंडता के लिए सम्मान और संप्रभुता, E-से एनवायरमेंट यानी पर्यावरण संरक्षण। इस प्रकार पीएम मोदी ने एससीओ शिखर सम्मेलन का स्वरूप और परिभाषा ही बदल दिया। इससे रूस के राष्ट्रपति पुतिन समेत उज्बेकिस्तान, तजाकिस्तान और किर्गिस्तान जैसे देश भी पीएम मोदी के कायल हो गए। एससीओ अब पीएम मोदी के मंत्र के अनुसार बताए उद्देश्यों की पूर्ति के लिए काम कर रहा है।

अब सबसे पहला सवाल यह है कि ईरान को एससीओ का सदस्य बनाने का रूस ने प्रस्ताव क्यों रखा। आखिरकार पुतिन को ईरान के एससीओ का सदस्य बनने से क्या फायदा होने वाला था और ईरान को इस संगठन में शामिल होने से क्या लाभ होगा। दरअसल रूस इस दौरान यूक्रेन युद्ध के चलते पूरी दुनिया से अलग-थलग पड़ गया है। यूरोप व समस्त पश्चिमी देशों ने रूस पर कई तरह का प्रतिबंध लगा दिया है जिसका पालन में यूरोप व पश्चिमी देशों द्वारा किया जा रहा है। रूस की निजी सेना वैगनर समूह का विद्रोह भले ही बाद में ठंडा पड़ गया हो लेकिन इस घटना ने भी दुश्मन को मजबूत होने और पुतिन को कमजोर साबित करने का मौका दिया है। ऐसे में राष्ट्रपति पुतिन के पास एससीओ एकमात्र ऐसा अंतरराष्ट्रीय एशियाई संगठन है जिसके माध्यम से वह अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं। एससीओ का कुनबा जितना बढ़ेगा, पुतिन और रूस की ताकत भी उतनी ही बढ़ेगी। वजह साफ है कि एससीओ के सभी सदस्य देश रूस के परम मित्रों में हैं। भारत, चीन, पाकिस्तान, तजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान और अब ईरान के रूस से बहुत ही मधुर संबंध हैं। ऐसे में ये सभी देश यूक्रेन युद्ध के समय में भी प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में पुतिन के साथ खड़े रहे हैं। इसलिए अब ईरान के आने से पुतिन की ताकत और बढ़ी है।

एससीओ के माध्यम से राष्ट्रपति पुतिन ने पश्चिमी देशों को अपनी ताकत का एहसास कराया है। रूस द्वारा ईरान को एससीओ का सदस्य बनाए जाने से यूक्रेन और अमेरिका इस कदर बौखला गए हैं कि जिसकी कोई सीमा नहीं है। यूक्रेन की बौखलाहट का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जिस वक्त राष्ट्रपति पुतिन वीडियो क्रॉन्फ्रेंसिंग के जरिये एससीओ में शामिल हो रहे थे, उसी दौरान यूक्रेन ने रूस पर हमला कर दिया। यूक्रेन ने रूस की राजधानी मास्को पर कई ड्रोन बम बरसाए। हालांकि रूसी अधिकारियों के अनुसार यूक्रेन के ड्रोन हमलों को नाकाम कर दिया गया। वहीं अमेरिका के बौखलाहट की वजह भी साफ है। ईरान रूस का परम मित्र है और अमेरिका से इन दोनों ही देशों का 36 का आंकड़ा है। ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईशी और रूसी राष्ट्रपति पुतिन की दोस्ती जग जाहिर है। इतना ही नहीं ईरान यूक्रेन युद्ध में रूस की मदद हथियार और ड्रोन देकर भी कर रहा है। ईरान के पास काफी अत्याधुनिक हथियार और ड्रोन हैं। इससे अमेरिका और यूक्रेन घबराए हैं। ईरान ने अपने परमाणु कार्यक्रमों से भी अमेरिका को टेंशन दे रखा है। यूक्रेन युद्ध में ईरान एक मात्र ऐसा देश है जो रूस को खुलकर हथियारों की सप्लाई कर रहा है।

भारत की कूटनीति का यह सबसे स्वर्णिम दौर चल रहा है। पीएम मोदी के करिश्माई नेतृत्व का नतीजा है कि जो देश एक दूसरे के दुश्मन हैं, उन दोनों को ही भारत ने अपना दोस्त बना रखा है। यही हाल ईरान के साथ भी है। ईरान व इजराइल में भयंकर दुश्मनी है और ईरान व अमेरिका में भी 36 का आंकड़ा है। इसके बावजूद ये तीनों ही देश भारत के दोस्त हैं। ईरान के एससीओ का सदस्य बनने से रूस के साथ भारत की स्थिति भी और मजबूत होगी। डिफेंस क्षेत्र में ईरान की अत्याधुनिक तकनीकियों का भारत को फायदा होगा। ईरान का एससीओ का सदस्य बनने से भारत के साथ उसकी नजदीकी और बढ़ेगी। अभी दोनों देशों के संबंध सामान्य हैं लेकिन बहुत गहरे नहीं हैं। भारत को सबसे बड़ा फायदा चाबहार बंदरगाह से मिलने वाला है। यह भारत के लिए आर्थिक, सामरिक और व्यापारिक रूप से महत्वपूर्ण है। इसमें दो अलग-अलग बंदरगाह शाहिद कलंतरी और शाहिद बेहेश्टी हैं। इनमें से शाहिद बेहेश्टी का परिचालन एक भारतीय फर्म कर रही है। यह पोर्ट मध्य एशियाई देशों में संपर्क के लिए सीधा समुद्री मार्ग है।

आतंकवाद वैश्विक खतरा

वैश्विक शांति के लिए आज आतंकवाद ही सबसे बड़ा खतरा बन गया है। यदि विश्व को यह अनुमान है कि इससे केवल भारत ही परेशान है तो वह गलत है। इस समस्या से खुद आतंकवाद की शरणस्थली बना पाकिस्तान, अफगानिस्तान ही नहीं रूस तक प्रभावित हो रहा है। इसीलिए शंघाई सहयोग संगठन के मंच से प्रधानमंत्री ने एक बार फिर दोहराया कि आतंकवाद क्षेत्रीय ही नहीं बल्कि वैश्विक शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है। अब समय आ गया है जब इस चुनौती पर निर्णायक कार्रवाई किए जाने की जरूरत है। आतंकवाद के खिलाफ पूरी दुनिया के देशों को मिलकर लड़ाई लड़नी होगी। प्रधानमंत्री मोदी ने पाकिस्तान का नाम तो नहीं लिया, लेकिन उसकी तरफ इशारा करने में कोई कसर भी नहीं छोडी। सबसे खास तो यह कि उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की मौजूदगी में ये बातें कही। इसके पहले जब प्रधानमंत्री को अमेरिका के संयुक्त सदन में संबोधित करने का मौका मिला, तब भी उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ सामूहिक लड़ाई की जरूरत बताई थी। उस समय अमेरिका ने भी भारत का पुरजोर समर्थन किया था। इसके पहले भी विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों और संगठनों के मंचों से पीएम मोदी पाकिस्तान से प्रश्रय पा रहे आतंकवाद को खत्म करने पर बल देते आ रहे हैं। शंघाई सहयोग संगठन के मंच से आतंकवाद का मुद्दा उठाना इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें खुद पाकिस्तान शामिल है और उसको खुलकर समर्थन करने वाला चीन भी। जब भी संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान के किसी आतंकी या आतंकवादी संगठन पर प्रतिबंध लगाने की बात उठती है, तो चीन भारत के विरोध में टांग अडाने लगता है। मंगलवार को पीएम मोदी ने अपने संबोधन से पाकिस्तान के साथ-साथ चीन को भी जमकर धोया। मोदी ने साफ कहा कि आतंकवाद को लेकर किसी तरह का निजी स्वार्थ आड़े नहीं आना चाहिए। बता दें कि शंघाई सहयोग संगठन के देशों में दुनिया की करीब चालीस फीसद आबादी रहती है और दुनिया के कुल व्यापार का करीब चौबीस फीसद इन्हीं देशों के बीच होता है। इसलिए जब यह संगठन मिल कर काम करेंगे तो पश्चिमी देशों की अर्थव्यवस्था को बड़ी चुनौती मिलने लगेगी। लेकिन इसके लिए मुश्किल यह है कि इस संगठन के चीन और पाकिस्तान जैसे देश कोढ में खाज साबित हो रहे हैं। ये दोनों देश अनायास ही भारत के विरोध में उतर आते हैं। चीन अपनी विस्तारवादी नीति के तहत पाकिस्तान को अंधा समर्थन देता है, ताकि भारत को परेशान किया जा सके। पाकिस्तान अपनी अंदरूनी कमजोरियों को ढंकने के लिए भारत को दुश्मन के रूप में प्रचारित करता रहता है। वह अपने आतंकी संगठनों के जरिए सीमावर्ती इलाकों, खासकर जम्मू-कश्मीर, में शांति भंग करने के लिए कुत्सित प्रयास करता रहता है। इसलिए मौका मिलते ही पीएम मोदी ने स्पष्ट रूप से कहा कि कुछ देश सीमा पार आतंकवाद को अपनी नीतियों के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। आतंकवादियों को पनाह देने से भी गुरेज नहीं करते हैं। एससीओ को ऐसे देशों की आलोचना में कोई संकोच नहीं करना चाहिए। मगर चीन पर इसका कितना असर होगा, कहा नहीं जा सकता। छिपी बात नहीं है कि जिन देशों में आंतरिक संघर्ष अधिक है, वहां की आर्थिक गतिविधियां भी बुरी तरह प्रभावित होती हैं। इसलिए शंघाई सहयोग संगठन के देश सचमुच आर्थिक ताकत बनना चाहते हैं, तो उन्हें आतंक के नासूर से मुक्ति पानी ही होगी। लेकिन इसमें चीन सबसे बडा रोडा बना हुआ है। विश्व व्यापार संगठन पर हुए आतंकी हमले के बाद जब अमेरिका ने पूरी दुनिया के देशों को आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर युद्ध छेड़ने का आह्वान किया था, तब भी कई देशों को अपने निजी हित ऊपर नजर आने लगे थे। इस तरह आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त रूप से लड़ाई छिड़ ही नहीं पाई। जाहिर है जब तक चीन आतंकवाद के खिलाफ नहीं खड़ा होता, तब तक पाकिस्तान से आतंकवादी संगठनों का सफाया मुश्किल ही नहीं नामुमकिन बना रहेगा।

लगातार नए रिकॉर्ड स्थापित करते नीरज चोपड़ा

योगेश कुमार गोयल

मांसपेशियों में खिंचाव के कारण एक महीने से भी ज्यादा समय तक खेल से दूर रहे ओलंपिक चैंपियन भालाफैंक नीरज चोपड़ा ने पिछले दिनों डायमंड लीग के लुसाने चरण में 87.66 मीटर की दूरी के साथ लगातार दूसरी बार शीर्ष स्थान हासिल कर एक बार फिर इतिहास रच दिया है। जर्मनी के जूलियन वेबर 87.03 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ दूसरे जबकि चेक गणराज्य के जैकब बडलेज 86.13 मीटर के प्रयास के साथ तीसरे स्थान पर रहे। ग्रेनाडा के एंडरसन पीटर्स 82.23 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ पांचवें स्थान पर रहे। चोट के कारण नीरज पिछली तीन स्पर्धाओं में हिस्सा नहीं ले सके थे और डायमंड लीग के लुसाने चरण में भी वह अपने 90 मीटर के व्यक्तिगत लक्ष्य को हासिल करने से चूक गए। शीर्ष स्थान पर रहने के बावजूद उनका यह प्रयास उनके कैरियर के शीर्ष 10 प्रदर्शनों के बाहर था। हालांकि इस बारे में नीरज का कहना है कि वह 90 मीटर की बाधा पार कर सकते थे लेकिन उन पर इसका कोई दबाव नहीं था, अभी एशियाई खेल और विश्व चैंपियनशिप होनी हैं, इसलिए जिस दिन परिस्थितियां बनेंगी, 90 मीटर का थ्रो लग जाएगा, लुसाने के मौसम को देखते हुए प्रदर्शन अच्छा रहा। नीरज ने डीयमंड लीग में अपना पहला खिताब अगस्त 2022 में लुसाने चरण में ही जीता था और उसके बाद ज्यूरिख में 2022 के ग्रैंड फिनाले को जीतकर वह डायमंड लीग चैंपियन और यह उपलब्धि हासिल करने वाले इकलौते भारतीय खिलाड़ी बने थे। इस साल भी 5 मई को दोहा में अपने कैरियर के चौथे सर्वश्रेष्ठ 88.67 मीटर के थ्रो के साथ उन्होंने सत्र की शुरूआती डायमंड लीग जीती थी, जिसके बाद चोट के कारण वह किसी भी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सके थे। डायमंड लीग के फाइनल इवेंट से पहले 14 अलग-अलग मीट इवेंट होते हैं, जिनमें 16 खेल शामिल होते हैं। हर मीट में अलग-अलग खेल शामिल होते हैं और प्रत्येक में शीर्ष 8 खिलाड़ियों को पदक नहीं बल्कि अंक दिए जाते हैं। पहले स्थान पर रहने वाले खिलाड़ी को 8 अंक, दूसरे स्थान वाले को 7 अंक दिए जाते हैं। इसी प्रकार पहले से आठवें स्थान के खिलाड़ियों को अंक मिलते हैं। सभी मीट खत्म होने के बाद फील्ड इवेंट के शीर्ष 6, 100 से 800 मीटर के शीर्ष 8 और 500 मीटर तथा लांग डिस्टेंस इवेंट के शीर्ष 10 खिलाड़ियों को फाइनल में खेलने का मौका मिलता है, जिसमें विजेता का निर्णय होता है। नीरज का इवेंट 'जैवलिन थ्रो' तीन मीट में शामिल है। पहली मीट दोहा और दूसरी लुसाने में हुई है। नीरज दोनों मीट में पहले स्थान पर रहे हैं और वह शीर्ष पर हैं। यदि वह तीसरी मीट होने के बाद भी शीर्ष छह में शामिल रहते हैं तो वह यूजीन में डायमंड लीग फाइनल में हिस्सा लेंगे। फाइनल इवेंट जीतने वाले खिलाड़ी को डायमंड लीग की ट्रॉफी के साथ नकद इनाम दिया जाता है। पिछली बार यह खिताब जीतने पर नीरज को 8 लाख रुपये की इनामी राशि मिली थी। नीरज कहते हैं कि डायमंड लीग का आयोजन प्रतिवर्ष होता है और डायमंड लीग मीट या महाद्वीपीय टूर जैसी प्रतियोगिताओं में एथलीटों को शानदार अवसर मिलता है, जो उन्हें अच्छा करने का अवसर देती हैं। उनका मानना है कि खिलाड़ियों को केवल ओलंपिक, राष्ट्रमंडल खेल, एशियाई खेल, विश्व चैंपियनशिप जैसे खेल आयोजनों पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए, जिन्हें दो या चार साल के अंतराल पर खेला जाता है बल्कि डायमंड लीग मीट या महाद्वीपीय टूर जैसी प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा लेना चाहिए क्योंकि इन प्रतियोगिताओं में विश्वस्तरीय एथलीट हिस्सा लेते है, जिससे प्रमुख टूर्नामेंटों के लिए अच्छी तैयारी करने में बड़ी मदद मिलती है। उनके मुताबिक डायमंड लीग जैसे टूर्नामेंटों में अच्छा प्रदर्शन करने से भारतीय एथलेटिक्स को भी मदद मिलेगी।

नीरज की खास बात यह है कि उन्होंने अपने प्रदर्शन से खेल प्रेमियों को कभी निराश नहीं किया। वह पदक तो जीतते ही हैं, साथ ही आश्चर्यजनक निरंतरता के साथ नए रिकॉर्ड भी स्थापित करते हैं। जब भी वह अपने हाथ में जैवलिन उठाते हैं तो पूरे देश की सांसें थम जाती हैं। ओलंपिक हो या विश्व चैंपियनशिप अथवा ऐसी ही दूसरी प्रतियोगिताएं, भारतीय एथलीट नीरज चोपड़ा लगभग हर स्पर्धा में कमाल का प्रदर्शन करते नजर आए हैं। पिछले साल 8 सितम्बर की रात जब उन्होंने ज्यूरिख में डायमंड लीग जीती थी, तब उनकी उस शानदार उपलब्धि पर जाने-माने उद्योगपति आनंद महिंद्रा ने एक वीडियो शेयर करते हुए लिखा था कि नीरज का मतलब कोई रोक नहीं सकता है। नीरज का अब तक का सर्वश्रेष्ठ थ्रो 89.94 मीटर का है, जब वह 30 जून 2022 को स्वीडन में स्टॉकहोम डायमंड लीग में विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स के साथ दूसरे स्थान पर रहे थे।

यह जैवलिन थ्रो भारत में पुरुषों के राष्ट्रीय रिकॉर्ड और नीरज चोपड़ा के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ के रूप में दर्ज है। पिछले तीन राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी नीरज चोपड़ा के ही थे, जिनमें पावो नुरमी गेम्स 2022 में 89.30 मीटर, पटियाला में 2021 इंडियन ग्रैंड प्री 3 में 88.07 मीटर और जकार्ता में 2018 एशियाई खेल में 88.06 मीटर के थ्रो शामिल हैं। नीरज ने अब तक कुल 41 बार 85 मीटर थ्रो का आंकड़ा पार किया है।

नीरज ने जुलाई 2022 में विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी होने का तमगा हासिल करने के बाद 89.08 मीटर के अपने पहले ही थ्रो के साथ लुसाने डायमंड लीग 2022 जीती थी और तब डायमंड लीग जीतने वाले पहले भारतीय एथलीट बने थे। उसके बाद ज्यूरिख में डायमंड लीग में उन्होंने 89.63 मीटर की दूरी पर भाला फैंककर शीर्ष स्थान हासिल किया था, जो उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत स्कोर भी है। पिछले साल अमेरिका के ओरेगन में आयोजित विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत पदक जीतकर नीरज विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बने थे। विश्व चैंपियनशिप में भारत अब तक केवल दो पदक ही जीत सका है। पहली बार 2003 की विश्व चैंपियनशिप में लांग जंपर अंजू बॉबी जॉर्ज ने पेरिस में कांस्य पदक जीता था। उसके बाद 19 वर्षों से भारत विश्व चैंपियनशिप में पदक के लिए तरस रहा था और उस लंबे इंतजार को अपने स्वर्णिम प्रदर्शन से खत्म किया था नीरज चोपड़ा ने, जिन्होंने ओरेगन विश्व चैंपियनशिप में क्वालिफिकेशन में 88.39 मीटर के साथ फाइनल में जगह बनाई और पदक राउंड में 88.13 मीटर का सर्वश्रेष्ठ थ्रो करके रजत पदक जीतकर इतिहास रच डाला था। विश्व चैंपियनशिप के इतिहास में भारत का वह पहला रजत पदक था। उस चैंपियनशिप के फाइनल में तीन बार 90 मीटर के मार्क को पार करते हुए 90.54 मीटर की दूरी के साथ एंडरसन पीटर्स स्वर्ण पदक जीतकर विश्व चैंपियन बने थे।टोक्यो ओलंपिक में तो नीरज ने ऐसा इतिहास रच दिया था, जो उनसे पहले एथलेटिक्स में 121 वर्षों में कोई भी भारतीय एथलीट नहीं कर सका था।

एथलेटिक्स किसी भी ओलंपिक का सबसे प्रमुख आकर्षण होते हैं लेकिन 121 सालों में कोई भी भारतीय एथलीट ओलंपिक में पदक नहीं जीत सका था और 2021 में नीरज भारत के लिए ओलंपिक में एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बने थे। नीरज एथलेटिक्स में ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी होने के साथ ओलंपिक में व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण पदक हासिल करने वाले दूसरे खिलाड़ी भी बने थे।

चाचा बनाम भतीजा युद्ध से कांग्रेस को बड़ा झटका

राज सक्सेना

विगत रविवार और सोमवार को देश की देश की राजनीति को प्रभावित करने वाली दो बड़ी घटनाएं लगातार घटित होना यह संकेत देता है कि भारत की विपक्षी एकता में पहले से ही पड़ी दरारें अब और चौड़ी होकर सामने आने जा रही हैं। इन घटनाओं से विपक्षी एकता की सबसे बड़ी अलमबरदार और प्रणेता महाराष्ट्र की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और नीतीश के कमजोर कंधों पर रखकर विपक्षी एकता के नाम परभाजपा पर निशाना लगा रही राष्ट्रीय जनता दल की शक्ति में कमी तो आएगी ही, अन्य विपक्षी दलों पर पर दबाव बनाने की क्षमता में भी ह्रास होगा।

महाराष्ट्र संकट के बाद प्रस्तावित विपक्षी दलों की आगामी बैठक 17-18 जुलाई को बेंगलुरु में होने की जानकारी देते हुए कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने भले ही यह कहा हो कि महाराष्ट्र में जो कुछ हुआ या हो रहा है, उसका इस बैठक पर कोई असर नहीं पड़ेगा लेकिन यह तो संभव ही नहीं है कि विपक्षी दल शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में हुई फूट से प्रभावित न हों।शरद पवार केवल महा विकास आघाडी को दिशा देने का ही काम नहीं कर रहे थे बल्कि वह महाराष्ट्र की तर्ज पर राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी दलों में एकता की भी एक बड़ी कोशिश कर रहे थे।निश्चित रूप से वह उन नेताओं में प्रमुख थे जिन पर अन्य दलों के साथ कांग्रेसी विपक्षी एकता को मजबूत बनाने के लिए भरोसा कर रहे थे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में टूट के बाद न केवल शरद पवार राजनीतिक रूप से आवश्यकता से अधिक कमजोर हुए हैं बल्कि महा विकास आघाडी भी वास्तव में शरद पवार के भतीजे अजीत पवार के विद्रोह कर देने के कारण अंदर से लगभग टूट ही गयी है।वास्तव में यह महा विकास आघाडी के लिए एक इतना बड़ा आघात है जिसकी प्रतिपूर्ति संभव ही नहीं है।केवल इतना ही नहीं, इसे कांग्रेस के लिए भी महा आघात के रूप में लिया जा सकता है। अब उसे सारा ध्यान अपने विधायकों की घेराघारी में ही लगाना पड़ेगा। विपक्षी एकता दूसरी प्राथमिकता का रूप ले लेगी।

लोकसभा सीटों की दृष्टि से देश के दूसरे सबसे महत्वपूर्ण राज्य महाराष्ट्र में विपक्षी दलों के मोर्चे में बिखराव, भाजपा विरोधी दलों को एकजुट करने की मुहिम को अकल्पनीय झटका देने वाला है। भले ही राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में टूट के बाद कांग्रेस को अन्य विपक्षी दलों के साथ सौदेबाजी की क्षमता में बढ़ोतरी हुई लगती हो और वह उनकी इस पहल को कमजोर करने में भी समर्थ हो गई हो कि उसे कम से कम सीटों पर चुनाव लड़ना चाहिए लेकिन ऐसे दल गिनती के ही हैं जो उसे कुछ दे सकने की स्थिति में है, या हो सकते हैं।नीतीश कुमार जो विपक्षी एकता के बिहार में कांग्रेसके सबसे बड़े पैरोंकार है, को इसलिए ज्यादा कुछ देने की स्थिति में नहीं समझा जा सकता क्योंकि वे खुद प्रदेश में सबसे बड़ा दल नहीं हैबल्कि राष्ट्रीय जनता दल के दया भाव पर ही आश्रित है। सच तो यह है कि खुद अपराधभाव से ग्रसित नीतीश कुमार उसी दल पर आश्रित है जिसको कभी वे स्वयं भला-बुरा कहते रहे हैं।

विपक्षी एकता की मुहिम में शामिल अन्य नेताओं में से ममता बनर्जी यह नहीं चाहती रही है कि कांग्रेस बंगाल में अपनी जड़ें जमाने में कामयाब हो सके या इसकी कोशिश भी करे।उन्होंने तो स्पष्ट यह शर्त भी लगा दी है कि कांग्रेस से तभी बात की जा सकती है जब वह वामदलों से दूरी बनाए।यह शर्त शायद ही कांग्रेस को स्वीकार हो। दूसरी ओर समस्या यह भी है कि केरल में सत्तारूढ़ वाम दलों के नेता कांग्रेस से मेल मिलाप के लिए साफ़ तौर पर इच्छुक ही नहीं लगते क्योंकि वहां उनका मुकाबला उससे है ही नहीं।जो अन्य विपक्षी नेता पटना बैठक में शामिल हुए थे,वे भी अपने-अपने राज्यों में कांग्रेस को अहमियत देने के लिए तत्पर नहीं हैं,कांग्रेस की समस्या केवल इतनी ही नहीं है।वह विपक्षी दलों और साथ ही देश की जनता को आकर्षित करने के लिए कोई एक आकर्षक या बड़ा मुद्दा या विमर्श भी खड़ा कर पाने में भी सफल नहीं रही है। सोने पर सुहागा यह भी कि उसने समान नागरिक संहिता पर जो एकतरफारुख अपनाया हुआ है उससे उसके कई सहयोगी जिनमें उद्धव शिवसेना और अन्य कई विपक्षी दल भीसहमत नहीं दिख रहे हैं। दूसरी ओर सोमवार को रेलवे में नौकरी के बदले जमीन घोटाले में सीबीआई ने सोमवार को राउस एवेन्यू स्थित विशेष अदालत में दूसरा आरोपपत्र दाखिल कर दिया है।जिसमें पूर्व रेल मंत्री लालू यादव, बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव समेत 14 अन्य व्यक्तियों व संस्थाओं को आरोपित किया गया है।पहली बार तेजस्वी यादव को भी आरोपी बना दिया गया है।मामले में अगली सुनवाई 12 जुलाई को होगी। विशेष न्यायाधीश सीबीआई गीतांजलि गोयल के समक्ष प्रस्तुत आरोपपत्र में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के प्रावधानों के अतिरिक्त आपराधिक साजिश, धोखाधड़ी व अन्य संबंधित भारतीय दंड संहिता की धाराओं के अंतर्गत आरोप लगाए गए हैं। न्यायालय के समक्ष विशेष लोक अभियोजक अधिवक्ता ने बताया कि प्रारंभिक रिपोर्ट दाखिल होने तक आरोपियों की भूमिका स्पष्ट नहीं हो सकी थी। जांच में कुछ दस्तावेज और साक्ष्यों के आधार पर दूसरा आरोपपत्र दाखिल किया जा रहा है। सीबीआई ने यह भी कहा कि पूरा अपराध एक अलग कार्यप्रणाली के साथ किया गया है।पश्चिम मध्य रेलवे में निर्धारित मानदंडों का उल्लंघन करते हुए उम्मीदवारों को इस प्रकार नियुक्ति दी गई, जिसमें रेल मंत्री लालू यादव ने स्वयं रुचि ली।

हलका खिलाडी अजीत अगरकर

उस वक्त ऑस्ट्रेलिया के जेसन गिलेस्पी और ग्लेन मैकग्रा का दौर था। इन दोनों कंगारू गेंदबाजों की गेंदों का सामना करने से बड़े से बड़े दिग्गज बल्लेबाज कांपते थे। ये वक्त 2000 से पहले का वक्त था। इसी दौर में भारत की तरफ से 1 अप्रैल 1998 को एक दुबला-पतला सा खिलाड़ी वनडे इंटरनेशनल क्रिकेट में पदार्पण करता है। वो भी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ। इस दौर में ऑस्ट्रेलिया दुर्जेय मानी जाती थी। इस नए-नवेले भारतीय खिलाड़ी का नाम था अजीत अगरकर। इतना दुबला-पतला कि लोग कहते थे कि तेज हवा आएगी तो ये हवा में ही उड़ जाएगा। लेकिन इस खिलाड़ी ने करीब एक दशक के अपने करियर में विपक्षी खेमे के बल्लेबाजों की जमकर गिल्लियां उड़ाई।

2000 के पहले भारत की तरफ से 130 किलोमीटर प्रतिघंटा की स्पीड से गेंदें फेंकने वाला कोई गेंदबाज नहीं होता था। लेकिन अगरकर के बारे में चर्चे थे कि वह बहुत तेज गेंद फेंकते हैं। उस दौर में हम जैसे क्रेजी क्रिकेट फैंस भी इस गेंदबाज के बारे में जानकार खुश हुए जा रहे थे। उस जमाने में तो टीवी गांव में किसी-किसी घर में हुआ करता था। तो कमेंट्री हम रेडियो पर सुनते थे।इस मैच में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए अजय जडेजा की शतक की बदौलत 309 रनों का पहाड़ सा लक्ष्य खड़ा किया था। खैर, जब गेंदबाजी की बारी आई तो हमने रेडियो के कान चिपका लिए। कमेंटेटर ने जब अगरकर के बारे में बोलना शुरू किया तो हमारा सीना भी चौड़ा होता जा रहा था। वे अगरकर की तुलना ऑस्ट्रेलिया टीम के डेमियन फ्लेमिंग और माइकल कास्प्रोविच से कर रहे थे। अगरकर जब पहली गेंद करने आए तो कमेंटेटर ने काफी रोमांचित होते हुए कहा था कि अब भारत के सबसे तेज गेंदबाजों में शुमार ये युवा गेंदबाजी करेगा। पहली ही गेंद पटकी हुई और बल्लेबाज के कान के पास सनसनाती हुई निकली। इस मैच में अगरकर ने 5 ओवर में 31 रन देकर एडम गिलक्रिस्ट जैसे दिग्गज बल्लेबाज को आउट किया था। इसके बाद धीरे-धीरे अगरकर क्रिकेट के आसमान में छाते चले गए। वनडे में सबसे तेज 50 विकेट लेने वाले गेंदबाज का तमगा काफी वक्त तक उनके नाम रहा। अक्टूबर 1998 में ही उन्होंने जिम्बाब्वे के खिलाफ टेस्ट में पदार्पण किया था। हालांकि, उन्हें अंतरराष्ट्रीय टी-20 ज्यादा खेलने का मौका नहीं मिला। और एक साल में वह केवल 4 मैच ही खेल पाए।जब हम चर्चा करते थे, ये 'कंकाल' इतनी तेज गेंद कैसे फेंक लेता हैउन दिनों हम लोगों के बीच ये चर्चा का विषय होता था कि आखिर ये दुबला-पतला आदमी इतनी तेज गेंद कैसे फेंक सकता है। हम गांव में भी तेज गेंद फेंकने वालों को अगरकर कहकर ही पुकारने लगे। उस वक्त अखबारों में अगरकर की तेज गेंदबाजी को लेकर खूब खबरें छपती थीं और हम सभी चाव से उसे पढ़ते थे। अगरकर से पहले जवागल श्रीनाथ के चर्चे होते थे लेकिन अगरकर के आने के बाद उस दौर के बच्चों में अगरकर बनने की होड़ लग गई थी। कई ऐसे लोग भी थे जो ये भी कहते थे कि अगर यह गेंदबाज थोड़ा हेल्दी हो जाए और तेज गेंद फेंक सकता है। खैर ये तो मजाक वाली बात थी। आने वाले सालों में अगरकर ने क्रिकेट के मैदान पर जमकर राज किया।

सत्ता बनाम राष्ट्र

वीरेंद्र सिंह परिहार

3 जुलाई को मंत्रिपरिषद की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सहयोगियों से इस बात पर जोर दिया कि वह 2024 की बजाए 2047 पर ध्यान केंद्रित करें. प्रधानमंत्री की उक्त बात को लेकर कई सवाल खड़े होते हैं, 2024 में ही लोकसभा के चुनाव हैं, फिर भी मोदी के लिए 2047 ज्यादा महत्वपूर्ण है. उक्त संदर्भ में एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय कहां करते थे, राजनीति खुद के लिए या दल के लिए होने के बजाय देश के लिए होनी चाहिए.इंग्लैंड की भूतपूर्व प्रधानमंत्री मार्गरिटथैचर ने एक बार कहा था –राजनीतिज्ञों की दृष्टि में सत्ता होती है पर राजनेता की दृष्टि में आने वाली पीढ़ियां होती हैं. प्रधानमंत्री मोदी के उक्त कथन के निहितार्थ को इन्हीं संदर्भों में समझा जाना चाहिए. 2024 में तो सत्ता में आने का प्रश्न पैदा होता है, लेकिन जब 2047 की बात मोदी करते हैं तो उनके सामने पूरे देश को लेकर एक रोडमैप होता है. उनका सपना है कि 2047 तक भारत को पूरी तरह से एक शक्तिशाली, संपन्न एवं महान राष्ट्र तो बन ही जाना चाहिए, साथ ही उसे पुराने वैभव की ओर लौटाते हुए विश्वगुरु के आसन पर भी आसीन होना चाहिए. इसीलिए वह 2047 तक विकसित भारत की बात करते हैं, इसके तहत भारत का एक-एक गांव विकसित होगा.प्रधानमंत्री मोदी को यह अच्छी तरह पता है कि यह तभी संभव है, जब राजनीति देश के लिए हो, आने वाली पीढ़ियों के लिए हो. तभी तो वह कहते हैं कि 2047 तक यानी देश की स्वतंत्रता के ठीक 100 साल बाद भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है. इसके लिए वह बार-बार देश को लोकलुभावन योजनाओं को लेकर चेताते रहते हैं.

लोगों की याददाश्त में अच्छी तरह होगा कि 7-8 महीने पूर्व जब श्रीलंका में भयावह आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया था, तब भी प्रधानमंत्री मोदी ने देश की जनता को चेतावनी देते हुए यह कहा था कि शॉर्टकट राजनीति का नतीजा शॉर्टसर्किट होता है. उन्होंने यह भी कहा था कि शॉर्टकट राजनीति करने वालों को ना तो मेहनत ही करनी पड़ती है और ना ही इसके के बारे में सोचना ही पड़ता है.जर्मनी और जापान का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा था की द्वितीय विश्व युद्ध में दोनों देश बर्बाद हो गए थे लेकिन वह बहुत जल्दी ही संपन्न और महान राष्ट्रों की श्रेणी मेँखड़े हो गए. लेकिन देश की आजादी के बाद ही शॉर्टकट राजनीति के चलते देश तबाह हो।

कल से शुक्र-बुध की युति

बनेगा लक्ष्मी नारायण योग

3 राशिवालों को जमकर होगा धन लाभ

ज्योतिष के अनुसार, जब एक ही राशि में शुक्र और बुध की युति होती है तो लक्ष्मी नारायण योग बनता है। ऐसे में 25 जुलाई से सिंह राशि में शुक्र और बुध की युति होने जा रही है, जिससे यह लक्ष्मी नारायण योग बनेगा।

कब से कब तक है लक्ष्मी नारायण योग?

7 जुलाई को सुबह 04:28 बजे शुक्र ग्रह का सिंह राशि में गोचर होगा और यह 7 अगस्त तक रहेगा। वहीं बुध ग्रह 25 जुलाई दिन मंगलवार को सुबह 04:38 बजे सिंह राशि में गोचर करेगा, जो 1 अक्टूबर को रात 08:45 बजे तक इसमें विद्यमान रहेगा।

इस तरह से देखा जाए तो 25 जुलाई को सिंह राशि में बुध और शुक्र की युति होगी और यह 7 अगस्त तक रहेगी। ऐसे में लक्ष्मी नारायण योग 25 जुलाई से 7 अगस्त तक रहेगा। 7 अगस्त को सुबह 10:37 बजे शुक्र कन्या राशि में गोचर करेगा और यह लक्ष्मी नारायण योग खत्म हो जाएगा।

लक्ष्मी नारायण योग 2023 राशियों पर प्रभाव

मिथुनः लक्ष्मी नारायण योग मिथुन राशि के जातकों के लिए अत्यंत ही शुभ फलदायी साबित हो सकता है। इस योग के कारण आपको बड़े धन लाभ हो सकते हैं। इससे आपकी माली हालत में सुधार होगा और पुराने कर्ज से मुक्ति मिल सकती है। शुक्र और बुध के सकारात्मक प्रभाव से करियर में भी तरक्की के योग बनेंगे।

नौकरीपेशा लोगों के लिए 25 जुलाई से 7 अगस्त तक का समय अच्छा रहेगा। वर्कप्लेस पर आपके काम की प्रशंसा होगी और लोग आपसे प्रभावित भी होंगे। बिजनेस से जुड़े जातकों के लिए भी समय अनुकूल रहेगा।

कन्याः अपकी राशि के जातकों पर लक्ष्मी नारायण योग का सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इस दौरान आपकी आमदनी में अच्छी बढ़ोत्तरी हो सकती है। इसके कारण आपका आर्थिक पक्ष पहले से और बेहतर होगा। आप पर किस्मत मेहरबान रहेगी, इस वजह से बिजनेस में भी मुनाफे के अवसर मिलेंगे। आपको कोई शुभ समाचार मिल सकता है, जिससे पूरा परिवार खुश नजर आएगा। प्रॉपर्टी से जुड़े वाद-विवाद में आपको सफलता मिल सकती है। मामले का समाधान होने पर आपको बड़ा धन लाभ हो सकता है।

लक्ष्मी नारायण योग आपकी राशि के जातकों के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है। इस समय भाग्य के प्रबल होने से बिजनेस में काफी बढ़ोत्तरी होगी और मुनाफा भी अच्छा खासा होगा। नौकरीपेशा लोगों के आय में भी वृद्धि होगी। आमदनी बढ़ने से खर्च का तनाव कम होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश कर रहे हैं, उनको खुशखबर मिल सकती है। नई जॉब का प्रस्ताव मिल सकता है, जिससे मन खुश होगा। यदि आप अपने बिजनेस का विस्तार करने के लिए निवेश करना चाहते हैं तो समय ठीक है।

सावन में यह उपाय करने से शादी

रोगों से मुक्ति, धन की कामना जल्द होगी पूरी

सावन के महीने में अगर शिव भक्त सच्चे मन से उन्हें एक लोटा जल चढ़ा दे तो भगवान भोलेनाथ प्रसन्न होते हैं और उसकी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। महादेव को खुश करने के लिए सावन माह में एक लोटा जल और तीन बेलपत्र चढ़ाना काफी शुभ बताया गया है। सावन में केवल जल और बेलपत्र से ही भगवान शंकर प्रसन्न हो जाएंगे।

यदि आपके मन में कोई इच्छा है, मनोकामना है। जैसे आप विवाह की चाहत रखते हैं, धन कमाना चाहते हैं या रोगों से मुक्ति पाना चाहते हैं तो इसके लिए आप सावन माह में कंकड़ वाले शिव शंकर की आराधना करें। मध्य प्रदेश के सागर जिले के प्रसिद्ध देवालिया मंदिर के पुजारी और वृंदावन वाले संत आशीष शास्त्री जी महाराज बताते हैं कि अगर किसी व्यक्ति की शादी में कोई बाधा या अड़चन आ रही है अथवा विवाह होने में देरी हो रही है तो ऐसे लोगों को माता पार्वती के लिए सौभाग्य की सामग्री समर्पित करना चाहिए।

वहीं, अगर कोई व्यक्ति बीमारियों से घिरा हुआ है। उसके परिवार में कोई ना कोई बीमार बना रहता है और उपचार के बाद भी स्वस्थ नहीं हो पा रहा है तो वो भगवान शिव का दूध, दही, शक्कर, शहद, पंचामृत से अभिषेक करे। इसके अलावा, यदि कोई व्यक्ति पैसों की तंगी को लेकर परेशान है। वो मेहनत करता है फिर भी उसे पैसा दिखाई नहीं देता। वो धन की कामना करता है तो ऐसे लोग भगवान भोलेनाथ का गन्ने के रस से अभिषेक करें। भगवान शंकर को भोलेनाथ भी कहा गया है। सज्जन लोगों के लिए वो भोले हैं। महादेव छोटी सी सामग्री में प्रसन्न हो जाते हैं। जैसे जो चीज किसी के काम नहीं आती, वैसी चीजें उनके लिए समर्पित की जाती हैं। शिव जी को धतूरा, अकोउआ भांग, बेलपत्र, शमी समर्पित की जाती है। पंडित आशीष शास्त्री जी ने बताया कि पुरुषोत्तम मास होने की वजह से इस बार सावन का महीना 58 दिन तक रहेगा। इसमें आठ सोमवार आएंगे। प्रतिदिन यह आराधना करने से भक्तों की मनोकामना जरूर पूरी होगी।

हिंदू धार्मिक ग्रंथों में पेड़ पौधे और पशु पक्षियों को लेकर कई महत्वपूर्ण बातें पढ़ने को मिलती हैं। साथ ही प्रकृति को भी विशेष स्थान दिया गया है। इसके अलावा ज्योतिष शास्त्र में भी घर में मौजूद कई पशु, पक्षियों और सूक्ष्म जीवों को शुभ अशुभ से जोड़कर देखा जाता है। इसी कड़ी में आज के इस आर्टिकल में हम जानेंगे कनखजूरा से जुड़े शुभ अशुभ संकेतों के बारे में। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यदि सावन के महीने में आपको कनखजूरा दिखाई देता है तो उसका क्या अर्थ है?

कनखजूरा को लेकर ज्योतिष शास्त्र का मत

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सावन के महीने में बारिश होती है और इस मौसम में यदि आपको घर में कनखजूरा दिखाई देता है तो यह बेहद शुभ होता है। घर में कनखजूरा की उपस्थिति धरती पर समृद्धि और धन आगमन का प्रतीक है। इसके अलावा इसे देवताओं का आशीर्वाद भी माना जाता है। कनखजूरा को सौभाग्य का प्रतीक भी माना जाता है।

सावन माह में जीवित कनखजूरा देखना

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सावन के महीने में घर के अंदर कनखजूरा का दिखाना बेहद शुभ माना जाता है। जहां सावन विकास और आत्मनिरीक्षण का समय होता है वही कनखजूरा अग्नि तत्व से संबंधित कीड़ा माना जाता है। जो एक शक्तिशाली और शुभ शक्ति का प्रतीक माना जाता है। घर के अंदर चलता हुआ कनखजूरा दिखाई देना आपकी तरक्की, संतान प्राप्ति और घर में खुशहाली का प्रतीक माना जाता है। ये संकेत है घर में कुछ नया और अच्छा होने वाला है।

सावन माह में मृत कनखजूरा देखना

सावन के महीने में घर के अंदर मृत कनखजूरा देखना अशुभ माना जाता है। ये संकेत है आने वाले समय में आपको कई बाधाओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। ये संकेत है आने वाले समय में घर का कोई सदस्य बीमार हो सकता है। इस बात का ध्यान रखें कि मरे हुए कनखजूरा को भूलकर भी हाथों से ना छुएं।

घर के दरवाजे पर रखें पानी से भरा बर्तन

घर में सुख-समृद्धि बनी रहे, इसके लिए लोग क्या से क्या नहीं करते। लेकिन इसके बाद भी कुछ ना कुछ परेशानी बनी ही रहती है। हालांकि इन परेशानियों से निजात पाने के तरीके वास्तुशास्त्र में उपलब्ध हैं। वास्तुशास्त्र के मुताबिक घर के मुख्य द्वार पर पानी से भरा बर्तन रखने से घर में सुख-समृद्धि का वास होता है और नकारात्मक शक्तियां नष्ट होती हैं। माना जाता है कि घर के बाहर पानी से भरा बर्तन रखने वाला व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करता है। आइए ज्योतिषाचार्य पंडित ऋषिकांत मिश्रा से जानते हैं इन उपायों को करने से जीवन में होने वाले प्रभाव के बारे में।

नकारात्मक ऊर्जा का होगा नाश

पानी को वैज्ञानिक ही नहीं, अपितु वास्तु शास्त्र में भी अहम माना गया है। वास्तु शास्त्र के मुताबिक, पानी को ऐसा स्रोत माना जाता है जो घर की नकारात्मक ऊर्जाओं को नष्ट करने में मदद करता है। इसके लिए घर के मुख्य द्वार पर पानी से भरा बर्तन रखने की सलाह दी जाती है। ऐसा करने से बुरी शक्ति को मुख्य द्वार के भीतर आने से रोकता है और घर के लोगों को दुर्भाग्य से बचाता है। इसके अलावा यह आपके जीवन को कई अन्य समस्याओं से बचाने में मदद कर सकता है। यह आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए फायदेमंद हो सकता है।

वातावरण शुभ बनाने में करे मदद

वातावरण को शुभ बनाने के लिए आप घर के मुख्य द्वार पर पानी से भरा बर्तन रख सकते हैं। यह घर आने वाले मेहमानों के स्वागत के लिए भी एक अच्छा तरीका हो सकता है। घर में प्रवेश करते समय पानी का कटोरा मेहमानों के लिए एक अच्छा दृश्य प्रस्तुत करता है और यह आतिथ्य का प्रतीक होता है।

पानी से भरा बर्तन रखने के नियम

1. बर्तन ऐसी सामग्री से बना होना चाहिए जो वास्तु शास्त्र के अनुकूल हो जैसे तांबा या पीतल।

2. नियमित रूप से बर्तन का पानी बदला जाना चाहिए और कटोरे को भी साफ अच्छ से साफ करें।

3. घर के दरवाजे पर पानी का बर्तन रखने लिए किसी वास्तु विशेषज्ञ से उचित स्थान का चयन कराएं।

4. बर्तन को किसी मेज या चौकी पर रखना ज्यादा उचित होगा, ताकि मेहमानों को आसानी से दिखाई दे।

5. घर के दरवाजे पर पानी का बर्तन रखने से पहले ध्यान रखें कि सीधी धूप या गर्मी के पास रखने से बचें।

निष्कलंक महादेव की दिलचस्प कहानी

दर्शन मात्र से हो जाते हैं पाप दूर

गुजरात के भावनगर में कोलियाक तट से 3 किलोमीटर अंदर अरब सागर में स्थित है निष्कलंक महादेव का प्राचीन मंदिर। इस मंदिर की कहानी बहुत ही अजीब है। यहां के चमत्कारों के बारे में सभी लोग जानते हैं। इस मंदिर तक जाना भी थोड़ा मुश्किल है। सावन श्रावण मास में यहां के दर्शन करना बहुत ही शुभ माना जाता है।

निष्कलंक महादेव मंदिर की खासियतः-

प्रतिदिन अरब सागर की लहरें यहां के शिवलिंग का जलाभिषेक करती है।

ज्वारभाटा जब शांत हो जाता है तब लोग पैदल चलकर इस मंदिर में दर्शन करने के लिए आते हैं।

ज्वार के समय सिर्फ मंदिर का ध्वज ही नजर आता है।

प्रत्येक अमावस के दिन इस मंदिर में भक्तों की विशेष भीड़ रहती है।

पांडवों ने यहां अपने पापों से मुक्ति पाई थी इसीलिए इसे निष्कलंक महादेव मंदिर कहते हैं।

मान्यता है कि यदि किसी परिजन की चिता कि राख शिवलिंग पर लगाकार जल में प्रवाहित कर दें तो उसको मोक्ष मिलता है।

मंदिर में भगवान शिव को राख, दूध, दही और नारियल चढ़ाए जाते हैं।

भादवे महीने की अमावस को यहां पर मेला भरता है जिसे भाद्रवीकहा जाता है।

मेला भावनगर के महाराजा के वंशजों के द्वारा मंदिर की पताका फहराने से शुरू होता है।

यही पताका मंदिर पर अगले एक साल तक लहराती रहती है।

मान्यता है कि कभी भी इस पताका को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है।

यहां तक की 2001 के विनाशकारी भूकंप में भी नहीं जब यहां 50,000 लोग मारे गए थे।

निष्कलंक महादेव मंदिर की कहानीः-

कहते हैं कि यह मंदिर महाभारतकालीन है और जब युद्ध के बाद पांडवों को अपने ही कुल के लोगों को मारने का पछतावा था और वे इस पाप से छुटकारा पाना चाहते थे तब वे श्रीकृष्ण के पास गए। श्रीकृष्ण द्वारिका में रहते थे। श्रीकृष्ण ने उन्हें एक काली गाय और एक काला झंडा दिया और कहा कि तुम यह झंडा लेकर गाय के पीछे-पीछे चलना। जब झंडा और गाय दोनों सफेद हो जाए तो समझना की पाप से छुटकारा मिल गया। जहां यह चमत्कार हो वहीं पर शिव की तपस्या करना।

कई दिनों तक चलने के बाद पांडव इस समुद्र के पास पहुंचे और झंडा और गाय दोनों सफेद हो गया।

तब उन्होंने वहां तपस्या की और भगवान शिव को प्रसन्न किया।

पांचों पांडवों को शिवजी ने शिवलिंग रूप में अलग अलग दर्शन दिए।

वही पांचों शिवलिंग आज तक यहां विद्यमान हैं।

इस गांव में इंसानों के साथ सांप भी रहते हैं

घर बनाते समय सांपों के लिए भी बनाते हैं बिल

हम सभी जानते हैं कि भारत में सांपों और हिंदू देवताओं, विशेषकर भगवान शिव का बहुत पुराना संबंध रहा है। हर साल, नाग पंचमी त्योहार के दौरान कई भक्त आशीर्वाद प्राप्त करने की आशा में सांपों का पूजन करते हैं और उन्हें दूध चढ़ाते हैं। हालाँकि यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि ₹शेतपाल नामक एक विशिष्ट गाँव है, जो महाराष्ट्र के पुणे से लगभग 200 किमी दूर सोलापुर जिले में स्थित है। इस गांव में लोग सांपों के साथ रहते हैं। यहां न केवल सांपों की पूजा की जाती है, बल्कि लोग उन्हें अपने घरों में रहने देते हैं।

सांप नहीं पहुंचाते नुकसान- शेतपाल एक ऐसा गांव है जहां सांपों की आवाजाही पर कोई भी व्यक्ति भयभित नहीं होता है। दिलचस्प बात यह है कि इस गांव में सांप 2600 से अधिक निवासियों में से किसी को भी नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। दरअसल हर घर में कोबरा (सांप) का स्वागत भी किया जाता है। नतीजा यह है कि यहां के लोगों को सांपों से कोई डर नहीं है और सांप यहां के निवासियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते हैं।

नया घर बनाते समय कोने में छोड़ते देते हैं खोखली जगह

शेतपाल के लोगों को इन जहरीले जीवों के साथ रहने में कोई दिक्कत नहीं है। वास्तव में यह जानना आश्चर्यजनक है कि स्थानीय निवासियों ने कोबरा सांपों के अस्थायी निवास के लिए अपने घरों के भीतर एक विशिष्ट क्षेत्र निर्धारित किया है। जब भी कोई ग्रामीण नया घर बनाता है, तो वे एक कोने में एक खाली जगह बनाना सुनिश्चित करते हैं जहां सांप प्रवेश कर सकें। इस बात की जानकारी अभी तक प्राप्त नहीं हुई है की सांपों के साथ रहने की परंपरा की शुरुआत कब और कैसे हुई।

सांपों के साथ खेलते है बच्चे- इस गांव के लोग सांपों को पालतू जानवर के रूप में देखते हैं और वे उन्हें अपने बच्चों के साथ स्कूल भी लाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि बच्चे सांपों से नहीं डरते क्योंकि वे निडर होकर उनके साथ रहकर बड़े हुए हैं। आप सोच रहे होंगे कि क्या ये सांप कभी बच्चों को काटते हैं लेकिन ये सांप बच्चों को बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुंचाते।

480 करोड़ में बिके 'जवान' और 'डंकी' के नॉन-थिएट्रिकल राइट्स

रिलीज से पहले ही बनाया रिकॉर्ड, बन सकती है सबसे बड़ी फीचर फिल्म डील

इस साल की शुरुआत में 'पठान' जैसी ब्लॉकबस्टर देकर शाहरुख खान ने बॉक्स ऑफिस के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। अब साल के सेकंड हाफ में वो 'जवान' लेकर आ रहे हैं। वहीं इस साल के अंत तक उनकी फिल्म 'डंकी' भी रिलीज हो सकती है।

सुनने में आया है कि शाहरुख की इन दोनों अपकमिंग फिल्मों के नॉन-थिएट्रिकल राइट्स 480 करोड़ रुपए में बेचे गए हैं।

'जवान' के 250 और 'डंकी' के 230 करोड़ में बिके राइट्स

एक रिपोर्ट के मुताबिक 480 करोड़ रुपए में इन दोनों फिल्मों के नॉन-थिएट्रिकल राइट्स बेचकर शाहरुख ने पहले ही रिकॉर्ड बना दिया है। यह डील फिल्म के सैटेलाइट, डिजिटल और म्यूजिक राइट्स के लिए हुई है। जहां 'जवान' के राइट्स 250 करोड़ तो वहीं 'डंकी' के राइट्स 230 करोड़ में बेचे गए हैं।

कुछ और डील पर भी जारी है चर्चा

वहीं रिपोर्ट में कहा गया है कि दोनों फिल्मों के बीच नाम मात्र का अंतर है और इसकी वजह 'जवान' का तमिल और तेलुगु में डब होना है। जहां 'जवान' के राइट्स सभी भाषाओं में बिके हैं वहीं 'डंकी' के राइट्स सिर्फ हिंदी में। फिल्म से जुड़ी कुछ और नॉन-थिएट्रिकल डील पर भी चर्चा जारी है।

बन सकती है सबसे बड़ी फीचर फिल्म डील

माना जा रहा है कि यह डील 500 करोड़ के आसपास जाकर लॉक होगी। अगर ऐसा होता है तो यह अभी तक की सबसे बड़ी फीचर फिल्म डील होगी। दोनों ही फिल्में शाहरुख खान के बैनर, रेड चिलीज एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी हैं।

7 दिन बाद रिलीज होगा ट्रेलर

फिल्म का थिएट्रिकल ट्रेलर 7 दिन बाद यानी 12 जुलाई को रिलीज होने जा रही हॉलीवुड फिल्म 'मिशन इंपॉसिबल 7' के साथ रिलीज होगा। एटली निर्देशित यह फिल्म 7 सितंबर को रिलीज होगी जिसमें शाहरुख डबल रोल में नजर आएंगे। वहीं 'डंकी' में शाहरुख तापसी पन्नू के अपोजिट होंगे।

फिट एंड फाइन नजर आए शाहरुख

इसी बीच शाहरुख खान बुधवार सुबह अमेरिका से मुंबई लौट आए हैं। खबर थी कि वो वहां फिल्म की शूटिंग के दौरान घायल हो गए थे। शाहरुख के चोटिल होने की खबर सुनकर उनके फैंस भी काफी परेशान थे। हालांकि, एयरपोर्ट से सामने आईं तस्वीरों और वीडियोज में एक्टर फिट एंड फाइन नजर आ रहे हैं। ऐसे में शाहरुख के चोटिल होने की खबरों को अफवाह माना जा रहा है।

मैगजीन के कवर पर नजर आईं रेखा

बताया क्यों बनाई फिल्मों से दूरी, बोलीं- खुशी है की अपने फैसले खुद ले सकती हूं

रेखा हाल ही में मैगजीन के अरेबिया एडिशन के कवर पर आईं। वेटरन एक्टर रेखा ने मैगजीन से बात करते हुए बताया कि वो लगभग एक दशक से फिल्मों से दूर क्यों हैं। रेखा ने 2014 के बाद से कोई फिल्म साइन नहीं की है। हालांकि, रेखा लगातार अवॉर्ड फंक्शन और बॉलीवुड पार्टियों में शामिल होती रहती हैं। फिल्मों से दूरी बनाने की वजह के बारे में रेखा ने कहा कि ये फैसला उन्होंने अपने लिए लिया है और वो खुश हैं कि उन्हें अपने मन मुताबिक फैसले लेने की आजादी है।

रेखा ने कहा- मैं खुशकिस्मत हूं कि मेरे पास किसी भी फैसले को लेकर हां या ना कहने की आजादी है। उन्होंने कहा कि वो फिल्मों में काम नहीं कर रही हैं इसके बाद भी उनकी पर्सनालिटी से सिनेमा कभी अलग नहीं होता। उन्होंने कहा- ये तो आप पर निर्भर करता है कि आप सिनेमा को मुझसे अलग देखते हैं या मुझसे जुड़ा हुआ ही पाते हैं।

एक्टिंग की यादों की मदद से अब भी

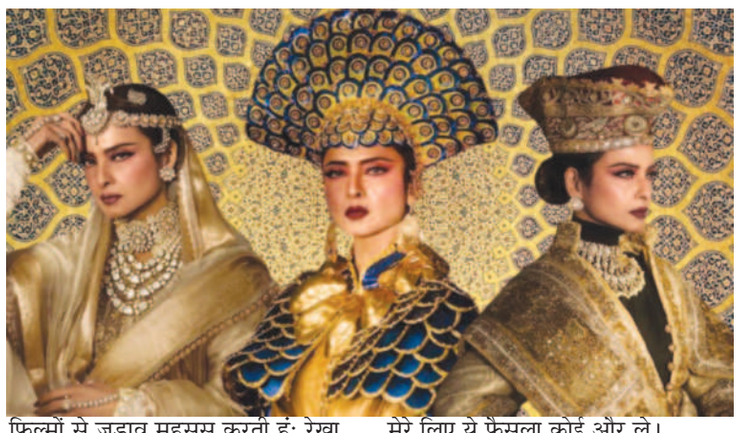

फिल्मों से जुड़ाव महसूस करती हूं: रेखा

उन्होंने आगे कहा कि उनके पास उनके एक्टिंग करियर के पुराने दिनों की कई खूबसूरत यादें हैं। इन यादों की मदद से अब भी फिल्मों में जुड़े रहने का एहसास उनके मन में बना हुआ है। रेखा ने ये भी कहा कि सही समय पर सही प्रोजेक्ट उन्हें खुद-ब-खुद ढूंढ ही लेगा। उन्होंने कहा- मैं खुद ये तय करना पसंद करती हूं कि मैं इस वक्त यहां मौजूद रहूं। मुझे ये पसंद नहीं कि मेरे लिए ये फैसला कोई और ले।

एक बार प्यार का रिश्ता जुड़ जाए तो वो परमानेंट होता है: रेखा

बातचीत के दौरान रेखा से ये भी पूछा गया कि क्या उन्हें ऐसा लगता है कि रिलेशनशिप में आने के कुछ दिनों बाद प्यार कम हो जाता है ? इस पर रेखा ने कहा कि उनका मानना है कि एक बार प्यार का रिश्ता जुड़ जाए तो उनके लिए वो परमानेंट हो जाता है। उन्होंने कहा- कभी-कभी हम चाहते हैं कि हमें और प्यार मिले और कभी-कभी हमारे लिए ये काफी होता है। रेखा ने कहा कि ये बात मेरे काम करने के तरीके पर भी लागू होती है।

सीखने की ललक ही है असली खूबसूरती : रेखा

रेखा ने कहा- मुझे बचपन में ही आर्ट और ब्यूटी की वैल्यू समझ में आ गई थी। मैंने हमेशा ये कोशिश की इस खूबसूरती को बरकरार रख सकूं। एक्टर्स के लिए ज्यादा से ज्यादा सीखने की इच्छा और खुले मन से अपने आस-पास की पॉजिटिविटी को अपने अंदर समा लेने की कोशिश करना ही असली खूबसूरती है। मुझे इसी चीज से आगे बढ़ने की इंस्पिरेशन मिलती है। आखिर में रेखा ने ये भी कहा कि उन्हें आज भी हर दिन ऐसा लगता है कि वो इंडस्ट्री में न्यूकमर जैसी ही हैं। उन्होंने कहा कि वो उन लोगों पर भरोसा करती हैं जो काम को लेकर कमिटटेड रहते हैं। आखिरी बार रेखा 2014 की फिल्म सुपर नानी में दिखाई दी थीं। इसके बाद उन्होंने धर्मेंद्र, सनी देओल और बॉबी देओल की फिल्म यमला पगला दीवाना में स्पेशल अपीयरेंस दिया था।

कभी शादी के बारे में न सोचने वाली विद्या बालन ने तलाकशुदा आदमी से क्यों बांधा रिश्ता?

बॉलीवुड में अपनी एक्टिंग से लोहा मनवाने वाली एक्ट्रेस विद्या बालन ने इंडस्ट्री में एक से बढ़कर एक फिल्में दी हैं. एक्ट्रेस अपने पर्सनल लाइफ के बारे में जल्दी बात नहीं करती हैं लेकिन उन्होंने एक इंटरव्यू में अपनी लव स्टोरी के बारे में बात की हैं. उन्होंने अपने पति सिद्धार्थ रॉय कपूर के साथ रिश्ते को लेकर खुलासा किया है. उन्हें कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि कोई उनके साथ शादी कर सकता है. विद्या बालन ने बताया कि उनकी पहली मुलाकात कैसे हुई. अपने पति के साथ लव स्टोरी के बारे में बताया कि कैसे उनकी पहली मुलाकात हुई.

एक्ट्रेस विद्या बालन बताती हैं कि वह कभी शादी नहीं करना चाहती थी. मैंने खुद को कभी ऐसा इमेजिन ही नहीं कि कोई मुझसे शादी करेगा. इसके साथ ही उन्होंने खुलासा किया कि पहली बॉलीवुड फिल्म परिणीता के समय मैं 26 साल की थी और 30 साल कि उम्र तक मैं बहुत सफलता देख ली थी, जिसे मैं किसी के साथ शेयर करना चाहती थी.

सिद्धार्थ से मिलने के बाद मिली नई जिंदगी

लाइफ में ऐसे मोड़ के बाद विद्या ने स्वीकार लिया की ये एक एक्सपीरियंस था और प्यार में निराश होने के बाद उन्होंने फैसला किया कि वह किसी भी सीरियस बात पर ध्यान नहीं देंगी और सिर्फ मौज-मस्ती करेंगी. विद्या बालन जब पहली बार सिद्धार्थ रॉय कपूर से मिली तो उन्होंने बताया कि वो मुझे गुड लुकिंग मैन दिखे और मुझे लगा कि ये पहली नज़र की वासना थी लेकिन समय के साथ मुझमें चेंजेस आने लगे. विद्या सिद्धार्थ के बारे में बताती हैं कि वो बहुत प्राइवेट और ऑथेंटिक पर्सन हैं. उन्होंने ही रिश्ते को लेकर पहला कदम उठाया था.

प्यार, रोमांस और इमोशन से भरपूर है वरुण- जान्हवी कपूर की फिल्म बवाल

वरुण धवन और जान्हवी कपूर की रोमांटिक ड्रामा फिल्म बवाल का टीजर रिलीज हो गया है। नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी इस फिल्म में रोमांस, ड्रामा, इमोशन सब कुछ है। टीजर की शुरुआत में जान्हवी और वरुण के एक-दूसरे से मिलने और फिर परेशान होने और एक-दूसरे को अलविदा कहते हुए नजर आते हैं। वीडियो में जान्हवी की आवाज सुनाई दे रही है,जिसमें वह कहती हैं, 'मैंने अपने रिश्ते को समझने में इतना वक्त लगा दिया, जब समझा तो खोने का वक्त आ चुका था।'

कब रिलीज होगी फिल्म

'बवाल' 21 जुलाई को सिनेमाघरों में नहीं बल्कि ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज की जाएगी। ये पहला मौका है जब वरुण धवन और जान्हवी कपूर किसी फिल्म में एक साथ नजर आएंगे। 'बवाल' को साजिद नाडियाडवाला ने प्रोड्यूस किया है। टीजर सामने आते ही फैंस फिल्म को लेकर काफी एक्साइटेड हो गए हैं।

सेल्फी लेने आए फैन का कपिल शर्मा ने उड़ाया मजाक : कहा- तुम्हारे फोन का कैमरा नहीं चल रहा; यूजर्स ने घमंडी कहकर किया ट्रोल

कपिल शर्मा को मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया। वह अमेरिका के लिए रवाना हुए हैं। एयरपोर्ट का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें कपिल अपने एक प्रशंसक के मोबाइल कैमरे का मजाक उड़ाते हुए दिखाई दे रहे हैं। उनका ये व्यवहार यूजर्स को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा, अब कपिल को सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल किया जा रहा है। वीडियो में कपिल अल ब्लैक आउटफिट में नजर आ रहे हैं। वह जैसे ही एयरपोर्ट पर पहुंचे, कॉमेडियन को एयरपोर्ट पर प्रशंसकों से घिरा हुआ देखा जा

सकता है। इसी बीच एक फैन कॉमेडियन के साथ सेल्फी लेने लगा लेकिन उसका कैमरा काम नहीं कर रहा था। कपिल ने तुरंत हंसते हुए कहा, 'तुम्हारा कैमरा तो चल नहीं रहा है' और निकल गए।

उनका यह कमेंट फैंस को पसंद नहीं आया और लोगों ने उनकी इस हरकत को अपमानजनक बताया है।

फैंस ने किए ऐसे कमेंट

वीडियो सामने आते ही यूजर्स ने इस पर लगातार रिएक्शन दे रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट करते हुए लिखा,' तो 1 मिनट रुक जाते उसका कैमरा चलने तक। आज आप जो भी फैंस की वजह से ही हो।' दूसरे यूजर ने लिखा, 'कपिल में एटीट्यूड आ गया है।' तीसरे यूजर ने लिखा, 'गरीब लोग है साहब क्या करे Iphone का बजट नही है'। उनमें से एक ने टिप्पणी करते हुए उन्हें घमंडी बताया है।

सीरीज तांडव के मेकर्स सुप्रीम कोर्ट पहुंचे एफआईआर को एक जगह ट्रांसफर करने की अपील

वेब सीरीज 'तांडव' के मेकर्स की याचिका पर आज सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। मेकर्स ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की है कि उनके खिलाफ जितने भी एफआईआर दर्ज हैं, उसे एक जगह ट्रांसफर किया जाए।

जनवरी 2021 में ये सीरीज अमेजन प्राइम पर स्ट्रीम होनी शुरू हुई थी। हालांकि इसके स्ट्रीम होते ही विवाद शुरू हो गया। मेकर्स पर हिंदू भावनाओं को ठेस पहुंचाने और प्रधानमंत्री के पद की गरिमा को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगा।

यूपी,एमपी और महाराष्ट्र सहित देश के कई हिस्सों में मेकर्स के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुए। प्रोड्यूसर हिमांशु कृष्ण मेहरा, अमेजन प्राइम इंडिया की हेड अपर्णा पुरोहित और एक्टर मोहम्मद जीशान अय्यूब ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका डाली थी। अब कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई अगस्त में रखी है।

कोर्ट ने कहा- सभी एफआईआर की मौजूदा स्थिति बताएं

जस्टिस गवई ने सभी एफआईआर की मौजूदा स्थिति पर

हिंदू भावनाओं को ठेस पहुंचाने का लगा था आरोप

एक रिपोर्ट मांगी है। जस्टिस गवई के मुताबिक, जब तक उन्हें पता नहीं चलेगा कि ये एफआईआर कहां-कहां दर्ज हैं, वे इसके बारे में कुछ भी फैसला नहीं सुना सकते।

उन्होंने इसके लिए दो हफ्ते तक का समय दिया लेकिन तांडव के मेकर्स को रिप्रजेंट कर रहे वकील ने अगस्त के पहले हफ्ते तक का समय मांगा है। कोर्ट ने उनकी मांग को मानते हुए सुनवाई की अगली डेट अगस्त के पहले हफ्ते में रखी है।

दरअसल तांडव के मेकर्स चाहते हैं कि उनके खिलाफ दर्ज सारे एफआईआर एक जगह मुंबई ट्रांसफर किए जाएं। इससे उन्हें हर जगह मौजूदगी दर्ज कराने से नौबत मिल जाएगी।

क्यों हुआ विवाद? यहां समझिए

ये सीरीज 15 जनवरी 2021 को रिलीज हुई थी। इसके पहले ही एपिसोड में आपत्तिजनक सीन थे। पहले एपिसोड के 17वें मिनट में हिंदू देवी-देवताओं का रोल कर रहे किरदारों को अजीब ढंग से अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल करते हुए दिखाया गया है।

एक सीन में मोहम्मद जीशान अय्यूब शिव की तरह गेटअप में थे और एक स्पीच बोल रहे थे। इस सीन पर कॉन्ट्रोवर्सी हुई थी।

इसी तरह पहले एपिसोड के 22वें मिनट में जातिगत झगड़ों को उकसाने के लिए कुछ आपत्तिजनक टिप्पणी सुनने को मिली। इसके अलावा प्रधानमंत्री के पद पर बैठे आदमी को गाली देते और शराब पीते दिखाया गया है। इन्हीं सब दृश्यों को लेकर विवाद हुआ था।

उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में तांडव के मेकर्स के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुए थे। सिर्फ उत्तर प्रदेश में तीन एफआईआर (लखनऊ, शाहजहांपुर और ग्रेटर नोएडा) में दर्ज हुए थे। इस मामले में सूचना और प्रसारण मंत्रालय भी सक्रिय हुआ था। मामला इतना बढ़ गया था कि सीरीज के लीड एक्टर सैफ अली खान के घर के बाहर सुरक्षा बल भी तैनात करने पड़े थे।

सामंथा रुथ प्रभु करियर से लेने वाली हैं लंबा ब्रेक, बीमारी बनी करियर में अड़चन

सामंथा रुथ प्रभु अभी चर्चा का विषय बनी हुई हैं.फिल्म इंडस्ट्री के गलियारों में एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु लेकर खबर गूंज रही है. जानकारी के मुताबिक बीते दिन खबर आई थी कि साउथ सुपरस्टार थलापति विजय एक्टिंग से 3 साल का ब्रेक ले रहे हैं. वहीं इसी से मिलती जुलती खबर आई है कि स्क्ट्रेस्स सामंथा प्रभु भी जल्द ही इंडस्ट्री से ब्रेक लेने वाली हैं. इस ब्रेक के पीछे उनकी पर्सनल वजह है हालांकि कुछ ही समय पहले सामंथा रुथ प्रभु का नागा चैतन्य से तलाक हुआ था, जिसके बाद एक्ट्रेस काफी टूट गई थी. वहीं इस खबर को सुनने के बाद उनके फैंस के मन में तरह तरह के सवाल भी उठ रहे हैं.

इंडस्ट्री से लम्बे समय का लेंगी ब्रेक

एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु को लेकर सभी जानते हैं कि पिछले साल उन्होंने कई सारी परेशानियों से गुजरने के बाद अपनी कड़ी मेहनत से अपने सारे प्रोजेक्ट्स पुरे किए. जानकारी के मुताबिक बताया जा रहा है कि एक्ट्रेस करीब एक साल तक इंडस्ट्री से दूरी बना रही हैं. उन्होंने एक साल तक किसी भी फिल्म या वेब सीरीज को साइन नहीं करने का मन बनाया है.

एडवांस पेमेंट किया वापस

सामंथा बीते एक साल से अपनी पर्सनल प्रॉब्लम के साथ हेल्थ इश्यू से जूझ रही हैं. इन सब चीजों से जूझने के बाद भी सामंथा अपने काम से पीछे नहीं हट रही थीं. वह अपने सारे असाइनमेंट पूरे कर रही थीं. एक रिपोर्ट के मुताबिक सामंथा अब करीब एक साल का ब्रेक लेने वाली हैं. जिसमें वह अपनी हेल्थ का खास ध्यान रखेंगी. साथ ही मायोसिटिस का इलाज भी करवाएंगी. रिपोर्ट के मुताबिक सामंथा का कोई भी नई बॉलीवुड या साउथ की फिल्म साइन करने का प्लान नहीं है. इतना ही नहीं जिन प्रोजेक्ट्स पर वह खुशी के बाद काम करने वाली थीं उनकी एडवांस पेमेंट भी उन्होंने प्रोड्यूसर्स को लौटा दी है.

सामंथा प्रभु की वर्क फ्रंट

एक्ट्रेस के वर्क फ्रंट की बात करें तो एक्टर वरुण धवन के साथ सिटाडेल इंडिया का लास्ट शेड्यूल कम्प्लीट करने के बाद विजय देवकोंडा के साथ 'कुशी' की शूटिंग में फिलहाल व्यस्त चल रही हैं.ऐसा कहा जा रहा है कि इस फिल्म के पूरा होते ही वो लंबे समय के लिए ब्रेक पर चली जाएंगी. सामंथा रुथ प्रभु काफी शानदार अदाकारा हैं और उन्होने कई भाषाओं में काम किया है. सामंथा प्रभु ने अपने तलाक के बाद खुद को संभालते हुए फिल्म 'पुष्पा' के आइटम सॉन्ग में अपने जलवे बिखेरी थी, लेकिन इंडस्ट्री से ब्रेक लेने की खबर के बाद अब देखना ये है कि सामंथा प्रभु 'पुष्पा 2' के किसी आइटम सॉन्ग में नजर आती हैं या नहीं.

बालों का टेक्सचर बेहतर करने के लिए अपनाएं ये घरेलू उपाय

बालों के टेक्सचर से यह पता चल सकता है कि आपके बाल हेल्दी और मजबूत हैं या नहीं। धूल-मिट्टी, प्रदूषण आदि की वजहों से बालों में मौजूद पोषण प्रभावित होता है, जिससे हेयर प्रॉब्लम शुरू हो जाती हैं। इसी दौरान बालों का टेक्सचर भी बदल जाता है। बालों के टेक्सचर से यह भी अंदाजा लगाया जा सकता है कि आपको हेयर फॉल है या नहीं। अगर आप अपने बालों के टेक्सचर को बेहतर करना चाहते हैं, तो इसके लिए आप कई तरह के घरेलू उपायों को आजमा सकते हैं।

प्याज का रस

हेयर फॉल प्रॉब्लम हो या बाल बेहद पतले हों। ऐसी स्थिति में घरेलू उपचार के तौर पर कई लोग प्याज का रस सिर पर लगाते हैं। इस उपाय का उपाय सालों से हो रहा है। प्याज के रस में सल्फर होता है, जो बालों को स्वस्थ रखने में मदद करता है। इसे अलावा, सल्फर की मदद से बालों को मजबूती मिलती है, बालों की इलास्टिसिटी बढ़ती है और रूखे तथा बेजान बाल रिपेयर होते हैं। यही नहीं, प्याज के रस से स्कैल्प के पोर्स को पोषण मिलता है, जिससे बालों की हेयर ग्रोथ बेहतर होती है और बालों के टेक्सचर में भी सुधार आता है। प्याज का रस बालों में लगाने के लिए आपको एक से दो चम्मच प्याज का रस चाहिए। इसे सीधे अपने स्कैल्प पर अप्लाई करें और कुछ देर के बाद लिए मसाज करें। इस प्रक्रिया को रात को सोने से पहले दोहराएं और प्याज के रस को रात भर बालों में लगा रहने दें। सुबह उठरक हेयर वॉश कर लें।

नारियल तेल

नारियल तेल के इस्तेमाल से बाल मॉइस्चराइज होते हैं और बालों की प्राकृतिक रूप से कंडीशनिंग भी होती है। इसके अलावा, नारियल तेल के उपयोग से स्प्लिट एंड खत्म होते हैं, बालों का टूटना रुकता। इस तरह बालों का टेक्सचर भी बेहतर हो जाता है। हालांकि, बालों के टेक्सचर को बेहतर करना चाहते हैं, तो इसके लिए नारियल तेल को अलग तरह से उपयोग कर सकते हैं। नारियल तेल को हल्का-सा गुनगुना कर लें। अब इस तेल से बालों की मसाज करें। करीब 10 से 15 मिनट तक मसाज करने के बाद बालों को एक से डेढ़ घंटे के लिए यूं ही छोड़ दें। इसके बाद माइल्ड शैंपू से हेयर वॉश कर लें। ऐसा सप्ताह में कम से कम दो बार जरूर करें।

आंवला का तेल

आंवले के तेल से भी बालों के टेक्सचर को बेहतर किया जा सकता है। असल में आंवले के तेल में विटामिन-सी होता है। यह एक तरह का एंटीऑक्सीडेंट है, जो कि बालों को मजबूती देता है और बालों को सफेद होने से रोकता है। इस तरह, देखा जाए, तो अगर आपके बाल कम उम्र में सफेद हो रहे हैं या फिर ड्राईनेस की वजह से बालों का टेक्सचर बदल रहा है, तो आप आंवले के तेल अप्लाई कर सकते हैं। रात को सोने से पहले दो चम्मच आंवले के तेल से बालों की मसाज करें। ध्यान रहे, तेल स्कैल्प में अच्छी तरह लगना चाहिए। अगली सुबह शैंपू से हेयर वॉश कर लें। आप चाहें, तो हेयर वॉश करने से एक घंटे पहले आंवले के तेल से मसजा कर सकते हैं।

एसेंशियल ऑयल

सामान्य तेलों की ही तरह बालों के टेक्सचर में सुधार के लिए आप एसेंशियल ऑयल जैसे रोजमेरी या लैवेंडर ऑयल का इस्तेमाल कर सकते हैं। अगर हम लैवेंडर एसेंशियल ऑयल की बात करें, तो इसे लगाने से बालों का वॉल्यूम बढ़ता है, हेयर फॉल कम होता है, स्प्लिट एंड घटते हैं और हेयर ग्रोथ भी बेहतर होती है। इसके अलावा, लैवेंडर ऑयल से बालों का टेक्सचर भी बेहतर होता है। लैवेंडर ऑयल को बालों में अप्लाई करने से पहले इसे नारियल तेल में थोड़ी-सी मात्रा में मिक्स कर लें। इसके बाद, इसे बालों में लगाएं। कुछ देर के लिए तेल लगे रहने दें। अब, माइल्ड शैंपू से हेयर वॉश कर लें।

अकेलापन डायबिटीज के रोगियों के लिए जानलेवा

इससे हार्ट से जुड़ी बीमारियों का खतरा 26% बढ़ा

अकेलापन किसी के लिए भी अच्छा नहीं है। लेकिन, डायबिटीज के रोगियों के लिए यह जानलेवा हो सकता है। टुलेन के शोधकर्ताओं ने पाया है कि डायबिटीज के रोगियों में हृदय रोग के लिए खराब आहार, धूम्रपान, व्यायाम की कमी या डिप्रेशन की तुलना में अकेलापन बड़ा खतरा हो सकता है।

यूरोपियन हार्ट जर्नल में प्रकाशित उनके अध्ययन में 37 से 73 साल की आयु के डायबिटीज से पीड़ित 18,500 लोगों का अध्ययन किया गया। इनमें किसी को भी हृदय रोग नहीं था। दस साल में इनमें से लगभग 3200 लोगों में हृदय रोग विकसित हो गया था।

अकेलेपन से टाइप 2 डायबिटीज होने की संभावना बढ़ सकती है

शोधकर्ताओं ने पाया कि जिन रोगियों में अकेलेपन का स्कोर ज्यादा था, उनमें हृदय रोग विकसित होने का खतरा 26% ज्यादा था। वहीं, अध्ययन में ये भी पाया गया कि अकेलेपन के बिना सामाजिक अलगाव किसी भी हृदय संबंधी समस्याओं से जुड़ा नहीं था।

डायबिटीज के रोगियों में पहले से ही हृदय रोग विकसित होने का खतरा बढ़ गया है। पहले भी

डायबिटीज मेडिकल जर्नल डायबेटोलोजिया में प्रकाशित अध्ययन में पाया गया था कि अकेलेपन से व्यक्ति में टाइप 2 डायबिटीज विकसित होने की संभावना भी बढ़ सकती है।

अमेरिका के सर्जन जनरल विवेक मूर्ति ने एक रिपोर्ट में कहा था कि सामाजिक जुड़ाव की कमी का मानव स्वास्थ्य पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है, जैसा एक दिन में 15 सिगरेट पीने से पड़ता है।

हृदय को स्वस्थ रखने के लिए गुणवत्तापूर्ण संबंध जरूरी

डायबिटीज से पीड़ित लोगों को हृदय स्वस्थ रखने के लिए सामाजिक गतिविधियों की संख्या के बजाय गुणवत्तापूर्ण संबंधों को प्राथमिकता देनी चाहिए। इनके अकेलेपन का मूल्यांकन लगातार किया जाना चाहिए, ताकि जरूरत पड़ने पर इन्हें मानसिक स्वास्थ्य

लो बीपी है तो रहें सावधान हो सकता है खतरनाक

हाई बीपी की तरह ही लो बीपी भी काफी खतरनाक होता है। आजकल भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में बीपी या ब्लडप्रेशर की शिकायत होना आम बात बन गई है। आपको बता दें कि यदि आपका बीपी भी लंबे वक्त तक सामान्य लेवल से कम रहने लगे तो आपको तुरंत सतर्क होने की आवश्यकता है, क्योंकि बीपी कम होने या लो बीपी होने पर रक्त हमारे शरीर के अंगों में ठीक से नहीं पहुंच पाता है।

अतः ऐसे में चक्कर आना, आंखों में अंधेरा होना, हाथ पैर ठंडे पड़ना, कुछ देर के लिए बेहोशी आना तथा लेटते समय, खड़े होने और बैठने में ब्लड प्रेशर के स्तर में बदलाव होना, ये सभी निम्न रक्तचाप के लक्षण हैं। इतना ही नहीं इसके अलावा भी आपको हार्ट अटैक या स्ट्रोक जैसी और भी कई गंभीर समस्याएं हो सकती हैं।

यहां ध्यान रखने योग्य यह बात हैं कि स्वस्थ लोगों में बीपी का लेवल 120/80 mmHg अथवा इसके आस-पास होना जरूरी होता है। यदि मान लीजिए कि आपका बीपी 90/60 mmHg से कम है तो यह लो बीपी ही माना जाता है। अतः लो बीपी के रोगियों को चाहिए कि वे तुरंत चिकित्सक से उचित सलाह लेकर अपने खानपान में बदलाव करें और जरूरी मेडिसिन की सहायता से अपने बीपी को कंट्रोल करने की कोशिश करें।

लो बीपी की समस्या को कम करने के लिए घरेलू उपाय

टमाटर के रस में थोड़ी-सी काली मिर्च और नमक डालकर पिएं। इससे कुछ ही समय में निम्न रक्तचाप में लाभ होगा।

लो बीपी को सामान्य बनाए

रखने में प्रतिदिन सुबह-शाम चुकंदर रस का सेवन काफी फायदेमंद साबित होता है। एक सप्ताह में ब्लड प्रेशर में सुधार होता है।

छाछ में नमक, भुना हुआ जीरा और हींग मिलाकर, इसका सेवन करते रहने से भी ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है।

दालचीनी के पाउडर को प्रतिदिन गर्म पानी के साथ लेने से भी आपको इस समस्या में लाभ मिल सकता है, इसके लिए सुबह-शाम यह प्रयोग करें।

50 ग्राम देशी चने व 10 ग्राम किशमिश को रात में 100 ग्राम पानी में किसी भी कांच के बर्तन में रख दें। सुबह चनों को किशमिश के साथ अच्छी तरह से चबा-चबाकर खाएं और पानी को पी लें। केवल किशमिश का प्रयोग भी कर सकते हैं।

गाजर के 200 ग्राम रस में पालक का 50 कम ब्लडप्रेशर में गाजर भी आपके लिए फायदेमंद हो सकती है। इसके लिए लगभग 200 ग्राम गाजर के रस में एक चौथाई पालक का रस मिलकाकर पिएं। यह आपके लिए बेहद लाभदायक सिद्ध होगा ।

इन सभी के अलावा अदरक के छोटे-छोटे करके, उनमें नींबू का रस और सेंधा नमक मिलाकर रख दें। अब इसे प्रतिदिन भोजन से पहले थोड़ी-थोड़ी मात्रा में खाते रहें। दिनभर में 3 से 4 बार भी इसका सेवन आप कर सकते हैं। ऐसा करने से लो-बीपी या रक्तचाप की समस्या कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाएगी।

लो-बीपी के कारण अगर चक्कर आने की शिकायत हो, आंवले के रस में शहद मिलाकर खाने से बहुत जल्दी राहत मिलती है। आंवले का मुरब्बा भी ब्लडप्रेशर के रोगियों के लिए एक बेहतर विकल्प है।

खजूर को दूध में उबालकर पीने से भी निम्न रक्तचात की समस्या में लाभ होता है। आप खजूर खाकर भी दूध पी सकते हैं।

अदरक के छोटे-छोटे करके, उनमें नींबू का रस और सेंधा नमक मिलाकर रख दें। अब इसे प्रतिदिन भोजन से पहले थोड़ी-थोड़ी मात्रा में खाते रहें। दिनभर में 3 से 4 बार भी इसका सेवन आप कर सकते हैं। ऐसा करने से रक्तचाप की समस्या कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाएगी।

उपरोक्त उपायों के साथ-साथ निम्न रक्तचाप के रोगियों को पोषक तत्वों से भरपूर भोजन करने के अलावा पैदल चलना और व्यायाम करना चाहिए, यह उनके लिए बेहद लाभदायक सिद्ध होगा।

शरीर के लिए आखिर क्यों जरूरी है विटामिन एच?

शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए विटामिन्स और मिनरल्स जरूरत पड़ती है. ये हमारे शरीर को अंदर से मजबूत बनाते हैं. वैसे तो हमारा शरीर कई सारे विटामिन्स और मिनरल्स की उत्पत्ति खुद ही कर लेता है, लेकिन जिनका उत्पादन शरीर नहीं कर पाता है उनकी पूर्ति हमें बाहर से करनी पड़ती है. शरीर के लिए सभी तरह के विटामिन की जरूरत पड़ती है, इन्हीं में से एक है विटामिन एच, जिसे साइंस की भाषा में बायोटीन के नाम से जाना जाता है और विटामिन की तरह ये भी हमारे शरीर के लिए बेहद जरूरी होता है.

बायोटिन पानी में घुलनशील होता है. ये त्वचा, बालों, आंखों और लिवर के लिए अच्छा स्त्रोत माना जाता है. साथ ही, यह तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) को भी ठीक से काम करने में मदद करता है.

विटामिन एच के फायदे-

मेटाबॉलिज्म को रखता है सही-

वैसे तो विटामिन एच कई चीजों के लिए अच्छा होता है , लेकिन इसे मुख्य रूप से मेटाबॉलिज्म को ठीक करने के लिए जरूरी माना जाता है. विटामिन एच फैट, प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट का अच्छी तरह से उपयोग करता है. ऐसे में यदि आप मेटाबॉलिज्म बूस्ट करना चाहते हैं तो अपनी थाली में विटामिन एच को जोड़ें.

दिल को रखता है हेल्दी-

दिल के लिए भी विटामिन एच को अच्छा माना जाता है. आहार में इसे लेने से इसे रक्त प्रवाह उत्तेजित होता है. विटामिन एच को लेने से हृदय की समस्याओं से बचा जा सकता है. इसके साथ ही ये गुड कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाने और बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है.

इम्यूनिटी बढ़ाए-

इम्यूनिटी को बूस्ट करने में विटामिन एच काफी काम आता है. यदि ऐपको शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाना है तो अपने डाइट में विटामिन ए को शामिल करें.

ब्लड शुगर कम करे-

विटामिन एच शरीर में रक्त शर्करा का स्तर कंट्रोल में करता है. विटामिन एच शरीर में इंसुलिन के उत्पादन को बढ़ाने में मदद करता है. इसलिए डायबिटीज रोगियों के लिए विटामिन एच अच्छा माना जाता है.

त्वचा और बालों के लिए अच्छा-

विटामिन एच को त्वचा और बालों के लिए अच्छा स्त्रोत माना जाता है. ये इन्हें पोषण देता है, जिससे ये सही बने रहते हैं. विटामिन एच त्वचा, नाखूनों और बालों के लिए भी अच्छा होता है. बायोटिन त्वचा को पोषण देता है, इससे त्वचा हेल्दी बनी रहती है. विटामिन ए बालों में केराटिन के उत्पादन को उत्तेजित करता है इससे बाल मजबूत बनते हैं.

विटामिन एच के सोर्स

-पनीर,-दूध–खमीर-अंडे–चिकन-मछली-मूंगफली-अखरोट-मशरू-

-गाजर

वजन घटाने के लिए घर पर करें ये आसान एक्सरसाइज कैलोरी और फैट बर्न करने में मिलेगी मदद

मौजूदा समय में बहुत सारे लोग मोटापे से परेशान हैं। अगर किसी का वजन कंट्रोल में है, तो वह इस डर से डाइटिंग करता है कि कहीं उसका वजन बढ़ न जाए। हालांकि, खानपान और जीवनशैली की बुरी आदतों के कारण ही लोग अपने बढ़ते वजन के कारण परेशान रहते हैं। आप चाहें, तो घर में रहकर भी कुछ विशेष किस्म की एक्सरसाइज की मदद से अपना वजन कम कर सकते हैं। आइए, सर्टिफाइड फिटनेस कोच, न्यूट्रिशनिस्ट और सप्लीमेंट स्पेशलिस्ट विनीत कुमार से जानते हैं, उन एक्सरसाइज के बारे में।

वजन कम करने के लिए करें पुश अप्स

वजन कम करने के लिए आप पुश अप्स कर सकते हैं। यह एक्सरसाइज काफी आसान है। इसे आप घर में रहकर भी कर सकते हैं। इस एक्सरसाइज की मदद से हाथ, कंधे मजबूत होते हैं और यह हार्ट रेट को भी बढ़ाता है। अगर आप इस एक्सरसाइज कोई सही तरह से और नियमित रूप से करें, तो इससे मेटाबॉलिज्म बढ़ता है और कैलोरी बर्न होती है। इसके अलावा, इस एक्सरसाइज की मदद से कंधे, सीना और अपर बैक मसल्स भी मजबूत होते हैं।

वजन कम करने के लिए करें लंजेस

वजन कम करने के लिए आप लंजेस एक्सरसाइज को भी अपनी लाइफस्टाइल का हिस्सा बना कसते हैं। यह बॉडी की स्ट्रेंथ बढ़ाने और माटापा कम करने के लिए बेहतरीन एक्सरसाइज मानी जाती है। लंजेस करने से शरीर में मौजूद एक्सेस फैट घटता है और लोअर बॉडी को अट्रैक्टिव शेप मिलती है।

वजन कम करने के लिए करें स्क्वॉट्स

वजन कम करने के लिए बेहतरीन एक्सरसाइजों में से एक स्क्वॉट्स भी है। इस एक्सरसाइज की मदद से कई लाभ मिलते हैं । विशेषकर, महिलाओं को यह एक्सरसाइज जरूर करना चाहिए। यह वजन बढ़ाने वाले जिम्मेदार हार्मोन को रेगुलेट करने में मदद करता है, जिससे तेजी से फैट बर्न होता है। इसके अलावा, स्क्वॉट्स एक्सरसाइज मसल्स बिल्ड करने में भी काफी मदद करते हैं।

वजन कम करने के लिए करें प्लैंक

वजन कम करने के लिए आप प्लैंक भी कर सकते हैं। आपको बता दें कि जो लोग इसे नियमित और सही तरीके से करते हैं, उनका दो से पांच कैलोरी तक प्रति मिनट बर्न हो सकता है। इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि फैट कम करने के लिए यह एक्सरसाइज कितना मददगार है। प्लैंक को एब्डॉमिनल स्ट्रेंथ के लिए जाना जाता है।

वजन कम करने के लिए करें स्किपिंग

वजन कम करने के लिए आप घर में रहकर स्किपिंग भी कर सकते हैं। स्किपिंग कोई भी आसानी से कर सकता है। अगर आपके पैर, पीठ या घुटने में कहीं चोट लगी है, तो स्किपिंग न करें। इससे आपकी चोट बिगड़ सकती है और आपकी तकलीफ बढ़ सकती है। स्किपिंग करने से मसल्स टोन होती है। इस एक्सरसाइज की अच्छी बात ये है कि आप जितनी ज्यादा स्किपिंग करेंगे, उतनी ही ज्यादा कैलोरी बर्न होगी और वेट कम होगा।

वजन कम करने के लिए जंपिंग करें

वजन कम करने के लिए आप स्किपिंग की ही तरह जंपिंग भी कर सकते हैं। इसे भी आप घर में आसानी से कर सकते हैं।

आप चाहें, तो स्टेपर की मदद से भी जंपिंग एक्सरसाइज के अलग-अलग फॉर्म को ट्राई कर सकते हैं। आप जितना ज्यादा जंपिंग एक्सरसाइज करेंगे, उतना ही आप एनर्जेटिक फील करेंगे। इस एक्सरसाइज की मदद से काफी ज्यादा कैलोरी बर्न करने में मदद मिलेगी और आप आसानी से अपना वजन कम कर सकेंगे।

हालांकि, यहां बताई गई सभी एक्सरसाइज की मदद से आप अपना वजन कम कर सकते हैं। लेकिन इसके साथ ही आपको संतुलित आहार और कम कैलोरी वाली डाइट पर भी ध्यान देना होगा। इसके अलावा, चीनी, मीठे-फूड्स, तले-भुने आहार से भी दूरी बनानी होगी।

महिलाएं ज्यादा होती हैं कब्ज का शिकार, पुरुष बाथरूम में बिताते हैं अधिक समय

आपने अक्सर देखा होगा कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कब्ज की समस्या अधिकतर बनमी रहती है. उन्हें कब्ज के चलते पेट में दर्द बना रहता है. ऐसा क्यों होता है इसका खुलासा हाल ही में किए गए एक रिसर्च में किया गया है. ब्रिटेन की एक स्टार्टअप हेल्थ सर्वे की टीम के डॉक्टर्स और रिसर्चर ने पाया कि महिलाएं कब्ज की समस्या से अधिक पीड़ित रहती हैं साथ ही पुरुष बाथरूम में अधिक समय बिताते हैं.

महिला होती हैं अधिक चिड़चिड़ी –

हाल ही में 'द बिग पू रिव्यू' नाम से एक सर्वे किया गया. इस सर्वे में 18 साल के लोगों या उससे अधिक उम्र के व्यक्ति के 142 से लेकर 768 व्यक्ति को इस सर्वे में शामिल किया गया. सर्वे के दौरान पाया गया कि पुरुषों की तुलना में महिला अधिक चिड़चिड़ी होती हैं. वहीं 13 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में 23 प्रतिशत महिलाओं ने कब्ज की

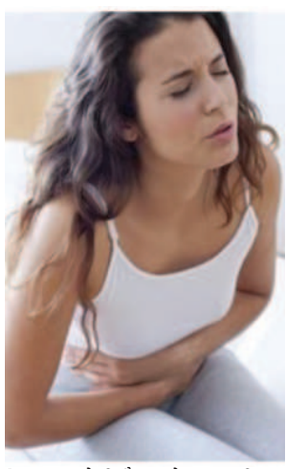

शिकायत होती है. इसके साथ ही 19 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वह आईबीएस से पीड़ित हैं उनकी तुलना में सिर्फ 10 प्रतिशत पुरुष ही आईबीएस से पीड़ित थे.

महिला और पुरुष की गट हेल्थ अंतर-

एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक महिला और पुरुष की गट हेल्थ में भारी अंतर होता है. दोनों को एक दूसरे को समझने की जरूरत होती है. हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक बच्चों के पालन-पोषण जैसे शारीरिक कारणों से महिलाओं का वजन उनके कूल्हों और जांघों की ओर बढ़ता है. इसके साथ ही महिलाओं में हार्मोनल चेंजेज होते हैं, जिसके चलते स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है. महिलाएं पीरियड्स, वे ल्यूटियल, पीएमएस और मासिक धर्म चरणों जैसे विभिन्न चरणों से गुजरती हैं, ऐसे में उन्हें कब्ज की समस्या हो जाती है.

सर्वे में पुरुषों से इस बात की भी जानकारी ली गई कि वह बाथरूम में कितना समय बिताते हैं. इसपर पता चला कि पुरुषों की तुलना में महिलाएं सार्वजनिक बाथरूम का उपयोग करने या यहां तक कि बाथरूम में अधिक समय बिताने को लेकर असहज महसूस करती हैं. ऐसे में वो बाथरूम जाने से बचती हैं और कब्ज का शिकार हो जाती है. विशेषज्ञ कहते हैं,पुरुष शौच करने से पहले शौचालय में धूम्रपान करते हैं. यह भी एक कारण हो सकता है.पहले पुरुष वॉशरूम में अखबार पढ़ते थे, जिससे शौचालय में बिताया जाने वाला समय बढ़ सकता है.

महिलाएं होती है अधिक तनाव का शिकार-

रिसर्च में इस बात का भी खुलासा कि महिलाओं में पुरुषों की तुलना में तनाव अधिक देखा जाता है. इसके पीछे का कारण पारिवारिक और सामाजिक दबाव को मान सकते हैं. इसके चलते उन्हें अधिक तनाव का सामना करना पड़ता है. दिमाग-आंत का कनेक्शन ऐसा बनाता है कि लगातार तनाव और चिंता के कारण महिलाओं को जीआई-ट्रैक्ट की पुरानी समस्याएं होती हैं.

सेंसेक्स 33 अंकों की गिरावट के साथ 65,446 पर बंद, बजाज ऑटो का शेयर 6% चढ़ा

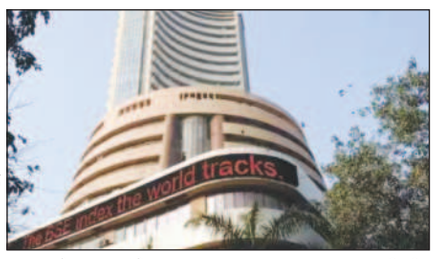

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। आज यानी बुधवार (5 जुलाई) को शेयर बाजार में फ्लैट कारोबार देखने को मिला है। सेंसेक्स 33 अंकों की गिरावट के साथ 65,446 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी में 9 अंकों की तेजी रही, यह 19,398 के स्तर पर बंद हुआ।

सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 20 में तेजी और 10 में गिरावट देखने को मिली है। आज बजाज ऑटो के शेयर में 5.94% की तेजी देखने को मिली है। इससे पहले कल शेयर बाजार ने अपना ऑल टाइम हाई बनाया था।

ज्यादातर सेक्टोरल इंडेक्स में तेजी

एनएसई के सेक्टोरल इंडेक्स की बात करें तो ऑटो (1.64%), एफएमसीजी (1.82%), आईटी (0.38%) और मीडिया (1.49%) सहित ज्यादातर में तेजी रही। वहीं प्राइवेट बैंक (0.08%) और बैंक (0.33%) सहित सिर्फ 4 इंडेक्स में गिरावट रही। आज रुपया डॉलर के मुकाबले 21 पैसे कमजोर होकर 82.22 रुपए पर बंद हुआ।

पहले दिन 69% सब्सक्राइब हुआ सेंको गोल्ड का आईपीओ ज्वेलरी बिजनेस से जुड़ी कंपनी सेंको गोल्ड का IPO कल यानी 4 जुलाई से ओपन हो चुका है। इस इश्यू को निवेशकों की ठीक-ठाक प्रतिक्रिया मिली है और यह अब तक 69% सब्सक्राइब हो गया है। रिटेल निवेशक इस आईपीओ के लिए 4 जुलाई से 6 जुलाई तक बिडिंग कर सकते हैं। 14 जुलाई को कंपनी के शेयर्स बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होंगे। इस इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग यानी आईपीओ के जरिए कंपनी 405 करोड़ रुपए जुटाना चाहती है।

आईसीआईसीआई ने कहा- वीडियोकॉन को नियमों के तहत दिया गया लोन

3250 करोड़ की ऋण धोखाधड़ी का है मामला

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। आईसीआईसीआई बैंक ने चंदा कोचर के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी देते हुए केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को भेजे एक आधिकारिक पत्र में कहा है कि बैंक को उनके फैसले से कोई गलत नुकसान नहीं हुआ है। बता दें कि चंदा कोचर, उनके पति दीपक कोचर और वीडियोकॉन समूह के प्रमोटर वी एन धूत को 3,250 करोड़ रुपये के कथित ऋण धोखाधड़ी घोटाले में आरोपी बनाया गया है और तीनों के नाम सीबीआई की 11,000 पन्नों की चार्जशीट में दर्ज हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, आईसीआईसीआई बैंक ने सीबीआई को लिखे एक नोट में कहा कि बोर्ड ने इस बात को दोबारा विचार किया कि कोचर के फैसले से बैंक को ₹कोई गलत नुकसान नहीं हुआ है या नहीं। आखिरकार निष्कर्ष यही निकाला गया है कि वीडियोकॉन की कंपनियों को उचित प्रक्रिया का पालन करते हुए ऋण मंजूर किया गया था। बैंक ने साथ ही यह भी कहा है कि हालांकि इस बात का इससे कोई संबंध नहीं है कि अपराध किया गया है नहीं।रिपोर्ट के अनुसार बैंक की ओर से बीते 15 मई को सीबीआई की ओर से भेजे गए नोट में यह बात कही गई थी।

टमाटर ही नहीं कई सब्जियों के दाम आसमान पर आलू-प्याज-गोभी की महंगाई ने रुलाया

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नई दिल्ली टमाटर के बढ़ते हुए दाम कई दिनों से खबरों में हैं पर अब और सब्जियां भी महंगाई का झटका दे रही हैं। देश के कई राज्यों में आम से लेकर खास सब्जियों के दाम बेतहाशा महंगे हो चुके हैं और आम जनता को समझ नहीं आ रहा है कि इस महंगाई के करेंट को कैसे झेला जाए। कई राज्यों में रोजाना वाली सब्जियां भी इतने ज्यादा दामों पर मिल रही हैं कि लोगों के लिए खाना बनाना एक समस्या हो गया कि बनाएं तो कौनसी सब्जी- जो बजट को ना बिगाड़े।

पटना में सब्जियों के दाम आसमान पर

बिहार की राजधानी पटना में फूल गोभी और पत्ता गोभी जैसी सब्जियां 60 रुपये प्रति किलो के रेट पर मिल रही हैं। इतना ही नहीं अब पश्चिम बंगाल और ओडिशा जैसे राज्य भी सब्जियों के दामों में बढ़त को झेल रहे हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक पटना में तो मई की शुरुआत से ही सब्जियों के दाम चढ़ रहे हैं। जहां सबसे ज्यादा उछाल टमाटर के रेट में आया है वहीं दूसरी सब्जियां भी महंगाई का करेंट दे रही हैं। फूलगोभी, पत्तागोभी से लेकर भिंडी जैसी सब्जियां के दाम लगभग दोगुने हो चुके हैं। मई में जो फूलगोभी 40 रुपये किलो थी जो अब 60 रुपये किलो पर है, पत्ता गोभी 30-40 रुपये प्रति किलो से बढ़कर 60 रुपये प्रति किलो पर हैं। आलू और प्याज के दाम मई के 20 रुपये किलो से बढ़कर जुलाई में 30-35 रुपये किलो तक चढ़ चुके हैं।

पश्चिम बंगाल में भी सब्जियां महंगी

अन्य राज्य जिनमें सब्जियों-फलो के दाम चढ़ रहे हैं उनमें पश्चिम बंगाल का भी नाम है। पीटीआई की एक रिपोर्ट के मुताबिक पश्चिम बंगाल में सब्जियों के दाम 30-35 फीसदी तक उछल चुके हैं। एक हफ्ते पहले जो हरी मिर्चें 150 रुपये प्रति किलो पर थीं वो अब सीधा 300-350 रुपये प्रति किलो के रेट पर हैं। वहीं टमाटर तो 130-150 रुपये प्रति किलो की रेंज में बिक ही रहा है।

ओडिशा में भी बुरा हाल

ओडिशा में पिछले 15 दिनों में सब्जियों के दाम जोरदार तरीके से उछल गए हैं। टमाटर के रेट 140-160 रुपये किलो के बीच हैं तो हरी मिर्च के रेट 200 रुपये प्रति किलो पर हैं। अदरक तो और महंगा हो गया है और 300 रुपये किलो पर है।

दिल्ली में जनता परेशान

दिल्ली में सफल स्टोर तक में टमाटर के दाम 129 रुपये प्रति किलो पर हैं और यहां जनता ने इस सब्जी की खरीदारी कम कर दी है।

उत्तर प्रदेश का क्या है हाल

इसी तरह से उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में टमाटर के रेट 150 रुपये प्रति किलो तक चढ़ चुके हैं।

सभी शाखाओं पर मिलेंगे महिला सम्मान सेविंग सर्टिफिकेट

मिल रहा एफडी से ज्यादा ब्याज

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नई दिल्ली,सरकारी क्षेत्र के बैंक ऑफ इंडिया की ओर से महिला सम्मान सेविंग सर्टिफिकेट 2023 को बैंक की सभी ब्रांच पर लॉन्च कर दिया गया है। बैंक ऑफ इंडिया पहला सरकारी बैंक है, जिसने अपनी सभी ब्रांच इस स्कीम को शुरू किया है। बैंक की ओर से महिला सम्मान सेविंग सर्टिफिकेट तब शुरू किया गया है, जब हाल ही में वित्त मंत्रालय की ओर से एक नोटिस जारी किया गया था, जिसमें बताया गया है कि आईसीआईसीआई, एक्सिस, एचडीएफसी और आईडीबीआई बैंक में ये निवेश का विकल्प जल्दी ही उपलब्ध हो जाएगा।

आरबीआई ने तीन स्मॉल फाइनेंस बैंक सेट अप करने के आवेदन किए खारिज

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नई दिल्ली,भारतीय रिजर्व बैंक की ओर से स्मॉल फाइनेंस बैंक शुरु करने के लिए आए हुए आवेदनों में से तीन को खारिज कर दिय गया है। इसमें वेस्ट एंड हाउसिंग फाइनेंस द्वारा किया गया आवेदन भी शामिल था। आरबीआई की ओर से कहा गया कि इन आवेदनों को स्मॉल फाइनेंस बैंक सेटअप करने के लिए सैद्धांतिक रूप से सही नहीं पाया गया था, जिसके कारण इनको केंद्रीय बैंक से मंजूरी नहीं दी गई है।

यूनिवर्सल बैंक और स्मॉल फाइनेंस बैंक (एसएफबी) के लाइसेंस के लिए लाई गई 'on tap' के तहत आरबीआई को एक दर्जन के आसपास आवेदन प्राप्त हुए हैं। पिछले साल मई में आरबीआई ने छह आवेदनों पर निर्णय दिया था। आरबीआई द्वारा तीन और आवेदनों को खारिज कर दिया गया है। केंद्रीय बैंक की ओर से कहा गया कि तीन और आवेदन का असेसमेंट किया जा रहा है। रिपोर्ट में बताया गया कि आवेदनों को स्मॉल फाइनेंस बैंक सेट अप करने के मापदंडों पर सही नहीं पाया गया है। इस कारण इनमें से किसी को भी मंजूरी नहीं दी गई है।

निजी क्षेत्र में यूनिवर्सल बैंकों और एसएफबी के 'ऑन टैप' लाइसेंसिंग के लिए दिशानिर्देश एक अगस्त 2016 और 5 दिसंबर, 2019 को जारी किए गए थे। इस दिशानिर्देश के मुताबिक, यूनिवर्सल बैंक सेट अप करने के लिए कम से कम 500 करोड़ रुपये की इक्विटी कैपिटल होनी चाहिए और बैंक की नेट वर्थ 500 करोड़ रुपये है। वहीं, स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए इक्विटी कैपिटल और नेट वर्थ 200 करोड़ रुपये होनी चाहिए। शहरी सहकारी बैंकों अपनी स्वेच्छा से एसएफबी बन सकते हैं। इसके लिए कम से कम 100 करोड़ रुपये की कैपिटल होनी चाहिए और इसे पांच साल के भीतर 200 करोड़ तक बढ़ाना है।

पेटीएम ने 79 लाख डिवाइसों के साथ मर्चेंट पेमेंट में हासिल किया मील का पत्थर

अकेले जून में 4 लाख डिवाइस जोड़े

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नई दिल्ली, 5 जुलाई । अग्रणी भुगतान और वित्तीय सेवा कंपनी पेटीएम ने बुधवार को कहा कि उसने 79 लाख उपकरणों के साथ मर्चेंट पेमेंट में एक नया मील का पत्थर हासिल किया है, जबकि वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही के लिए सकल मर्चेंडाइज मूल्य (जीएमवी) 4।05 लाख करोड़ रुपये था जो साल-दर-साल 37 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। भुगतान मुद्रीकरण के कारण, पेटीएम के सब्सक्रिप्शन डिवाइस, साउंडबॉक्स और पीओएस मशीनों की व्यापारियों द्वारा स्वीकार्यता में काफी वृद्धि देखी जा रही है। कंपनी व्यापारी भुगतान में बाजार में अग्रणी बनी हुई है। भुगतान उपकरणों के लिए सदस्यता का भुगतान करने वाले व्यापारियों की संख्या जून 2023 तक 79 लाख तक पहुंच गई है। इसमें एक महीने में 4 लाख उपकरणों की वृद्धि और 30 जून को समाप्त तिमाही में 11 लाख उपकरणों की वृद्धि हुई है। पेटीएम सुपर ऐप पर उपभोक्ता जुड़ाव औसत मासिक लेनदेन उपयोगकर्ताओं (एमटीयू) के साथ उच्च स्तर पर बना हुआ है, जो 9।2 करोड़ है, जो साल-दर-साल 23 प्रतिशत की वृद्धि है। मुनाफे पर नज़र रखते हुए कंपनी ने कहा, पिछली कुछ तिमाहियों में हमारा फोकस भुगतान की संख्या पर बना हुआ है जो हमारे लिए मुनाफा लाता है - या तो शुद्ध भुगतान मार्जिन के माध्यम से या प्रत्यक्ष अपसेल क्षमता से। बड़े ऋणदाताओं के साथ साझेदारी में पेटीएम के क्रेडिट वितरण व्यवसाय में तिमाही के लिए मजबूत वृद्धि देखी जा रही है, जो कि 1।28 करोड़ ऋण (51 प्रतिशत सालाना वृद्धि) वितरित होने के साथ सालाना आधार पर 167 प्रतिशत बढ़कर 14,845 करोड़ रुपये (1।8 बिलियन डॉलर) हो गया है। कंपनी ने कहा, हमारा फोकस अपने साझेदारों के समूह डेटा के साथ लगातार समीक्षा कर और जहां भी जरूरत हो, सक्रिय रूप से क्रेडिट नीति को सख्त कर संपत्ति की गुणवत्ता पर केंद्रित करना है। यह तिमाही में वितरित ऋण के मूल्य में वृद्धि को दर्शाता है। पेटीएम के वर्तमान में सात सक्रिय ऋण भागीदार हैं और इसका लक्ष्य इस वित्तीय वर्ष में 3-4 और भागीदारों को अपने साथ जोड़ने का है। इसने 30 जून को श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड के साथ अपनी ऋण वितरण साझेदारी की घोषणा की।

टाटा ने सीसीआई को बताया साफ-साफ

एअर इंडिया-विस्तारा के मर्जर से नहीं होगा मार्केट खराब

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। एअर इंडिया और विस्तारा के मर्जर का रास्ता जल्द साफ हो सकता है। दोनों कंपनियों के विलय को लेकर हाल में कॉम्प्टीशन कमीशन ऑफ इंडिया (सीसीआई) ने कुछ सवाल उठाए थे, जिस पर टाटा ग्रुप की ओर से जवाब दे दिया गया है। सीसीआई जानना चाहता थी कि कहीं इस मर्जर से एविएशन मार्केट पर कोई बुरा असर तो नहीं पड़ेगा। टाटा ग्रुप ने सीसीआई से कहा है कि दोनों कंपनियों के एक होने के बावजूद मार्केट पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि अभी दोनों कंपनियां जिन रूट्स पर अपनी सर्विस देती हैं, वहां पर दूसरी प्रतिद्वंदी कंपनियां भी मौजूद हैं। वहीं इस मामले की जानकारी रखने वाले सूत्र का कहना है कि सीसीआई की इस जांच से दोनों कंपनियों के बिजनेस पर फिलहाल कोई फर्क नहीं पड़ेगा, हालांकि मर्जर की समयसीमा थोड़ी आगे खिंच सकती है।

मार्केट में प्रतिस्पर्धा बनाए रखने की जिम्मेदार रेग्युलेटर सीसीआई ने एअर इंडिया और विस्तारा के मर्जर पर स्पीड ब्रेकर लगा दिया है। सीसीआई ने इस विलय को सीधे मंजूरी नहीं दी, बल्कि कंपनियों से पूछा कि क्यों ना इस बात की जांच शुरू की जाए कि कंपनियों के विलय से बाजार पर क्या असर होगा। सीसीआई की तरह दुनियाभर में मौजूद कॉम्प्टीशन रेग्युलेटर बड़ी कंपनियों के मर्जर को लेकर चौकन्ने रहते हैं। ताकि बाजार पर उसका कोई विपरीत असर ना पड़े और ग्राहकों के विकल्प खत्म होने से उन्हें नुकसान उठाना पड़े। कॉम्प्टीशन रेग्युलेटर का काम कंपनियों के एकाधिकार को रोकना होता है।

प्रमुख हवाई मार्गों पर एअर इंडिया का मार्केट शेयर अब जब टाटा ने सीसीआई को अपना जवाब भेज दिया है, तो एक बार उसकी बात को परख भी लिया जाए। देश के कुछ विशेष रूट पर एअर इंडिया और उसकी सहयोगी कंपनियों की मौजूदगी का मिलान उसकी सबसे बड़ी प्रतिद्वंदी इंडिगो के साथ करना बेहतर होगा। बाजार में दिल्ली-मुंबइ रूट पर इंडिगो का मार्केट शेयर 31% है जबकि एअर इंडिया ग्रुप की 4 एयरलाइंस का मार्केट शेयर 49% है। इसी तरह दिल्ली-बेंगलुरू रूट पर मार्केट शेयर इंडिगो का 35% और एअर इंडिया ग्रुप का 52% है। इसी तरह इंटरनेशनल रूट्स में भारत-बैंकॉक रूट पर इंडिगो का शेयर 25% है और एअर इंडिया ग्रुप का 50% है।

विलय के बाद ऐसे बदलेगा आईडीएफसी फर्स्ट बैंक

ग्राहकों और शेयरहोल्डर्स पर डालेगा ये असर?

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नई दिल्लीआईडीएफसी फर्स्ट बैंक के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने आईडीएफसी लिमिटेड और आईडीएफसी फाइनेंशियल होल्डिंग्स का खुद में विलय करने को मंजूरी दे दी है। इसी के साथ चर्चा शुरू हो गई है कि इससे बैंक के कस्टमर्स और शेयर होल्डर्स कैसे प्रभावित होंगे?

कैसे लोन के ब्याज पर और शेयर होल्डिंग के पैटर्न में बदलाव आएगा। चलिए आपकी इस मुश्किल को हम यहां आसान कर देते हैं बताते चलें कि आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने इस मर्जर को 2023 में ही पूरा करने का लक्ष्य रखा है।

हालांकि इसके लिए उसे आरबीआई के अलावा, सेबी, कॉम्प्टीशन कमीशन ऑफ इंडिया जैसे प्रमुख रेग्युलेटर्स से मंजूरी लेनी होगी। शेयर होल्डर्स पर विलय का असर आईडीएफसी फर्स्ट बैंक की ओर से साफ किया गया है कि आईडीएफसी लिमिटेड के शेयर होल्डर्स को हर 100 शेयर के बदले में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के 155 शेयर मिलेंगे। शेयरों की फेस वैल्यू 10 रुपये होगी। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक में आईडीएफसी लिमिटेड की 40 प्रतिशत हिस्सेदारी है। मर्जर के बाद आईडीएफसी लिमिटेड के शेयर होल्डर्स सीधे आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के शेयर होल्डर्स बन जाएंगे। वहीं बैंक के लिए भी ये फायदेमंद है, अभी बैंक में आईडीएफसी लिमिटेड की हिस्सेदारी के चलते उसके शेयर होल्डर्स के पास 1।66 के अनुपात में बैंक के शेयर्स हैं, जबकि विलय के बाद ये 1।55 के अनुपात में आ जाएंगे। विलय के बाद इन सभी कंपनियों और बैंक का बिजनेस स्ट्रीम लाइन होगा जिससे रेग्युलेटरी कंप्लायंस का बोझ घटेगा। नतीजा शेयर होल्डर्स को बेहतर रिटर्न मिलेगा।

क्रिप्टो टैक्स की फाइलिंग आसान बनाने के लिए कॉइनडीसीएक्स और कॉइन ने किया करार

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नई दिल्लीक्रिप्टो एक्सचेंज कॉइनडीसीएक्स ने अपने उपयोगकर्ताओं को क्रिप्टोकरेंसी करों को दाखिल करने के लिए एक बुनियादी ढांचा प्रदान करने का फैसला किया है। इसके तहत कंपनी ने क्रिप्टो टैक्सेशन सुविधा प्रदान करने वाले स्टार्टअप कॉइन के साथ करार किया है। घोषणा के अनुसार कॉइनडीसीएक्स प्लेटफॉर्म पर निवेशकों और व्यापारियों को कॉइन की कर गणना और रिपोर्टिंग प्रणाली तक पहुंच मिलेगी। इस सहयोग के साथ, कॉइनडीसीएक्स उपयोगकर्ता न केवल एक्सचेंज पर अपनी कर गणना को ट्रैक करने में सक्षम होंगे, बल्कि कई एक्सचेंजों और वॉलेट को कॉइनएक्स प्लेटफॉर्म से जोड़ सकेंगे। यह कार्यक्षमता निवेशकों को एनएफटी (गैर-कवक टोकन) और डीईएफआई (विकेन्द्रीकृत वित्त) में निवेश सहित अपने सभी क्रिप्टो लेनदेन की निगरानी करने में सक्षम बनाती है और वास्तविक समय में संबंधित कर राशि को देखती है। इसके अतिरिक्त उपयोगकर्ता आयकर रिटर्न (आईटीआर) फाइलिंग के लिए आवश्यक वर्चुअल डिजिटल एसेट (वीडीए) के अनुसार रिपोर्ट डाउनलोड कर सकते हैं। कॉइनडीसीएक्स वेंचर्स के प्रबंध निदेशक रोहित जैन ने कोइनएक्स के साथ इस साझेदारी पर कहा कि अपने उपभोक्ताओं के कर अनुपालन को सरल बनाने के लिए कंपनी प्रतिबद्ध है।

सोना आज मामूली तेजी पर तो चांदी में दिखी गिरावट

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नई दिल्ली सोना और चांदी आजकल मिलाजुला ट्रेड दिखा रहे हैं और सर्राफा बाजार के जानकार इन दोनों कीमती मेटल्स की चाल को समझ नहीं पा रहे हैं। एक दिन सोने के दाम चढ़ते है तो अगले दिन इसमें गिरावट आ जाती है। वहीं चांदी भी अपनी चमक बिखेर तो रही है पर इसकी इंडसट्रियल डिमांड में लगातार कमी देखी जा रही है। आज के कारोबार में बुलियन मार्केट में सोना मामूली तेजी पर है तो चांदी मामूली गिरावट के साथ कारोबार कर रहे हैं। इसका अर्थ है कि ज्वैलर्स को आज ज्यादा कमाई होने की उम्मीद कम है।

कैसे हैं सोने के दाम

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर सोना 38 रुपये की मामूली बढ़त पर है और 58447 रुपये प्रति 10 ग्राम के रेट पर बना हुआ है। आज सोने में नीचे की तरफ 58407 रुपये और ऊपर की तरफ 58449 रुपये प्रति 10 ग्राम के रेट देखने को मिल रहे हैं। सोने के ये दाम इसके अगस्त 2023 वायदा के लिए हैं।

कहां पर हैं चांदी के दाम

एमसीएक्स पर चांदी के दाम देखे तो आज ये 69 रुपये या 0.10 फीसदी की गिरावट के साथ मिल रही है। चांदी का सितंबर वायदा फिलहाल तो निवेशकों का नुकसान करा रहा है। चांदी के दाम इसके हिसाब से 70358 रुपये प्रति किलो पर हैं। चांदी के दाम नीचे में 70473 रुपये प्रति किलो तक गए थे और ऊपर में चांदी के रेट 70499 रुपये प्रति किलो तक पहुंचे थे।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कैसे हैं आज गोल्ड और सिल्वर के दाम

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कॉमैक्स पर सोने के दाम 1,932।55 डॉलर प्रति औंस पर हैं और इसमें 1.05 डॉलर की गिरावट के साथ कारोबार देखा जा रहा है जो कि 0।05 फीसदी की गिरावट दिखा रहा है। इसके अलावा कॉमैक्स पर ही चांदी के दाम भी लाल निशान में नजर आ रहे हैं। कॉमैक्स पर चांदी आज 23.128 डॉलर प्रति औंस के रेट पर कारोबार कर रही है।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

ग्रह स्थिति			लग्नारंभ समय		
सूर्य-	मिथुन	में	मेष--	00-39	बजे
चंद्र-	मकर	में	वृष--	02-24	बजे
मंगल	सिंह	में	मिथुन..	04-25	बजे
बुध-	मिथुन	में	कर्क...	06-37	बजे
गुरु-	मेष	में	सिंह...	08-49	बजे
शुक्र-	कर्क	में	कन्या..	10-56	बजे
शनि-	कुंभ	में	तुला...	13-01	बजे
राहु-	मेष	में	वृश्चिक.	15-11	बजे
केतु-	तुला	में	धनु.....	17-24	बजे
			मकर..	19-31	बजे
			कुंभ...	21-22	बजे
			मीन ..	23-00	बजे

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- 2080
शक संवत् -1945, सूर्य - दक्षिणायने ,ऋतु-वर्षा
महावीर निर्वाण संवत् -2549,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 सूर्योदय- 05-50 सूर्य अस्त- 18-50
भोग्य कलि वर्ष-426876
कलियुग संवत् -5124 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949124
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885124
दिशाशूल -- दक्षिण - जीरा खाकर घर से निकले
तिथि- तृतीया - 06 -30 तक उपरान्त चतुर्थी
मास - श्रावण कृष्ण पक्ष , गुरूवार July 06
नक्षत्र - धनिष्ठा - 00- 24 - तक उपरान्त शतभिषा
योग - प्रीति - 23 - 59 - तक उप आयुष्मान
करण- विष्टि - 06 -30 - तक उप- बव
विशेष:- चतुर्थी व्रत,पंचक-13-39 से
व्रत -त्योहार -चतुर्थी तिथि का क्षय

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 13:59 से 15:37 तक

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
शुभ.	05:50 - 07:26	शुभ	अमृत	18:50 - 20:15	शुभ
रोग	07:26 - 09:04	अशुभ	चंचल	20:15 - 21:37	शुभ
उत्पात	09:04 - 10:43	अशुभ	रोग	21:37 - 22:59	अशुभ
चंचल	10:43 - 12:21	शुभ	काल.	22:59 - 00:21	अशुभ
लाभ	12:21 - 13:59	शुभ	लाभ	00:21 - 01:43	शुभ
अमृत	13:59 - 15:37	शुभ	उत्पात	01:43 - 03:05	अशुभ
काल	15:37 - 17:15	अशुभ	शुभ.	03:05 - 04:27	शुभ
शुभ	17:15 - 18:50	शुभ	अमृत	04:27 - 05:50	शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,): अगर आप ज्यादा तनाव महसूस करते हैं- बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताएं। उनका गर्मजोशी से आलिंगन/आलिंगन या यहां तक कि एक मासूम मुस्कान आपको अपनी परेशानियों से बाहर निकाल देगी। यह एक और उच्च ऊर्जा वाला दिन है और अप्रत्याशित लाभ की संभावना है। अपने सामाजिक जीवन की उपेक्षा न करें।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,): आपके लिए अत्यंत खुशी और आनंद- जैसा कि आप जीवन का पूरी तरह से आनंद लेने के लिए तैयार हैं। अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर आप वित्त पर चर्चा कर सकते हैं और अपने भविष्य के लिए अपने धन की योजना बना सकते हैं। अगर आप अपने साझेदारों की राय को नजरअंदाज करेंगे तो वे धैर्य खो देंगे।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,): आध्यात्मिक और शारीरिक लाभ के लिए ध्यान और योग फ़ायदेमंद साबित होंगे। धन का प्रवाह पूरे दिन बना रहेगा, लेकिन दिन के अंत में आपको महसूस हो सकता है कि बहुत अधिक खर्च किया गया है। जीवन और कार्य के प्रति अपने दृष्टिकोण में एक प्रकाशमान और पूर्णतावादी बनें।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,): आज अतीत के ग़लत निर्णय निराशा और मानसिक उथल-पुथल का कारण बनेंगे - आप फंसे रह सकते हैं और यह तय करने में असमर्थ हो सकते हैं कि आगे क्या करना है - दूसरों से मदद लें। पैसों के निवेश और बचत को लेकर आज आपको अपने परिवार वालों से बात करने की जरूरत है।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,): आज अपने आप पर ज़्यादा ज़ोर न डालें- आपके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम लगती है और आपको निश्चित रूप से कुछ आराम की ज़रूरत है। जिन लोगों ने कर्ज लिया था उन्हें आज कर्ज चुकाने में परेशानी हो सकती है। घर में कुछ बदलाव आपको अत्यधिक भावुक बना देंगे।

कन्या (टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ठ, पे ,पो,): आराम करने के लिए कुछ समय करीबी दोस्तों के साथ बिताएँ। अगर आप भविष्य में आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहते हैं तो आपको आज से ही पैसे बचाना शुरू कर देना होगा। दोस्त आपका दिन ख़ुशनुमा बना देंगे क्योंकि वे शाम के लिए कुछ रोमांचक योजना बनाएंगे।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,): हर किसी की मदद करने की आपकी इच्छा आपको थका देगी। हालाँकि आज आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी, लेकिन आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि आप जरूरत से ज्यादा खर्च न करें और अनावश्यक चीजों पर खर्च न करें। परिवार के सदस्यों के साथ सामाजिक मेलजोल सभी को अच्छे मूड में रखेगा।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,): आपका दयालु स्वभाव आज कई ख़ुशी के पल लाएगा। आज आपको यह बात समझ में आ जाएगी कि निवेश करना अक्सर आपके लिए बहुत फायदेमंद साबित होता है, क्योंकि आपके द्वारा किया गया कोई भी पुराना निवेश लाभदायक रिटर्न देता है। अपने दोस्तों को अपने उदार स्वभाव का फ़ायदा न उठाने दें।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे): आपके ऊंचे उत्साह के बावजूद आपको किसी ऐसे व्यक्ति की कमी खलेगी जो आज आपके साथ नहीं रह सका। जो लोग शैक्षणिक या व्यावसायिक कारणों से घर से दूर रह रहे हैं, वे दोस्तों के साथ पार्टी पर अपना पैसा खर्च करेंगे। यह हावी होने या ऐसे काम करने का दिन नहीं है जिससे कोई परेशानी शुरू हो सकती है।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी): पारिवारिक समस्याओं को पत्नी से साझा करें। एक-दूसरे को फिर से खोजने और एक प्यार करने वाले पालन-पोषण करने वाले जोड़े के रूप में खुद को फिर से स्थापित करने के लिए कुछ समय एक-दूसरे के लिए बिताएं। आपके बच्चे भी घर में खुशियों और शांति के स्पंदन को महसूस करेंगे।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,): भावनाएँ उफान पर होंगी - आपका व्यवहार आपके आस-पास के लोगों को भ्रमित करेगा - तत्काल परिणाम चाहने पर निराशा आपको जकड़ सकती है। आज आप अच्छा पैसा कमाएंगे- लेकिन कोशिश करें कि इसे अपनी उंगलियों से फिसलने न दें। आने वाले मेहमान आपकी शामें व्यस्त रखते हैं।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची): आज आपके पास अपने स्वास्थ्य और रूप-रंग को बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त समय होगा। महत्वपूर्ण लोग किसी भी ऐसी चीज़ का वित्तपोषण करने के लिए तैयार होंगे, जो विशेष श्रेणी की हो। परिवार और दोस्तों के साथ आनंदमय समय बीतेगा। काफी विवादों के बावजूद आज आपका प्रेम जीवन अच्छा रहेगा।

पं. महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

चीन ने 11 साल पहले ही स्लीपर बसें बैन कीं

सिर्फ भारत-पाकिस्तान में ही इस्तेमाल, ये जानलेवा क्यों बनती हैं?

नागपुर, 5 जुलाई (एक्स्क्लूसिव डेस्क)। आधी रात हो चुकी थी। सभी यात्री सो रहे थे। मैं बस की आखिरी सीट पर था। आधी रात को झटका और तेज आवाज से मैं जगा। हर तरफ धुंआ और चीख-पुकार मची थी। सांस घुट रही थी। मैंने शीशा तोड़ा और किसी ने मुझे बाहर धक्का दे दिया।'

ये कहानी है शशिकांत गजबे की, जो बुलढाणा बस हादसे में जिंदा बच गए। अफसोस 25 अन्य यात्रियों को बचने का मौका नहीं मिल सका। नागपुर से पुणे जा रही प्राइवेट स्लीपर बस शुक्रवार देर रात महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले में समृद्धि एक्सप्रेस वे के डिवाइडर से टकराकर पलट गई। डीजल टैंक में विस्फोट होने से आग लग गई। ड्राइवर समेत सिर्फ 8 लोग ही जान बचा सके बाकी 25 यात्रियों की मौत हो गई।

शशिकांत गजबे की आपबीती से साफ है कि यात्रियों को बचने का वक्त ही नहीं मिला। इसके बाद ही स्लीपर बसों में सुरक्षा को लेकर बहस छिड़ गई है। कुछ लोग तो स्लीपर बसों को चलता फिरता ताबूत बता रहे हैं और इन्हें बैन करने की मांग की है। स्लीपर बसें क्यों जानलेवा बन जाती हैं?

चीन ने 11 साल पहले ऐसी बसों पर बैन क्यों लगा दिया? इसी की पडताल करती रिपोर्ट। स्लीपर बसों के ज्यादा हादसे होने और उनके जानलेवा बन जाने की 3 बड़ी वजहें हैं।

पर्याप्त स्पेस नहीं होता, आवाजाही मुश्किल

महाराष्ट्र स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन यानी एमएसआरटीसी की बसों का नया लुक तैयार करने वाले रवि महेंदले बताते हैं कि स्लीपर बसें यात्रियों को लेटने की सुविधा देती हैं, लेकिन आवाजाही के लिए बहुत कम जगह होती है। इसकी वजह से लोगों का हिलना डुलना भी काफी मुश्किल होता है। ऐसे में यदि कोई हादसा होता है तो वे वहीं पर फंस जाते हैं और बाहर नहीं निकल पाते।

आम तौर पर 2x1 भारतीय स्लीपर कोच में 30 से 36 सीट होती है। मल्टी-एक्सल कोचों में सीटों की संख्या 36-40 के बीच होती है। सभी बर्थ की लंबाई लगभग 6 फीट और चौड़ाई 2.6 फीट होती है।

हाल ही में अधिकांश भारतीय राज्य सरकारों ने स्लीपर बस में बर्थ की संख्या को लेकर सख्त आदेश जारी किए हैं। नए नियमों महाराष्ट्र जैसे राज्यों में पहले ही लागू हो चुके हैं। यहां पर ट्विन-एक्सल बसों में केवल 30 सीटों की अनुमति है। इसमें टूरिस्ट परमिट और ऑल इंडिया परमिट दोनों वाली स्लीपर बसें शामिल हैं।

इन बसों की ऊंचाई ज्यादा

स्लीपर बसें आमतौर पर 8-9 फीट ऊंची होती हैं। रवि महेंदले ने बताया कि ऐसे में यदि बस अचानक एक तरफ झुक जाती है, तो यात्रियों के लिए इमरजेंसी विंडो या गेट तक पहुंचना असंभव हो जाता है। वहीं बाहर राहत-बचाव में जुटे लोगों को भी कठिनाई काम का सामना करना पड़ता है, क्योंकि किसी भी यात्री को बाहर निकालने से पहले उन्हें 8-9 फीट ऊपर चढ़ना पड़ता है।

ड्राइवर की ओवरवर्किंग और ड्राउजीनेस अलर्ट सिस्टम न होना

ज्यादातर स्लीपर बसें 300 से 1000 किमी का सफर रात में ही तय करती हैं। लंबे रूट में ड्राइवर के थकने और झपकी आ जाने की संभावना पूरी होती है। महाराष्ट्र के बुलढाणा में जहां

रविवार को स्लीपर बस में हादसा हुआ वहां के एसपी सुनील कडासने के मुताबिक बस पर नियंत्रण खोने से पहले ड्राइवर को शायद चक्कर आ गया हो या वह सो गया हो।

एसपी के इस बयान के बाद ड्राउजीनेस अलर्ट सिस्टम की उपयोगिता पर सवाल उठाए जा रहा है। ड्राउजीनेस अलर्ट सिस्टम नींद आने पर ड्राइवर को अलर्ट करता है। कहा जा रहा है कि यदि बस में ड्राउजीनेस अलर्ट सिस्टम लगा होता तो बस ड्राइवर को नींद आने के समय अलर्ट करके जगाया जा सकता था और इतना बड़ा हादसा नहीं होता।

सो रहे ड्राइवरों को सचेत करने के लिए यह सिस्टम स्टीयरिंग में विभिन्न हिस्सों में लगे सेंसर और डैशबोर्ड पर कैमरे का उपयोग करता है। चालक के नींद में आने का पता स्टीयरिंग पैटर्न, लेन में वाहन की स्थिति, चालक की आंखों और चेहरे और पैर की गति की निगरानी से लगाया जाता है। सड़क परिवहन मंत्रालय ने 2018 में 15 राज्यों में ड्राइवरों पर एक सर्वे किया था। इस सर्वे में शामिल 25% ड्राइवरों ने स्वीकार किया था कि गाड़ी चलाते समय वे सो गए थे। ग्लोबल स्टडीज से यह भी पता चला है कि हाईवे और ग्रामीण सड़कों पर यात्रा करते समय ड्राइवरों के सो जाने की संभावना अधिक होती है। साथ ही आधी रात से सुबह 6 बजे के बीच इसके होने की संभावना ज्यादा होती है।

चीन 11 साल पहले लगा चुका है बैन

चीन में 2009 के बाद स्लीपर बस से जुड़े 13 हादसे हुए। इस दौरान 252 लोगों की मौत हो गई। 2011 में हेनान प्रांत में एक स्लीपर बस में आग लगने से 41 लोगों की मौत हो गई थी।

इसी वजह से जुलाई 2011 में चीन के परिवहन मंत्रालय और सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय ने दिशा-निर्देश जारी किए। इसमें कहा गया कि स्लीपर बस चलाने वाले ड्राइवरों को रात 2 से सुबह 5 बजे तक आराम करना चाहिए क्योंकि स्लीपर बसों से जुड़ी अधिकांश दुर्घटनाओं की वजह ड्राइवरों की थकान से संबंधित थीं।

यहां पर यह गौर करने वाले बात है कि चीन में अगस्त 2012 में जो स्लीपर हादसा हुआ वो भी रात 2:40 बजे एक्सप्रेसवे पर हुआ। 28 अगस्त 2012 को चीन के शानक्सी प्रांत में एक हाईवे पर स्लीपर बस मेथनॉल ले जा रही टैंकर से टकरा गई। बस में आग लगने से 36 लोगों की मौत हो गई।

इसके बाद चीन में स्लीपर बसों के नए रजिस्ट्रेशन पर बैन लगा दिया गया। हालांकि, पुरानी स्लीपर बसें चलती रहीं। अकेले 2012 में स्लीपर बसों से जुड़ी कम से कम तीन दुर्घटनाएं हुईं, इनमें 62 लोगों की मौत हो गई और 67 लोग घायल हुए। ये सभी हादसे रात में हुए।

चीन में बैन होने से पहले 37 हजार स्लीपर बसें चल रही थीं। देश के 5 हजार रूट पर लगभग 10 लाख लोग स्लीपर बस से सफर करते थे। रवि महेंदले के मुताबिक भारत और पाकिस्तान को छोड़कर किसी अन्य देश के पास इतनी स्लीपर बसें नहीं हैं।

महाराष्ट्र में समृद्धि एक्सप्रेसवे पर पिछले छह महीनों में सड़क दुर्घटनाओं के कारण 88 लोगों की जान चली गई है, जिसमें शनिवार को मारे गए लोग भी शामिल हैं। इसी वजह से एक्सपर्ट्स ने हाईवे पर स्पीड लिमिट को कंट्रोल करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। महाराष्ट्र में समृद्धि एक्सप्रेसवे पर स्पीड लिमिट 120 किमी/ घंटे है। सेव पुणे ट्रैफिक मूवमेंट चलाने वाले हर्षद अभ्यंकर कहते हैं कि हमें पहले 100 किमी/घंटे की रफ्तार से गाड़ी चलाने की अपनी क्षमता दिखानी होगी। सरकार को स्पीड लिमिट कम करनी चाहिए और दुर्घटनाओं की संख्या कम होने पर वह इसे धीरे-धीरे बढ़ा सकती है। इसके साथ हाईवे सीधा है, कोई मोड़ नहीं है और परिदृश्य में भी ज्यादा बदलाव नहीं है। इस वजह से ड्राइवर को बोरियत होती है और नींद आती है जो दुर्घटना की वजह बनती है। ट्रांसपोर्टरों का भी कहना है कि सरकार को सभी हाईवे का अध्ययन करने की जरूरत है।

रवि महेंदले कहते हैं, 'स्लीपर बस की डिजाइन में खामी होने चलते ही मैंने कई बार सड़क परिवहन मंत्रालय को पत्र लिखकर स्लीपर बसों के उत्पादन पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध किया था। उन्होंने कहा कि अब तक मुझे कोई जवाब नहीं मिला है।'

6'6 फीट लंबे बास्केटबॉल खिलाड़ी जितनी लंबाई!

दुनिया की सबसे बड़ी गाय को देखकर हैरान रह गए लोग

वॉशिंगटन, 5 जुलाई (एजेंसियां)। दुनिया की सबसे ऊंची गाय का एक वीडियो ऑनलाइन शेयर किए जाने के बाद से सोशल मीडिया यूजर्स हैरान हैं। इस गाय को बास्केटबॉल स्टार माइकल जॉर्डन जितना लंबा बताया जा रहा है जिनकी लंबाई 6'6 फीट है। विशालकाय गाय पहली बार 2019 में प्रसिद्ध हुई थी जिसकी ऊंचाई 6 फीट 3 इंच से अधिक और वजन करीब डेढ़ टन था। गाय की कहानी सामने आने के बाद पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के किसान ज्योफ पियर्सन को अगले दिन पत्रकारों से 115 से अधिक कॉल आईं।

कुछ समय के लिए गाय लाइमलाइट से बाहर हो गई थी लेकिन अब उसकी एक नई क्लिप सामने आई है। इसमें वह कुछ अन्य गायों के साथ मैदान में घास चरते हुए दिखाई दे रही है। इससे गाय के आकार का अंदाजा लगाया जा सकता है।

अब तक की सबसे ऊंची गाय

उन्होंने समझाया, 'सबसे संभावित कारण किसी तरह का म्यूटेशन या ग्रोथ हार्मोन में बदलाव हो सकता है। 2015 में 'अब तक की सबसे ऊंची गाय' की मौत हो गई थी, जिसकी लंबाई 6 फीट 4 इंच थी। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने ब्लॉसम नामक इस गाय को 'दुनिया की सबसे ऊंची जीवित गाय' माना था जिसके आगे अन्य मवेशी बौने नजर आते थे। मादा होल्स्टीन अपने मालिक पैटी हैनसन के साथ अमेरिकी राज्य इलिनॉयस के एक फार्म में रहती थी। पैर में चोट के चलते उसकी मौत हो गई थी।

क्या ऐसी मजबूरी रही कि बीजेपी को अपने पुराने घोड़े पर खेलना पड़ा दांव

बाबूलाल मिशन 2024 में होंगे कामयाब!

रांची, 5 जुलाई (एजेंसियां)। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) शीर्ष नेतृत्व ने एक बार फिर से अपने पुराने नेता बाबूलाल मरांडी पर विश्वास जताया है। करीब डेढ़ दशक तक बाबूलाल मरांडी बीजेपी से दूर रहे। इस दौरान बाबूलाल मरांडी ने कांग्रेस और जेएमएम के साथ भी तालमेल किया। लेकिन अब एक बार फिर बीजेपी नेतृत्व ने बाबूलाल मरांडी के कंधे पर ही बडी जिम्मेदारी सौंपी है। अब यह तय होगा कि झारखंड में 2024 में बीजेपी बाबूलाल मरांडी के फेस को आगे कर चुनाव मैदान में उतरेगी। उनके सामने लोकसभा के साथ विधानसभा चुनाव को लेकर भी रणनीति बनाने बड़ा दायित्व होगा।

वर्ष 2024 के चुनाव ठीक पहले बाबूलाल मरांडी को जिम्मेदारी सौंप कर केंद्रीय नेतृत्व ने साफ कर दिया गया है कि अगला चुनाव उनके नेतृत्व में ही पार्टी लड़ेगी। बाबूलाल मरांडी सीएम उम्मीदवार होंगे या नहीं, इस पर अभी पार्टी का कोई नेता कुछ भी बोलने को तैयार नहीं हैं, लेकिन यह तय है कि झारखंड में आदिवासी चेहरा को सामने रखने कर ही बीजेपी चुनाव मैदान में

उतरेगी।

बाबूलाल मरांडी पुराने इतिहास को दोहराने में होंगे कामयाब

बाबूलाल मरांडी 2024 में होने वाले लोकसभा और विधानसभा के चुनाव में क्या 1996, 1998, 1999 की तरह अपने पुराने इतिहास को फिर एक बार दुहरायेगें। राजनीतिक हलकों में अभी से यह चर्चा अभी से शुरू हो गई कि बाबूलाल मरांडी ही झारखंड में नवंबर-दिसंबर 2024 में होने चुनाव में बीजेपी का नेतृत्व करेंगे। बाबूलाल मरांडी का लम्बे अर्से से दुमका समेत समूचे संताल परगना से गहरा नाता रिश्ता रहा है। गिरिडीह का कोदायबांक गांव उनकी जन्म भूमि है। जबकि 1990 के दशक से उन्होंने दुमका-समेत समूचे संताल परगना को अपनी कर्मभूमि बनाया। कभी कोदायबांक और सतगंवा साधन विहिन गांवों में शुमार था। पैदल या पगडंडी वाले कठिन रास्ते पर सफर कर उन्होंने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा ग्रहण की। बाद में भूगोल से एमए की डिग्री हासिल कर शिक्षक के पद पर नियुक्त हुए। कहते हैं कि शिक्षक पद पर रहते हुए एक बार वे गिरिडीह के उपायुक्त से मिलने गये। लेकिन उपायुक्त से मिलने के क्रम में उन्हें प्रशासन और जनता के बीच की दूरी और आमलोगों के प्रति प्रशासनिक अधिकारियों के रुखे व्यवहार का कटु अनुभव हुआ। उन्होंने सरकारी शिक्षक के पद से त्यागपत्र दे दिया।

विहिप से जुड़ कर संगठन विस्तार में जुट गए

बाबूलाल मरांडी 80 के दशक के अंतिम दौर में वे पूर्णकालिक सदस्य के रूप में विश्व हिन्दू परिषद से जुड़ कर संगठन के विस्तार में जुट गए। संगठन ने भी उन्हें पूर्ण कालिक सदस्य के रूप में दुमका समेत पूरे संतालपरगना में संगठन विस्तार का दायित्व सौंपा। 1958 में जन्मे बाबूलाल मरांडी ने महज तीस साल की उम्र में शिक्षक की अच्छी खासी नौकरी छोड़ दी। घर द्वार छोड़कर संताल परगना में संगठन विस्तार के साथ खासकर आदिवासी समाज में राजनीतिक चेतना जाग्रत करने के अभियान में निकल पड़े। संगठन के प्रति समर्पण की बदौलत वे भाजपा के संस्थापक सदस्य कैलाशपति मिश्र जैसे नेताओं के चहेते बन गये।

झारखंड के भ्रष्टाचार की कड़ी में किसका विकेट गिरेगा?

पंकज मिश्रा के खास करीबी कृष्ण साह से ईडी की पूछताछ, निशिकांत दुबे ने कसा तंज

रांची, 5 जुलाई (एजेंसियां)। आज ईडी ने पत्थर कारोबारी कृष्ण कुमार साह से पूछताछ कर रही है। सांसद निशिकांत दुबे ने ट्वीट किया कि आज झारखंड के भ्रष्टाचार की कड़ी में किसका विकेट गिरेगा? इस ट्वीट के बाद राजनीति तेज है। सूत्रों के अनुसार साहिबगंज जिले के बड़हरवा निवासी कृष्णा साह को सीएम के बरहेट विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा का खास सहयोगी माना जाता है।

अवैध खनन से जुड़े हैं कई लोगों के तार

साहिबगंज में पत्थर के अवैध खनन के तार सरकार के कई वरिष्ठ लोगों से जुड़े हैं। एक हजार करोड़ के अवैध पत्थर खनन मामले में मनी लांड्रिंग के तहत जांच कर रही ईडी कृष्णा साह को समन भेजकर 5 जुलाई को तलब किया था। ईडी की कार्रवाई के बावजूद कृष्णा साह के खान में अवैध खनन जारी था। इसकी जानकारी ईडी को मिली है, जिसके बाद ही ईडी ने उसे समन भेजा. ईडी ने साहिबगंज जिले के पतना अंचल क्षेत्र के चपांडे पहाड़ में शुक्रवार की रात अवैध खनन के दौरान दो मजदूरों की मौत हो गयी थी।

बताया जाता है कि इस मामले को पहले दबाने का प्रयास किया गया था। मामले में ईडी के हस्तक्षेप करने के बाद स्थानीय पुलिस और जिला खनन पदाधिकारी ने मामले की जांच शुरू की और साफ हुआ कि इलाके में अवैध खनन जारी है। दुर्घटना में बरहरवा के मजदूर शपथ मंडल व पश्चिम बंगाल के मजदूर मिठुन कुमार की मौत हो गयी। ईडी की टीम इससे पहले आठ जुलाई 2022 को 1000 करोड़ रुपये के अवैध खनन मामले में कृष्ण साह के ठिकानों पर छापामारी कर चुकी है। इस मामले में जांच के बाद जो सामने आया उसमें पता चला कि चपांडे मौजा के पहाड़ में ब्लास्ट करने के लिए डीप होल किया जा रहा था। इसी के दौरान एक चट्टान टूट कर मजदूरों पर गिरा। इससे पश्चिम बंगाल के मिठुन कुमार और बरहरवा के गणेशपुर निवासी शपथ मंडल नामक मज़दूरों की मौत हो गयी थी।

---

180 दिन का मिलेगा मातृत्व अवकाश

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने दी स्वीकृति

रांची, 5 जुलाई (एजेंसियां)। राज्य में संविदा पर काम कर रही महिला कर्मचारियों को लेकर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बड़ा फैसला लिया है। उन्होंने मातृत्व अवकाश से संबंधित प्रस्ताव पर स्वीकृति दे दी है।

इस स्वीकृति के बाद अब संविदा पर नियुक्त महिला कर्मियों को मातृत्व अवकाश का लाभ प्राप्त होगा। पूर्व में संविदा पर नियुक्त महिला कर्मियों को मातृत्व अवकाश का लाभ देने का प्रावधान नहीं था।

सीएम ने लिया संज्ञान

संविदा पर कार्यरत महिला कर्मचारियों को मातृत्व अवकाश का मामला सीएम के संज्ञान में आया था। जिस पर प्रस्ताव तैयार किया गया। लगभग पांच महीने पहले वित्त विभाग ने इस पर अपनी स्वीकृति दी। इसके बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने संविदा पर नियुक्त महिला कर्मियों को मातृत्व अवकाश देने की स्वीकृति प्रदान की है।

180 दिन का मिलेगा मातृत्व अवकाश

मुख्यमंत्री द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव वैसी महिला कर्मी पर लागू होगा जो पिछले 12 महीनों में 80 दिन तक संविदा पर कार्य कर चुकी हों, उन्हें 180 दिन का मातृत्व अवकाश का लाभ मिलेगा। यह अवकाश दो जीवित संतान के उपरांत हुए प्रसव पर लागू नहीं होगा। मातृत्व अवकाश के लिए संविदा राशि छुट्टी पर जाने से पहले मिले अंतिम संविदा राशि के बराबर होगा। इसका लाभ दो हजार से अधिक कर्मियों को मिलने जा रहा है।

हाईकोर्ट के इन फैसले की वजह से सरकार ने लिया निर्णय

राज्य में कॉन्ट्रैक्ट पर कार्यरत महिला कर्मचारी लंबे समय मातृत्व अवकाश की मांग कर रही थीं। वहीं मोनिका बनाम झारखंड एवं अन्य में झारखंड हाईकोर्ट ने भी देवीपुर में कॉन्ट्रैक्ट पर कार्यरत महिला पर्यवेक्षिका को मातृत्व अवकाश का भुगतान करने का आदेश दिया है। इसी तरह रश्मि भारती बनाम झारखंड सहित कुछ अन्य मामलों में भी हाईकोर्ट ने ग्रामीण विकास विभाग और गोड्डा डीसी को सुप्रीम कोर्ट द्वारा म्युनिसिपल कॉरपोरेशन दिल्ली बनाम फीमेल वर्कर्स (मस्टर रॉल) मामले में पारित आदेश के अनुरूप शपथ पत्र दायर करने का आदेश दिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में मैटरनिटी बेनीफिट एक्ट 1961 के तहत मातृत्व अवकाश देने का आदेश दिया है।

इन सबको देखते हुए झारखंड सरकार ने महिला कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को मातृत्व अवकाश देने का फैसला किया है।

सड़क हादसे में जीजा-साले की मौत

तेज रफ्तार बाइक पेड़ से टकराई

कोरबा, 5 जुलाई (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के कोरबा में बुधवार को हुए सड़क हादसे में जीजा-साले की मौत हो गई। दोनों बाइक पर सवार होकर किसी काम से निकले थे। इसी दौरान तेज रफ्तार बाइक सड़क किनारे पेड़ से जा टकराई। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने दोनों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और परिजनों को सूचना दी। हादसा बालको थाना क्षेत्र में हुआ है। जानकारी के मुताबिक, रजगामार चौकी क्षेत्र अंतर्गत गोड़मा निवासी अंजोर सिंह (38) बाइक से अपनी ससुराज सोनपुरी गांव आया था। यहां से अपने साले जनी राम (22) के साथ दोनों बाइक पर सुबह घर से किसी काम पर जाने के लिए निकले थे। बताया जा रहा है कि रूमगड़ा हवाई पट्टी के पास तेज रफ्तार बाइक पेड़ से जा टकराई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों उछलकर दूर तक जा गिरे। हादसे में बाइक चला रहे अंजोर सिंह के सिर पर चोट लगी और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वहीं हादसा देख राहगीरों ने 108 को सूचना दी। इस पर एंबुलेंस से घायल जनी राम को मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुंचाया गया, वहां डॉक्टरों ने उसे भी मृत घोषित कर दिया।

किसी की बेटी, किसी और का पति, तीसरे को नागवार गुजरा रिश्ता, बीच चौराहे पर ले ली जान

कांकेर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के कांकेर में एक युवक की हत्या कर दी गई। युवक शादीशुदा था और गांव की ही एक लड़की से उसके अवैध संबंध थे। खास बात यह है कि जिस युवक ने हत्या की, उसका दोनों से ही कोई लेना-देना नहीं था। इसके बावजूद बीच चौराहे पर धारदार हथियार से कत्ल कर दिया। हत्या के बाद आरोपी भाग निकला। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। मामला चारामा थाना क्षेत्र का है।

धारदार हथियार से किया हमला

जानकारी के मुताबिक, ग्राम भोथा निवासी ओमेश बघेल शादीशुदा था। इसके बाद भी उसका गांव की ही एक युवती से प्रेम संबंध था। दोनों के इस रिश्ते को देखकर गांव में ही रहने वाले लखेश्वर बघेल को अच्छा नहीं लगता था।

ओमेश बुधवार को गांव के नल से पानी भरने के बाद घर लौट रहा था। आरोप है कि इसी दौरान लखेश्वर बघेल ने गांव के अटल चौक पर धारदार हथियार से उस पर हमला कर दिया।

पुलिस बोली- पुरानी रंजिश में हत्या

एक के बाद एक वार कर आरोपी लखेश्वर वहां से भाग निकला। जबकि ओमेश की मौके पर ही मौत हो गई। बीच चौराहे पर हत्या होते देख ग्रामीण घबरा गए और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और साइबर सेल की मदद से आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। थाना प्रभारी रूपेंद्र पटेल ने बताया कि हत्या पुरानी रंजिश में की गई है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ कर रहे हैं। जांच जारी है।

नया शिक्षा सत्र शुरू होने के बाद भी नहीं खुल रहे स्कूल, शिक्षक गायब

प्रदर्शन करने के मजबूर हुए बच्चे

कांकेर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। शिक्षा सत्र शुरू होते ही अंदरूनी गांवों में शिक्षा की समस्या उजागर होने लगी है। इसी को लेकर कोयलीबेड़ा ब्लॉक के छोटेबेठिया में स्कूली बच्चे और ग्रामीणों ने बेचाघाट से छोटेबेठिया तक रैली निकाल प्रदर्शन किया।

रैली में जिले के छोटेबेठिया इलाके और नारायणपुर जिले के ओरछा ब्लॉक के ग्रामीण शामिल हुए। ग्रामीणों ने बताया कि 26 जून से शिक्षा सत्र की शुरुआत हुई

है, लेकिन अब तक कई स्कूलों का गेट भी नहीं खुला है। शिक्षक नहीं आने के चलते बच्चों का पढ़ाई प्रभावित हो रही है। इससे वे मुख्यधारा से भटक सकते हैं।

ग्राम पंचायत कोंगे के ग्रामीणों ने बताया कि गांव के सभी स्कूलों के शिक्षक स्कूल नहीं आ रहे हैं। कई बार सरपंच, सचिव, संकुल समन्वयक और बीईओ को जानकारी देने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं होती है। वहीं, स्कूल भवन भी जर्जर स्थिति में हैं।

भाजपा विधायक चंद्राकर बोले- कट-पेस्ट प्रवक्ता आरोप लगा रहे, अब तक क्या ताली बजा रहे थे

रायपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में घोटालों को लेकर राजनीतिक रार मची हुई है। भाजपा विधायक और पूर्व मंत्री अजय चंद्राकर ने कहा कि, कट, कॉपी और पेस्ट प्रवक्ता घोटाले का आरोप लगा रहे हैं। उन्होंने कहा कि, सतापक्ष आरोप नही लगाता, जांच कर कार्रवाई कराता है। अब तक क्या ताली बजा रहे थे। प्रियदर्शिनी बैंक घोटाले में सरकार न्यायिक जांच आयोग बनाए। कहा कि, भूपेश सरकार सीधे जांच कर कार्रवाई क्यों नहीं करती। एक दिन पहले कांग्रेस ने रमन राज में एक लाख करोड़ के घोटाले का आरोप लगाते हुए 34 घोटालों की लिस्ट जारी की थी। इसी को लेकर पूर्व मंत्री चंद्राकर ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में आरोप लगाया कि, प्रदेश में कलेक्टर और एसपी की पोस्टिंग में पैसे लिए जा रहे हैं। उन्हें पैसे लेकर बिठाया जा रहा है। से पोस्टिंग कर रहे हैं। कहा कि, नरवा, गरवा, बाड़ी के लिए कोई बजट नहीं है।

व्हाइट हाउस में मिला कोकीन

एजेंसियों में हड़कंप, ड्रग्स के अंदर पहुंचने पर सवाल

वाशिंगटन, 5 जुलाई (एजेंसियां)। अमेरिका के व्हाइट हाउस में रविवार देर रात गुप्त सेवा के अधिकारियों की गश्त के दौरान संदिग्ध सफेद पाउडर मिलने से हलचल मच गई। अधिकारियों ने आनन-फानन में भवन को बंद करवा दिया और जांच पड़ताल की। शुरुआती जांच में पता चला है कि पाउडर कोकीन है। हालांकि, जब व्हाइट हाउस में यह सब घटना घटी, उस समय बाइडन वहां मौजूद नहीं थे। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, पाउडर वेस्ट विंग में पाया गया था, लेकिन ज्यादा जानकारी नहीं दी गई। बता दें, वेस्ट विंग उस कार्यकारी हवेली से जुड़ा हुआ है, जहां राष्ट्रपति जो बाइडन रहते हैं। इसमें ओवल कार्यालय, कैबिनेट कक्ष और प्रेस क्षेत्र, और राष्ट्रपति के कर्मचारियों के लिए कार्यालय और कार्यक्षेत्र हैं। सैकड़ों लोग नियमित रूप से वेस्ट विंग में काम करते हैं या आते हैं। गुप्त सेवा के अधिकारियों ने मंगलवार को बताया कि रविवार को वेस्ट विंग के अंदर एक अज्ञात वस्तु पाई गई, जिसके बाद एहतियात के तौर पर व्हाइट हाउस परिसर को अस्थायी रूप से बंद करवा दिया गया था। बाद में वस्तु की जांच की गई, जिसकी पहचान कोकीन के रूप में की गई। एक अधिकारी ने बताया कि फायर डिपार्टमेंट को भी यह निर्धारित करने के लिए बुलाया गया था कि यह कोई खतरनाक वस्तु तो नहीं है। उन्होंने कहा कि यह सफेद पाउडर व्हाइट हाउस में कैसे आया, इसके कारण और तरीके की जांच की जा रही है।

शहबाज शरीफ को अयोग्य ठहराने की मांग वाली याचिका दायर

इस्लामाबाद, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पाकिस्तान की एक अदालत में याचिका दायर कर प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को अयोग्य ठहराने की मांग की गई है। दावा किया गया है कि उन्होंने अपने बड़े भाई नवाज शरीफ के इलाज के बाद ब्रिटेन से लौटने के संबध में अदालत से 'झूठा वादा' किया था। हालांकि, लाहौर उच्च न्यायालय ने सुनवाई अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करते हुए कहा कि यह याचिका तब दायर की जानी चाहिए थी जब शहबाज पिछली सरकार के कार्यकाल के दौरान अपना वादा पूरा करने में विफल रहे। सत्तारूढ़ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के सर्वोच्च नेता और प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के बड़े भाई नवाज नवंबर 2019 से ब्रिटेन में निर्वासन में रह रहे हैं। याचिकाकर्ता अजहर अब्बास ने दलील दी कि शहबाज शरीफ ने नवंबर 2019 में उच्च न्यायालय की दो न्यायाधीशों की पीठ के समक्ष 'झूठा हलफनामा' दायर किया।

नीदरलैंड सरकार का बड़ा फैसला

स्कूलों में मोबाइल-स्मार्टवॉच पर लगेगा प्रतिबंध, यूके भी सहमत

एम्स्टर्डम, 5 जुलाई (एजेंसियां)। नीदरलैंड सरकार अगले साल तक स्कूलों में मोबाइल फोन, टैबलेट और स्मार्टवाच के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने वाली है। उनका मानना है कि ये चीजें छात्रों की पढ़ाई में बाधा बन रहे हैं, जिस वजह से उनपर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया है।

स्कूल अधिकारियो से इस मामले में आभिभावकों और शिक्षकों से सहमति जुटाने के लिए कहा गया है। नीदरलैंड सरकार ने कहा पढ़ाई के बीच मोबाइल फोन के इस्तेमाल से बच्चों पर हानिकारण प्रभाव पड़ता है और इसका परिणाम तेजी से बढ़ रहा है। इन उपकरणों के कारण छात्र ध्यान केंद्रित करने में कम सक्षम होते हैं, जिसका प्रभाव सीधे उनके प्रदर्शन पर पड़ता है। इसी वजह से एक जनवरी 2024 से स्कूलों में मोबाइल फोन, स्मार्टवाच और टैबलेट की अनुमति नहीं दी जाएगी। सरकार ने इस पर अभिभावक और शिक्षकों को इस मामले में सहमत होने के लिए अक्तूबर तक का समय दिया है।

नीदरलैंड के शिक्षा मंत्री रॉबर्ट डिकग्राफ ने बताया कि इस फैसले सांस्कृतिक परिवर्तन आएगा। इससे पहले फ्रांस ने 2018 में ऑनलाइन धमकियों को रोकने के लिए प्राइमरी और मिडिल स्कूल में मोबाइल फोन पर प्रतिबंध लगाया था। यूके ने भी इस तरह के प्रतिबंध को सही बताया था। यूके के शिक्षा मंत्री ने कहा कि अधिकांश स्कूलों में मोबाइल फोन का इस्तेमाल पहले से ही प्रतिबंधित है।

द. कोरिया ने बरामद किया उत्तर कोरिया के जासूसी उपग्रह का मलबा

सोल, 5 जुलाई (एजेंसियां)। दक्षिण कोरियाई सैनिकों ने उत्तर कोरिया के जासूसी उपग्रह का मलबा बरामद किया है। यह उपग्रह मई में असफल लॉन्च के बाद समुद्र में गिर गया था। उत्तर कोरिया ने पिछले महीने अपना पहला सैन्य उपग्रह लॉन्च किया था, जो असफल हो गया था। इसका बूस्टर और पेलोड उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद समुद्र में गिर गया था। इस प्रयोग के दौरान इस्तेमाल किए गए रॉकेट का मलबा दक्षिण कोरिया ने समुद्र से बरामद किया है। उत्तर कोरिया के इस मिशन लॉन्च के विश्लेषण के बाद दक्षिण कोरिया और अमेरिका के विशेषज्ञों ने बताया कि जासूसी उपग्रह के रूप में इसकी कोई सैन्य उपयोगिता नहीं है। साउथ कोरिया के सैनिकों ने बताया कि उन्होंने बुधवार को अपना खोजी अभियान खत्म कर दिया।

पाकिस्तान में सियासत के लिए अब कुरान का सहारा!

विरोध में कूदे सत्ता पक्ष और विपक्ष

इस्लामाबाद, 5 जुलाई (एजेंसियां)। स्वीडन में कुरान जलाए जाने की घटना पाकिस्तान में अंदरूनी सियासत का सहारा बन गई है। इस घटना से मुस्लिम समुदाय की भड़की भावनाओं का फायदा उठाने की होड़ में देश की प्रमुख राजनीतिक पार्टियां कूद पड़ी हैं। इस मामले में पहल पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के प्रमुख इमरान खान ने की। सोमवार को उन्होंने देशवासियों का आह्वान किया था कि वे अगले शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद इस घटना पर विरोध जताने के लिए सड़कों पर उतरें। मंगलवार को सत्ता पक्ष ने भी इस होड़ में कूदने का फैसला किया। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने एलान किया है कि शुक्रवार को देश भर में 'पवित्र कुरान दिवस' मनाया जाएगा।

स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में कुरान का अपमान किया गया था। पहले वहां अधिकारियों ने एक व्यक्ति को ऐसा करने की इजाजत दी थी। लेकिन जब इस घटना के विरोध में इस्लामी देशों में स्वीडन में बने सामानों का बहिष्कार शुरू हो गया, तो स्वीडन सरकार ने इस घटना की निंदा की। इसके बावजूद पाकिस्तान समेत अन्य मुस्लिम देशों में इस घटना पर विरोध जताने का सिलसिला जारी है।

मंगलवार को शहबाज शरीफ की अध्यक्षता में उनकी पार्टी पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज की एक बैठक हुई। इसमें फैसला लिया गया कि सात जुलाई को यौम-ए-तकद्दुस-ए-कुरआन (कुरान की पवित्रता का दिन) मनाया जाएगा। उस रोज देश भर में प्रतिरोध रैलियां आयोजित की जाएंगी।

शहबाज शरीफ ने सभी राजनीतिक दलों सहित तमाम देशवासियों से अपील की है कि वे इन रैलियों में हिस्सा लें। पीएमएल-नवाज की तरफ से जारी एक बयान के मुताबिक प्रधानमंत्री ने कहा है- 'पूरे कौम को एक स्वर में शैतान दिमागों को अपना संदेश भेजना चाहिए।'

इस बीच शहबाज शरीफ सरकार ने गुरुवार को संसद के दोनों सदनों- नेशनल असेंबली और सीनेट- का साझा सत्र आयोजित करने का फैसला किया है। इसमें स्वीडन की घटना के खिलाफ एक प्रस्ताव पारित किया जाएगा। शहबाज शरीफ ने कहा है- 'कौम की भावनाओं को संसद के मंच पर पूर्ण अभिव्यक्ति दी जाएगी। कुरान का सम्मान हमारे मजहब का हिस्सा है और इस मुद्दे पर हम सभी एकजुट हैं।'

उधर पाकिस्तान और अन्य मुस्लिम देशों के अनुरोध पर संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार परिषद की एक विशेष बैठक भी बुलाई गई है। परिषद के प्रवक्ता ने कहा कि पाकिस्तान और अन्य देशों ने 'कुछ यूरोपीय और अन्य देशों में कुरान का अपमान करने की लगातार हो रही घटनाओं' पर चर्चा के लिए परिषद की विशेष बैठक बुलाने की मांग की थी, जिसे स्वीकार कर लिया गया है।

पर्यवेक्षकों की राय है कि स्वीडन की घटना से पाकिस्तान सरकार को देश में चल रहे राजनीतिक तनाव और आर्थिक संकट से लोगों का ध्यान हटाने का मौका मिला है। इसीलिए वह इस मुद्दे पर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी सक्रियता दिखा रही है। स्वीडन में कुरान को जलाने की घटना बीते 28 जून को हुई थी। उस पर इस्लामी देशों में कड़ी प्रतिक्रिया हुई। इधर पाकिस्तान में इमरान खान ने विरोध जताने में बढ़त ले ली। अब पीएमएल-नवाज उससे इस होड़ में आगे निकलने में जुट गई है।

अफगानिस्तान में ब्यूटी पार्लर बैन

तालिबान ने कहा- एक महीने में तमाम ब्यूटी सैलून बंद करो, वजह बाद में बताएंगे

काबुल, 5 जुलाई (एजेंसियां)। अफगानिस्तान की हुकूमत पर कब्जा करने वाले आतंकी संगठन तालिबान ने देश में तमाम ब्यूटी पार्लर बंद करने का ऑर्डर जारी किया है। ब्यूटी पार्लर चलाने वाली महिलाओं को एक महीने का वक्त दिया गया है। हालांकि, इस बैन की वजह नहीं बताई गई है। तालिबान ने 15 अगस्त 2021 को काबुल के साथ ही पूरे अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया था। इसके बाद से उसने लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा और नौकरी से जुड़े तमाम अधिकार छीन लिए हैं।

तालिबान ने कहा- ये जरूरी फैसला

तालिबान की होम मिनिस्ट्री ने ब्यूटी पार्लर बैन किए जाने के आदेश की पुष्टि की है। अफगानिस्तान में हजारों ब्यूटी पार्लर हैं। इनकी ओनरशिप महिलाओं के पास ही है। इस फरमान से इन महिलाओं का रोजगार छिन जाएगा। ज्यादातर पार्लर महिलाओं ने घर में ही खोले थे और यहां किसी भी पुरुष के आने पर सख्त पाबंदी थी।

हैरानी की बात यह है कि तालिबान हुकूमत ने अब तक ब्यूटी पार्लर बंद करने के फैसले की वजह नहीं बताई। इस बारे में न्यूज एजेंसी ने जब सवाल किया तो तालिबान की तरफ से कहा गया- एक महीना गुजर जाने दीजिए, वजह इसके बाद ही बताई जाएगी। 20 साल तक अफगानिस्तान में हजारों ब्यूटी पार्लर थे। तब तालिबान ने कई बार कहा था कि इन पार्लर का इस्तेमाल फिजूल की बातों और गॉसिप के लिए होता है।

'अच्छा होता यहां महिलाएं होती ही नहीं'

तालिबान के फैसले के बाद काबुल के एक ब्यूटी पार्लर की मैनेजर ने कहा- बेहतर तो ये होता कि तालिबान अफगानिस्तान से महिलाओं को ही निकाल देता। उनका वजूद ही खत्म कर देता। अब तो मौत ही बेहतर है। अच्छा होता अगर हमने अफगानिस्तान में जन्म ही नहीं लिया होता।

पिछले दिनों तालिबान ने एक आदेश में कहा था कि यूएन से जुड़े एनजीओस में भी महिलाएं काम नहीं कर सकेंगी। इसके बाद सरकारी नौकरी में बची हुईं बाकी महिलाओं को भी बेहद गुपचुप तरीके से नौकरी से निकाल दिया गया।

ब्यूटी पार्लर बंद किए जाने के लिए तालिबान हुकूमत ने लेटर हेड पर ऑर्डर जारी किया है। इस पर सुप्रीम लीडर हिब्तुल्लाह अखुंदजादा के दस्तखत हैं।

यह फोटो रिवॉल्यूशनरी एसोसिएशन ऑफ द वुमन ऑफ अफगानिस्तान द्वारा जारी किए गए एक वीडियो से कैप्चर किया गया है। फोटो अगस्त 2001 की है, जिसमें एक तालिबानी एक महिला को मार रहा है, क्योंकि महिला ने अपना बुर्का उतार दिया था।

गाजा पर दूसरे दिन इजराइली अटैक

12 फिलिस्तीनियों की मौत, 100 घायल

तेल अवीव, 5 जुलाई (एजेंसियां)। इजराइल और फिलिस्तीन के बीच जेनिन शहर में 2 दिन से जारी तनाव के बाद मंगलवार को इजराइली सेना ने वेस्ट बैंक से पीछे हटना शुरू कर दिया। सेना के 2 दिन के ऑपरेशन में करीब 12 फिलिस्तीनियों की मौत हो गई, वहीं 100 से ज्यादा घायल हुए हैं। इस रेड के दौरान एक इजराइली सैनिक की भी मौत हो गई। अल जजीरा ने बताया कि इजराइल के ऑपरेशन ने जेनिन में रिफ्यूजी कैंप को तबाह कर दिया।

इलाके में मौजूद घर, सड़कों और कारों का मलबा हर जगह फैल गया। इसके बाद मंगलवार देर रात गाजा पट्टी से इजराइल पर मिसाइल फायर की गई। हमलों को देखते हुए सदर्न इजराइल में अलर्ट सायरन बजाया गया और आयरन डोम को एक्टीवेट कर दिया गया। इजराइली मिलिट्री ने गाजा से आए 5 रॉकेट को मार गिराने की पुष्टि की। इसके बाद सेना ने गाजा पट्टीऔर हमास के ठिकानों पर दोबारा एयरस्ट्राइक की। इस बीच तेल अवीव में एक हमास सपोर्टर अपनी कार लेकर बस स्टॉप में घुस गया और लोगों पर चाकू से हमला करने लगा। इस अटैक में 8 लोग घायल हो गए। इस पर इजराइल के प्रधानमंत्री बेन्जामिन नेतन्याहू ने कहा- इस तरह के हमले आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई को नहीं रोक सकते हैं। अभी के लिए इजराइली सेना अपना मिशन पूरा करके लौट रही है, लेकिन जरूरत पड़ने पर हम फिर लौटेंगे।

फिलिस्तीनी लीडर्स ने इजराइल के हमलों को कब्जे की कोशिश करार दिया है। हमास लीडर ओसामा हमदान ने कहा- तेल अवीव में अटैक के लिए इजराइली सेना खुद जिम्मेदार है। उन्होंने जेनिन में जो अपराध किया, ये उसी का नतीजा है। इससे पहले सोमवार को फिलिस्तीन के आतंकी संगठन ने इजराइल को तबाह करने की धमकी दी थी। 1948 में इजराइल के जन्म के बाद भी फिलिस्तीन से उसका संघर्ष हर स्तर पर जारी रहा। इजराइल को जब लगा कि डिप्लोमैटिक लेवल पर वो फिलिस्तीन के सामने कमजोर पड़ रहा है, तो 1970 के दशक में उसने फिलीस्तीन के एक कट्टरपंथी संगठन को उदारवादी फिलिस्तीन नेताओं के विरोध में खड़ा कर दिया। इसको नाम दिया गया हमास। हालांकि, हमास की औपचारिक स्थापना 1987 में मानी जाती है।

इजराइल के पूर्व जनरल यित्जाक सेजेव ने कहा था- जहर से जहर मारने की यह नीति एक ऐतिहासिक गलती थी। इजराइली सरकार ने मुझे हमास के लिए बजट भी दिया था। इसका अफसोस हमें आज भी है। सेजेव 1980 के दशक में गाजा के गवर्नर भी रहे।

हमास ने फिलिस्तीन के लिबरल लीडरशिप को धीरे-धीरे किनारे कर दिया और खुद फिलीस्तीन आंदोलन का झंडाबरदार बन गया। इसमें 90% युवा फिलिस्तीनी हैं। हमास को तुर्किये और कतर से फंडिंग मिलती है।

हमास के एक नेता खालिद मेशाल ने तो कतर में इसका दफ्तर भी खोला था। ईरान भी हमास को हथियार और पैसा देता है। हालांकि, ईरान शिया मुल्क है, जबकि अरब वर्ल्ड सुन्नी है।

सोशल मीडिया पर सामग्री को लेकर दबाव नहीं बना पाएगी बाइडन सरकार

वाशिंगटन, 5 जुलाई (एजेंसियां)। संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अदालत ने फैसला सुनाया कि बाइडन प्रशासन सोशल मीडिया पर मौजूद किसी भी सामग्री के लिए दबाव नहीं डाल सकता और न नियंत्रित कर सकता है। कोर्ट ने प्रशासन को कंपनियों से दूर रहने के आदेश दिए हैं। न्यायाधीश टेरी डौटी ने लुइसियाना और मिसौरी में रिपब्लिकन अटॉर्नी जनरल द्वारा दायर एक शिकायत के जवाब में यह आदेश दिया। याचिकाकर्ताओं ने बाइडन प्रशासन पर सोशल मीडिया कंपनी फेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब जैसी कंपनियों पर सेंसरशिप लगाने का आरोप लगाया था। मुकदमा मूल रूप से मिसौरी के अटॉर्नी जनरल एरिक श्मिट और लुइसियाना अटॉर्नी जनरल जेफ लैंड्री द्वारा दायर किया गया था। उन्होंने बाइडन प्रशासन पर आरोप लगाया गया था कि बाइडन प्रशासन के सरकारी अधिकारी गलत सूचनाओं पर अंकुश लगाने की आड़ में रूढ़िवादी सोच को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के साथ मिलीभगत कर रहे है।

प्रचंड गर्मी के साथ कई शहरों में बाढ़ का प्रकोप

राष्ट्रपति शी ने अफसरों को दिए निर्देश

बीजिंग, 5 जुलाई (एजेंसियां)। चीनी अधिकारियों ने आने वाले महीनों में गर्मी के चरम पर पहुंचने और अन्य आपदाओं की चेतावनी दी है। मौजूदा समय में भारी बारिश के कारण चीन को काफी ज्यादा नुकसान पहुंचा है। हजारों लोगों को अपने घरों को छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाना पड़ा।

जिनपिंग का निर्देश

बाढ़ के कारण चीन को काफी ज्यादा नुकसान पहुंचा है, जिसके बाद चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने सरकारी अधिकारियों को सुरक्षा और संपत्ति को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए हैं। जिनपिंग ने राज्य बाढ़ नियंत्रण और आपातकालीन प्रबंधन और जल संसाधन मंत्रालयों को एक साथ मिलकर समन्वय और परामर्श के साथ काम करने को कहा है।

भारी बारिश के कारण शहरों में अलर्ट जारी

चीनी मीडिया के अनुसार मध्य और दक्षिण-पश्चिमी चीन में भारी बारिश के कारण मंगलवार को अलर्ट जारी किया गया था। मौसम विभाग ने जुलाई में बाढ़, आंधी और उच्चतम तापमान जैसी कई प्राकृतिक आपदा की चेतावनी दी है। मंगलवार को मूसलाधार बारिश के कारण महानगर चोंगकिंग में एक रेलवे पुल क्षतिग्रस्त हो गया। पुल को ठीक करने के लिए 400 से अधिक आपातकालीन कर्मियों को भेजा गया। बारिश के कारण सिचुआन में 460,000 लोग प्रभावित हुए हैं। अधिकारी ने बताया कि मध्य हेनान प्रांत में बाढ़ के कारण 10,000 लोगों को उनके घरों से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। बाढ़ में 2,000 से भी ज्यादा घर क्षतिग्रस्त हो गए। शान्शी प्रांत में मुसलाधार बारिश के कारण दर्जनों घर और सड़क बर्बाद हो गए। वैज्ञानिकों ने बढ़ते तापमान का मुख्य कारण जीवाश्म ईंधन को बताया है। उन्होंने कहा कि ये ईंधन दुनिया भर में मौसम की स्थिति को खराब कर रहा है। पिछले कुछ हफ्तों में कई देशों ने घातक गर्मी का अनुभव किया है।

चीन में भारी गर्मी के बीच बाढ़ आई हुई है। राष्ट्रीय मौसम विभाग ने राजधानी बीजिंग के निवासियों को 35 डिग्री तापमान के साथ घरों के भीतर रहने की चेतावनी दी है। चीन में इस साल हर महीने औसतन 4.1 दिन तापमान दर्ज किया गया है। चीनी मीडिया के अनुसार जून में बीजिंग में 14 दिनों तक तापमान 35 डिग्री से अधिक रहा तो यह जुलाई 2000 के रिकॉर्ड की बराबरी कर लेगा।

बीते पांच दिनों में 200 से अधिक लोग मारे गए

काबुल, 5 जुलाई (एजेंसियां)। अफगानिस्तान में बढ़ते सड़क हादसों में पिछले पांच दिनों में 200 से अधिक की जान गई और घायल हुए। ट्रैफिक पुलिस विभाग की रिपोर्ट का हवाला देते हुए अफगानिस्तान की मीडिया ने यह जानकारी दी। ट्रैफिक पुलिस विभाग के वित्तीय एवं प्रशासनिक निदेशक ने कहा कि पिछले तीन महीनों में देशभर में बिना दस्तावेज वाली करीब 3,00,000 कारों का पंजीकरण किया। यातायात पुलिस विभाग में नीति प्रमुख अब्दुल वोदोद खिरखाह ने कहा, पिछले कुछ दिनों में देशभर में लगभग 66 लोगों की मौत हो गई है और 132 घायल हो गए हैं। यातायात के नियमों का पालन नहीं करते है। जिसकी वजह से ज्यादातर असुरक्षित लोग शहरों से हैं।

फ्रांस में गिरफ्तारियों का दौर जारी

सातवें दिन हिंसा में कमी का दावा, अब घर-घर तलाशी, 45 हजार पुलिसकर्मी तैनात

पेरिस, 5 जुलाई (एजेंसियां)। फ्रांस में राजधानी पेरिस के करीब नेन्तेरे शहर में एक हफ्ते से जारी हिंसा में कमी आने लगी है। होम मिनिस्ट्री के मुताबिक- सोमवार और मंगलवार की दरमियानी रात पुलिस ने डोट टू डोर सर्च ऑपरेशन चलाया। इस दौरान 157 और लोगों को हिरासत में लिया गया। मंगलवार को राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने 250 मेयर के साथ मीटिंग की। इस दौरान हालात की समीक्षा की गई।

पांच हजार और पुलिसकर्मियों को नेन्तेरे शहर में तैनात किया गया है। अब यहां तैनात पुलिसकर्मियों की तादाद 45 हजार हो गई है। पुलिस के मुताबिक- हिंसा में कुल 159 गाड़ियों को आग लगाई गई। इसके अलावा 202 जगह आगजनी की गई। ऑपरेशन के दौरान 4 पुलिसवाले घायल हुए हैं। यहां 27 जून को 17 साल के रिफ्यूजी को पुलिस ने ट्रैफिक रूल्स तोड़ने के आरोप में गिरफ्तार करने की कोशिश की थी। उसने भागने की कोशिश की तो पुलिस ने गोली मार दी। लड़के की मौत के बाद नेन्तेरे में दंगा भड़क उठा। फ्रांस के सभी शहरों के मेयर ने सोमवार को अपने-अपने शहरों में रैली निकाली। इस दौरान लोगों से अमन बनाए रखने की अपील की गई। मंगलवार को प्रेसिडेंट एमैनुएल मैक्रों ने 220 मेयर से मुलाकात भी की। इस दौरान कहा- सरकार इस मामले की तह तक जाने के लिए जांच करा रही है। हम चाहते हैं कि आगे इस तरह की कोई घटना न हो। हिंसा करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। जांच के बाद उन्हें सजा दिलाएंगे। फ्रांस में 14 जुलाई को नेशनल डे मनाया जाएगा। इस दिन बैस्टिल डे परेड का आयोजन किया जाएगा, जिसमें पीएम मोदी को चीफ गेस्ट के तौर पर न्योता दिया गया है। हिंसा के बीच सरकार ने पूरे फ्रांस में ओवरनाइट बस और ट्राम सर्विस बंद कर दीं थीं। कई दुकानों में लूटपाट भी की गई है। 28 जून को फ्रांस में सांसदों ने नेशनल असेंबली में एक मिनट का मौन रखा था। प्रधानमंत्री एलिजाबेथ बॉर्न ने कहा- गोलीबारी की यह घटना साफ तौर पर नियमों का उल्लंघन है। पीड़ित परिवार ने घटना में शामिल अधिकारियों के खिलाफ हत्या, हत्या में साथ देने और झूठी गवाही को लेकर शिकायत दर्ज कराई है। घटना मंगलवार यानी 27 जून की है। सड़क पर दो पुलिस अफसरों ने यलो रंग की कार को रोका। बहस के दौरान पुलिस अफसर ने पिस्टल निकाली और ड्राइवर नाहेल के सिर में गोली मार दी। ड्राइवर ने कार तेजी से दौड़ाई जो कुछ दूर जाकर क्रैश हो गई। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया कि कार ड्राइवर की उम्र 17 साल थी और उसके पास ड्राइविंग लाइसेंस नहीं था।

कुछ दूसरी रिपोर्ट्स के मुताबिक पुलिस ने इस कार का पीछा किया और उसे रोक लिया। ये बात वीडियो में भी नजर आती है।

एक हाथी बना श्रीलंका के लिए 'राष्ट्रीय शर्म' की बात!

कोलंबो, 5 जुलाई (एजेंसियां)। थाईलैंड ने दो दशक पहले श्रीलंका को एक हाथी उपहार के रूप में दिया था। बीते रविवार को उस हाथी को वापस थाईलैंड भेज दिया गया। तब से यहां लोग इस घटना को श्रीलंका के लिए 'राष्ट्रीय शर्म' की बात बता रहे हैं। यह चर्चा आम है कि श्रीलंका एक हाथी की भी देखभाल नहीं कर पाया।

श्रीलंका की संसद में सांसद डुलास अलाहापेरुमा ने कहा- 'हाथी के साथ जैसा व्यवहार हुआ, उससे एक देश और यहां के नागरिक के रूप में हम शर्मिंदा हैं।' उन्होंने कहा- 'इस मामले में कई गलतियां हुईं। पहली गलती तो यह थी कि हाथी को अलुथगामा केंडे विहारा को दे दिया गया। जब वहां हाथी के साथ हो रहे दुर्व्यवहार की खबर आई और हाथी जख्मी हो गया, तो उसकी शिकायत वन्य जीव अधिकारियों से की गई। लेकिन उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की। इसी वजह से पशु अधिकार कार्यकर्ताओं ने थाई दूतावास से शिकायत की।'

खबरों के मुताबिक थाई अधिकारियों को जब हाथी के बदहाल होने की खबर मिली, तो उन्होंने उसे वापस अपने देश ले जाने के लिए दबाव बनाया। इस हाथी को साल 2001 में थाईलैंड ने तत्कालीन राष्ट्रपति चंद्रिका कुमारतुंगा को भेंट किया था। तब हाथी इस आपसी समझदारी के साथ श्रीलंका लाया गया था कि टेंपल ऑफ टूथ में होने वाले वार्षिक समारोह के दौरान इस हाथी पर रखकर उस कास्केट को लाया जाएगा, जिसके बारे में मान्यता है कि उसमें भगवान बुद्ध के अवशेष रखे हुए हैं।

भाजपा महिला कार्यकर्ताओं की पुलिस के साथ धक्का-मुक्की; 2 बेहोश

थाली बजाते हुए सीएमआर घेरने निकली थीं महिलाएं; पुलिस ने बैरिकेड्स लगा कर रोका

जयपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। गहलोत सरकार के खिलाफ आज बीजेपी महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं ने थाली बजाकर प्रदर्शन किया। थाली बजाते हुए महिलाओं ने सीएमआर की ओर कूच किया। लेकिन, पुलिस ने महिलाओं को सिविल लाइंस फाटक पर बैरिकेड्स लगाकर रोक दिया। महिलाओं ने बैरिकेड्स लांघ कर आगे जाने की कोशिश की। इस पर महिला कार्यकर्ताओं और महिला पुलिस के बीच धक्का-मुक्की हो गई। इसमें दो महिला कार्यकर्ता बेहोश हो गईं।

आज के प्रदर्शन के लिए सुबह 11 बजे सभी महिला कार्यकर्ता प्रदेश भाजपा मुख्यालय पर एकत्रित हुईं। यहां एक सभा का आयोजन किया गया। इसे महिला मोर्चा की पदाधिकारियों और प्रदेश भाजपा के नेताओं ने संबोधित किया। उसके बाद महिला कार्यकर्ताओं ने थाली बजाते हुए

सीएमआर की ओर कूच किया।

महिलाओं को रोकने के लिए सिविल लाइंस फाटक से पहले बड़ी संख्या में पुलिस जाब्ता तैनात किया गया था।

दीया कुमारी बोलीं- राजस्थान को कहा जा रहा रेपिस्थान

इससे पहले महिला मोर्चा की प्रभारी व सांसद दीया कुमारी ने कहा- आज राजस्थान बलात्कार के मामले में नम्बर-1 पर है। लोग इसे राजस्थान की जगह रेपिस्थान कह रहे हैं। यह हमारे लिए शर्म की बात है। कानून व्यवस्था का जिम्मा राज्य सरकार के पास है। गृह विभाग मुख्यमंत्री ने अपने पास रखा हुआ है। लेकिन, वे साढ़े चार साल अपनी कुर्सी बचाने में ही लगे रहे। ऐसे में प्रदेश की महिलाएं सरकार से जिस संरक्षण की उम्मीद लगाए बैठी थीं, वह उन्हें कभी मिला ही नहीं। लेकिन, अब बहुत देर हो चुकी है। प्रदेश की महिलाएं इस सरकार को सबक सिखाने की ठान चुकी हैं।

किसान और युवाओं के मुद्दों पर भी होगा प्रदर्शन

महिला अत्याचार के खिलाफ आज के प्रदर्शन के बाद बीजेपी किसान और युवाओं के मुद्दों को लेकर भी प्रदर्शन करेगी। 12 जुलाई को झुंझुनूं में बीजेपी किसान सम्मेलन का आयोजन करेगी। इसमें वे किसान शामिल होंगे, जिन्होंने राष्ट्रीयकृत बैंक, ग्रामीण बैंक से लोन ले रखा है। जिनका कर्ज आज तक माफ नहीं हुआ। कर्ज नहीं चुकाने पर जिन्हें कुर्की का नोटिस मिल चुका है या फिर जिनके खाते एनपीए हो गए हैं।

बीजेपी 18 जुलाई को अजमेर में युवाओं के मुद्दों को लेकर सरकार के खिलाफ बड़ा प्रदर्शन करेगी। इसमें पेपर लीक और बेरोजगारी के मुद्दे पर सरकार को घेरा जाएगा।

कन्हैया लाल हत्याकांड में पूर्व मंत्री का गृह मंत्री को जवाब

जितेंद्र सिंह बोले- शाह और बालकनाथ बताएं केंद्र की सेना तैनात थी, जिसने आरोपियों को पकड़ा

अलवर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। राजस्थान के उदयपुर में एक साल पहले हुए कन्हैयालाल हत्याकांड में सियासत तेज हो गई। उदयपुर में अमित शाह ने इस हत्याकांड को लेकर सरकार पर सवाल उठाए थे।

इसी का जवाब अब पूर्व मंत्री जितेंद्र सिंह ने दिया है। वे बोलेञ घटना के कुछ देर बाद ही नाकाबंदी हो गई थी। राजस्थान पुलिस ने 30 से 40 किलोमीटर दूरी पर बदमाशों को दबोच लिया था। राजस्थान पुलिस ने मजबूत चार्जशीट बनाई है। इसी आधार पर कोर्ट सख्त से सख्त सजा देगा। लेकिन, यहां बीजेपी के नेता अमित शाह व सांसद बालकनाथ मना चाहे जो बोल देते हैं। उनसे पूछना चाहूंगा कि बीजेपी के नेता बताएं कि कन्हैयालाल हत्याकांड को राजस्थान पुलिस ने नहीं पकड़ा तो किसने पकड़ा।

क्या यहां कोई केंद्र की फौज पहले से तैनात थी ? प्रदेश की पुलिस का अच्छा काम रहा है, जो

सीखने वाला है।

खुद के विधानसभा चुनाव लड़ने पर कहा

पूर्व मंत्री ने खुद के अलवर शहर विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने के सवाल पर कहा कि यह पार्टी तय करती है। पार्टी जिसे चुनाव लड़ेगी वही लड़ेगा। पूर्व मंत्री ने साफ शब्दों में नहीं कहा कि आने वाले विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। हालांकि उन्होंने प्रदेश सरकार के कार्यों की तारीफ की। यह भी कहा कि कांग्रेस पार्टी के काम के बदले चुनाव जीतने की बात की है।

वे बोले- अब हर ब्लॉक में सम्मेलन किए जाएंगे। ताकि अधिक से अधिक जनता के बीच सरकार के कार्य पहुंच सके। अभी प्रदेश में कांग्रेस के पक्ष में माहौल है। जनता ही सरकार को चाहती है। महंगाई राहत कैंप ऐतिहासिक है। पूरे देश में राजस्थान पहला राज्य है। जहां गरीब व आमजन के लिए ऐसा कार्यक्रम चलाया है।

सरकार के काम भी अच्छे हैं। अब पार्टी गांव-देहात व शहरों में आमजन से संपर्क साधेगी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के कन्हैयालाल हत्याकांड वाले बयान पर अल्पसंख्यक मामलात मंत्री शाले मोहम्द ने बयान देते हुए बताया कि ये सब राजस्थान में चुनाव से पहले के काम है। जबकि सबको पता है कि राजस्थान की पुलिस ने अलर्ट होकर सबसे पहले कन्हैयालाल के हत्यारों को तुरंत पकड़ा था। एनआईए तो इस मामले में बाद में आई है। शाले मोहम्मद ने कहा कि ये भी सबको पता है कि कन्हैयालाल के हत्यारे बीजेपी के किस संगठन से जुड़े थे और वे उसमे किस पद पर थे। ये सब एक साजिश भी हो सकती है। अब चूंकि राजस्थान में चुनाव आने वाले हैं इसलिए बीजेपी के पास कोई मुद्दा ही नहीं है जिस पर सरकार को घेरे। बस वे ऐसे झूठे बयान देकर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं।

शाले मोहम्मद ने कहा कि राजस्थान की जनता अब किसी भी भ्रम में नहीं आने वाली है। प्रदेश सरकार की इतनी सारी जनकल्याण कारी योजनाओं को देखते हुए और कांग्रेस के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के जनता के हितों के कामों पर गौर करते हुए जनता सरकार को रिपिट कर रही है।

बीजेपी वाले इसी बता से बौखलाए हुए हैं। उनके पास अब जनता में जाकर बोलने लायक कोई मुद्दा ही नहीं बचा।

राजस्थान की बेटी प्रिया का हुआ टीम इंडिया में सिलेक्शन

बांग्लादेश के साथ होने वाली वनडे सीरीज में खेलेगी पूनिया

जयपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। बीसीसीआई ने बांग्लादेश खिलाफ खेले जाने वाली वनडे सीरीज लिए भारतीय महिला टीम का ऐलान कर दिया है। इसमें राजस्थान की बेटी प्रिया पूनिया का भी सिलेक्शन हुआ है। बता दें कि भारतीय टीम का बांग्लादेश दौरा 9 जुलाई से शुरू होगा। इसमें 9, 11 और 13 जुलाई को शुरुआती तीन टी20 मैच खेले जाएंगे। वहीं 16, 19 और 22 जुलाई को वनडे मैच खेले जाएंगे। टीम इंडिया के सभी मैच मीरपुर में ही आयोजित होंगे।

बता दें कि क्रिकेटर प्रिया का जन्म 6 अगस्त 1996 को राजस्थान के चूरू जिले की राजगढ़ तहसील के गांव जणाऊ खारी में हुआ। प्रिया की मां सरोज पूनिया का कोरोना महामारी के दौरान के निधन हो गया। प्रिया का भाई राहुल पुनिया भी क्रिकेटर बनना चाहता है। वहीं प्रिया के पिता सुरेंद्र पूनिया भारतीय सर्वेक्षण विभाग में कार्यरत है।

अपनी बेटी के टीम इंडिया में सिलेक्शन पर सुरेंद्र पूनिया ने खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि प्रिया के बांग्लादेश सीरीज में सिलेक्शन के बाद पूरे परिवार में खुशी का माहौल है। हम सब को पूरी उम्मीद है कि बांग्लादेश के साथ होने वाले मैच में प्रिया शानदार परफॉर्म करेगी। प्रिया ना सिर्फ अपने बल्ले से ढेरों रन निकलेंगे।

विराट कोहली से मिलती-जुलती है प्रिया की कहानी

प्रिया के पिता सुरेंद्र पूनिया ने बताया कि 2 साल पहले प्रिया की मां सरोज कोरोना संक्रमण के कारण हॉस्पिटल में एडमिट थीं। उनका ऑक्सीजन लेवल कम हो गया। जिसके बाद उनकी मौत हो गई। मौत से पहले प्रिया को उनकी मां ने वॉट्सऐप मैसेज किया था कि वह इंग्लैंड टूर को न छोड़ें और टीम के साथ जुड़ें।

सुरेंद्र ने बताया कि उस वक्त मैंने प्रिया को प्रेरित किया। उसे बताया कि विराट कोहली अपने पिता की मौत के बाद रणजी खेलने के लिए गए थे। मुझे पता है यह वक्त हमारे लिए काफी कठिन है। लेकिन मानसिक रूप से मजबूत होने की जरूरत है। जीवन में कई ऐसे मौके आएंगे। जब आपको चुनौतियों से लड़कर आगे बढ़ना होगा। इसके बाद प्रिया अपनी मां के सपने को पूरा करने के लिए टीम इंडिया के साथ इंग्लैंड टूर पर गई थी।

हालांकि मूल रूप से राजस्थान की प्रिया पूनिया पिछले 2 साल से राजस्थान क्रिकेट एशोशिएशन से NOC लेकर कर्नाटक से क्रिकेट खेल रही है। इसके साथ ही आज सोशल मीडिया पर भी खासी सक्रीय रहती है। इंस्टाग्राम पर उन्हें 5 लाख से ज्यादा फॉलोवर्स है।

पूर्व विधायक के भतीजे के घर एनआईए का छापा

नागौर में टीम का बासनी में सर्च ऑपरेशन; आतंकी संगठन से जुड़ा मामला

नागौर, 5 जुलाई (एजेंसियां)।नागौर में मंगलवार को नेशनल इंवेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) ने शहर के पास बासनी में छापा मारा। इस दौरान महाराष्ट्र पुलिस की टीम भी उनके साथ रही। यह छापा कांग्रेस के पूर्व विधायक और मंत्री हबीबुर्रहमान के भतीजे और बासनी के पूर्व सरपंच मोहम्मद जिन्ना के बेटे मोहसिन के घर पड़ा।

इससे पहले टीम सुबह 7 बजे जिन्ना के घर पहुंची और उनसे उनके बेटे के घर के बारे में जानकारी ली। जिन्ना ही उन्हें मोहसिन के घर तक लेकर गया। टीम ने यहां आते ही सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया। पूरी जांच के दौरान मोहसिन नदारद रहा। दोपहर करीब 1.30 बजे तक यह सर्च ऑपरेशन चला। सूत्रों के अनुसार पिछले दिनों महाराष्ट्र में गिरफ्तार हुए आईएसआई एजेंट के मोबाइल नंबर से मोहसिन के लिंक होने की आशंका है। मोहसिन की लंबी बातचीत भी हुई थी।

इसी आधार पर टीम ने यहां सर्च ऑपरेशन चलाया। इसके अलावा प्रतिबंधित संगठन पीएफआई से भी मोहसिन के जुड़े होने की पड़ताल की जा रही है। हालांकि मामले में टीम ने किसी की गिरफ्तारी नहीं की। टीम मामले की पड़ताल में जुटी है।

मोहसिन के विदेशी संपर्कों को खंगाला जा रहा है। मोहसिन के घर पर ताला लगा हुआ मिला। आसपास के लोगों से भी उसको लेकर कोई जानकारी नहीं मिली।

मनी लॉन्ड्रिंग की भी जांच की भी आशंका

एनआईए की टीम ने यहां मोहसिन के मोबाइल से लेकर दस्तावेजों की गहनता से जांच की। हालांकि टीम के हाथ क्या लगा इसको लेकर अभी जानकारी नहीं दी गई है। सूत्रों के अनुसार मोहसिन के अहले हदीस नाम की धार्मिक संस्था से जुड़े होने की आशंका है। उसका नाम मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में भी जुड़ा होने की जांच की जा रही है।

'मंत्री जाहिदा खान से मेरे 3 लाख रुपए दिला दो'

शिक्षा राज्य मंत्री के खिलाफ लगे पोस्टर, ट्रांसफर के नाम पर टीचर्स से वसूली का आरोप

जयपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। जयपुर स्थित प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर रातों-रात लगे पोस्टरों पर यही लाइनें लिखी गई हैं। ये पोस्टर हैंडरिटेन हैं। पढ़ने से ऐसा लग रहा है, जैसे कि शिक्षकों ने अपनी पीड़ा जाहिर की है। तबादलों के नाम पर भ्रष्टाचार करने और लाखों रुपए लेने के आरोप शिक्षा राज्य मंत्री जाहिदा खान पर लगाए गए हैं। पोस्टर किसने लगाए हैं, इसकी जानकारी नहीं है।

उधर, मंगलवार सुबह प्रदेश मुख्यालय पहुंचे कर्मचारियों ने इन पोस्टर्स को देखा तो होश उड़ गए। उन्होंने कांग्रेस के बड़े नेताओं को इसकी सूचना दी। आनन-फानन में ये पोस्टर हटवाए गए। फिलहाल जाहिदा खान का इसको लेकर किसी तरह का कोई बयान सामने नहीं आया है।

दिनभर रहती है चहल-पहल

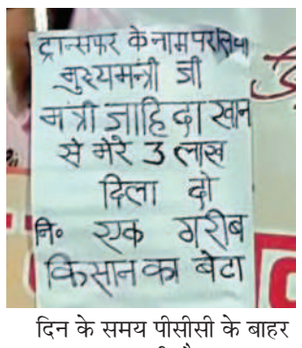

दिन के समय पीसीसी के बाहर चहल-पहल रहती है। आसपास कई दुकानें हैं। इनमें सीसीटीवी हैं। रात के समय दुकानें बंद रहती हैं। इसलिए पोस्टर लगाने के लिए रात का समय चुना गया। पोस्टर लगाने वाले ने खुद को दुखी शिक्षक लिखा है। कहीं गरीब किसान का बेटा लिखा है।

पोस्टर्स में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा से अपील करते हुए लिखा गया है- मंत्री जाहिदा खान से मेरे 3 लाख रुपए दिला दो। दूसरे पोस्टर में लिखा- प्रभारी रंधावा मंत्री जाहिद खान से हमारे पैसे दिलवा दो। तीसरे पोस्टर में लिखा है- राजस्थान सरकार की सबसे भ्रष्ट मंत्री जाहिदा खान विधायक कामां हैं। निवेदक दुखी शिक्षक।

शिक्षा राज्य मंत्री जाहिदा खान ने खुद के खिलाफ लगाए पोस्टर्स को राजनीतिक षडयंत्र बताया है। जाहिदा ने कहा- पीसीसी मुख्यालय पर अज्ञात व्यक्तियों लोगों ने पोस्टर लगाए गए है, पोस्टर में न तो किसी का नाम जारी किया गया और न कोई व्यक्ति सामने आया है। यह एक राजनीतिक षड्यंत्र है। चुनाव नजदीक आता देख कांग्रेस विरोधी लोग इस तरह का स्टंट कर रहे हैं। यह मेरी राजनीतिक छवि को धूमिल करने की कोशिश है। इस मामले में FIR दर्ज करवाई जा रही है ताकि इस तरह की हरकत करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा सके।

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय के बाहर मंत्री-नेताओं के खिलाफ पहले भी पोस्टर लगते रहे हैं। पिछले विधानसभा चुनाव के दौरान टिकट वितरण के समय असंतुष्ट नेताओं ने भी कांग्रेस मुख्यालय में पोस्टर लगाए थे। पोस्टर्स पर पैसे लेकर टिकट देने के आरोप लगाए गए थे। कुछ दिन पहले जलदाय मंत्री महेश जोशी के खिलाफ एक युवक ने पीसीसी मुख्यालय में धरना दिया था। उस युवक ने महेश जोशी पर भी पैसे को लेकर आरोप लगाए थे। बाद में मामला थाने तक पहुंचा था और मुकदमा दर्ज करवाया था।

शिक्षा विभाग में तबादलों को लेकर विवाद नई बात नहीं है। हर सरकार के समय शिक्षक तबादलों को लेकर विवाद होते रहे हैं।

स्कूल से भागी छात्रा-महिला टीचर को चेन्नई से पकड़ा

वीडियो जारी कर बोली थीं- एक-दूसरे से प्यार है, अलग नहीं रह सकतीं

बीकानेर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। बीकानेर के श्रीडूंगरगढ़ के प्राइवेट स्कूल से गायब हुई नाबालिग लड़की और उसकी टीचर को आखिरकार बीकानेर पुलिस ने पकड़ लिया है। ये दोनों एक जुलाई को सुबह साढ़े सात बजे श्रीडूंगरगढ़ में अपने घर से स्कूल के लिए निकली थीं, लेकिन दोनों घर ही नहीं लौटीं।

बीकानेर एसपी तेजस्वीनी गौतम ने बताया- दोनों को चेन्नई से पकड़ा गया है। दोनों को ढूंढने में बीकानेर पुलिस के साथ चेन्नई पुलिस की सबसे बड़ी भूमिका रही। कहां से और कैसे पकड़ी गई? इस सवाल पर गौतम ने कहा- फिलहाल इस बारे में कुछ नहीं बता सकते। इतना तय है कि चेन्नई पुलिस ने ही दोनों को पकड़ा है। दोनों सुरक्षित हैं। बीकानेर पुलिस जल्द ही इन्हें लेकर आएगी। श्रीडूंगरगढ़ के एजी पब्लिक स्कूल में पढ़ाने वाली नीधा बहलीम एक जुलाई को स्कूल आने के बजाय अपनी ही एक नाबालिग स्टूडेंट के साथ कस्बे से निकल गई थीं। शाम तक दोनों के घरवालों ने तलाश लेकिन, तब तक ये काफी दूर निकल चुके थे। ऐसे में तुरंत पकड़ा नहीं जा सका। एक दिन बाद दो जुलाई को बीकानेर पुलिस को इसकी जानकारी दी गई केस दर्ज कराया गया। हालांकि, तब तक दोनों राजस्थान से बाहर निकल गई थीं।

इस बीच तीन जुलाई को दोनों ने यूट्यूब पर एक वीडियो जारी किया था। इसमें अपनी मर्जी से घर छोड़ने की बात कही। नाबालिग लड़की ने भी वीडियो में कहा- वो किसी के दबाव में नहीं बल्कि अपनी मर्जी से टीचर के साथ आई हैं। वीडियो में वे कह रही हैं कि- हम दोनों एक दूसरे से प्यार करती हैं और एक-दूसरे के बगैर जी नहीं सकती। नाबालिग लड़की के परिजनों का आरोप है कि ये सब दबाव में कहा गया है।

नाबालिग है लड़की

एसपी तेजस्वनी गौतम ने कहा कि लड़की साढ़े सत्रह साल की है। नाबालिग होने के कारण ही इस संबंध में एफआईआर दर्ज की गई है। घटना के विरोध में सोमवार और मंगलवार को बाजार बंद रहे। बाजार के व्यापारी भी इस घटना के बाद से आक्रोशित हैं। ऐसे में वो भी दुकानें बंद रख रहे हैं। बीकानेर एसपी ने इस पूरे मामले में पुलिसकर्मियों की मेहनत को सराहा। उन्होंने कहा- मैं स्वयं इस मामले की छानबीन के चलते तीन दिन से सोई नहीं हूं। हमारे पुलिसकर्मियों ने इन दोनों को पकड़ने के लिए खूब मेहनत की है।

बाड़मेर हाईवे पर फिर जानलेवा हादसा

ट्रेलर में घुसी कार, ड्राइवर की मौत, 2 दिन पहले यही गई थी 5 दोस्तों की जान

जोधपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। जोधपुर से बाड़मेर जाने वाले हाईवे पर सड़क हादसे रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। मंगलवार देर रात को एक और सड़क हादसा हुआ जिसमें कार चालक की मौके पर ही मौत हो गई। 2 दिन पहले ही एक जीप और बस की टक्कर में पांच बुजुर्ग दोस्तों की भी जान चली गई थी।

बोरानाडा थाना पुलिस के अनुसार उत्तेसर निवासी थानाराम अपनी कार से जोधपुर से बालोतरा की ओर जा रहा था। बोरानाडा औद्योगिक क्षेत्र से थोड़ा आगे निकलने पर भांडुप गांव के

निकट उसकी कार अनियंत्रित होकर सामने से आ रहे ट्रेलर में जा घुसी।

हादसा इतना भी भक्त था कि कार पूरी तरह से ट्रेलर के नीचे फंस गई। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और कड़ी मशक्कत के बाद शव को बाहर निकाला गया। हादसे के बाद ट्रेलर और कार दोनों ही घसीटते हुए सड़क से नीचे उतर गए। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सुपुर्द किया है।

जोधपुर से बालोतरा जाने वाली सड़क पर भांडू गांव के निकट एक्सीडेंट प्रॉन का बड़ा जोन है। 2 दिन पहले भी इसी सड़क पर एक जीप और बस की टक्कर में 5 जनों की मौत हो गई थी। इसी स्पॉट के आसपास पिछले एक हफ्ते में यह तीसरा हादसा है। इससे पहले भी इसी क्षेत्र में कई सड़क हादसे हो रखे हैं।

रोडवेज बस की टक्कर से कार सवार की मौत

बूंदी, 5 जुलाई (एजेंसियां)। हिंडोली में एनएच-52 पर गैस गोदाम के पास मंगलवार को एक तेज रफ्तार रोडवेज बस की टक्कर से कार सवार की मौत हो गई। बूंदी से आ रही रोडवेज बस का टायर फटने से अनियंत्रित हो गई और डिवाइडर को क्रॉस करते हुए सड़क की दूसरी साइड में सामने से आ रही कार से टक्करा गई। बस और कार की भिड़ंत में कार सवार की मौत हो गई। बस और कार की टक्कर इतनी जबरदस्त थी की कार के आगे का हिस्सा बुरी तरह डेमेज हो गया। टायर फटने से बस का बैलेंस बिगड़ गया। तेज स्पीड बस ड्राइवर के कंट्रोल से बाहर हो गई और डिवाइडर को क्रॉस करते हुए दूसरी तरफ की सड़क पर सामने से आ रही कार से टकरा गई।

जयपुर में बड़ी बेटी की हत्या कर मां का सुसाइड

2 साल की छोटी बेटी को भी फंदे पर लटकाया, परिवार ने बचाया

जयपुर, 5 जुलाई (एजेंसियां)। जयपुर में देर रात एक महिला अपनी चार साल की बेटी की हत्या कर खुद फंदे पर लटक गई। वहीं, दो साल की बच्ची भी फंदे पर लटकी मिली। उसे समय रहते बचा लिया गया। घटना कालवाड़ थाना इलाके की है। पुलिस और एफएसएल की टीम ने शवों को कांवटिया अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया।

कालवाड़ थाना सीआई रविन्द्र प्रताप सिंह ने बताया- मंगलवार रात 9 बजे पुलिस कंट्रोल रूम से सूचना मिली कि निठरवालों की ढाणी के रामला का बांस गांव में एक महिला ने बच्चों के साथ सुसाइड कर लिया है। मौके पर सुनीता देवी (30) पत्नी मुकेश निठरवाल और उसमा (4) मृत मिले। साथ ही बेटी तविशा (2) जिंदा मिली। एफएसएल की टीम को मौके पर बुलाया गया। एफएसएल की जांच होने के बाद शवों को कांवटिया अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया गया। मृतक सुनीता के माता-पिता की ओर से कालवाड़ थाने में ससुराल पक्ष के खिलाफ दहेज प्रताड़ना और हत्या करने की रिपोर्ट दी गई है। पुलिस ने मुकेश निठरवाल सहित अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

महिला के पति मुकेश निठारवाल ने पुलिस को बताया कि रात को पत्नी बच्चियों को लेकर एक कमरे में घुसी। रात करीब 8 बजे कमरे से बच्चियों के रोने की आवाज आई। जब काफी देर तक कमरा नहीं खुला तो परिवार के अन्य सदस्यों ने मिल कर दरवाजा तोड़ दिया। देखा तो सुनीता, उसमा और तविशा तीनों अलग-अलग फंदे से लटकी मिलीं।

तवीशा फंदे पर लटकी रो रही थी। तवीशा के गले में फंदा सही से नहीं लगा था। उसका हाथ भी फंसा हुआ था, इसलिए बच गई। उसे नीचे उतारा। साढ़े 8 बजे पुलिस को सूचना दी। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। रात 9 बजे पुलिस ने एफएसएल को घटना की जानकारी देकर मौके पर बुलाया। टीम ने रात 10 बजे मौके से सबूत एकत्रित किए।

जानकारी अनुसार, मां ने सबसे पहले उसमा को फंदे से लटका कर उसकी हत्या की। फिर तविशा को लटका कर खुद फंदे से लटक गई। तब तक सुनीता का पति कमरे का दरवाजा तोड़ कर अंदर घुस गया था।

पुलिस ने बताया- सुनीता और मुकेश की शादी साल 2018 में हुई थी। मुकेश टैक्सी चलाने का काम करता है। इन दोनों की दो बेटियां हैं। सुनीता के परिजनों का आरोप है कि पिछले कई सालों से मुकेश और उनके परिवार को लोग दहेज के लिए बेटी को प्रताड़ित और मारपीट किया करते थे।

इस संबंध में कई बार दोनों परिवारों के बीच बातचीत भी हुई। उसके बाद भी आए दिन बेटी पति की शिकायत करती थी। इन सभी प्रताड़ना से परेशान होकर सुनीता ने बच्चियों के साथ आत्महत्या की।

ऑपरेशन मुस्कान के माध्यम से बाल श्रम को खत्म करने का प्रयास : डीएस चौहान

सीपी ने ऑपरेशन मुस्कान के पोस्टर का अनावरण किया

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। ऑपरेशन मुस्कान की नौवीं समन्वय बैठक नेरेडमेट में राचकोंडा आयुक्त कार्यालय में आयोजित की गई। इस बैठक का उद्देश्य पुलिस विभाग द्वारा लापता बच्चों की पहचान करने और उन्हें उनके माता-पिता के पास वापस लाने व अनाथ बच्चों के पुनर्वास करना था। इसी दौरान सीपी डीएस चौहान ने ऑपरेशन मुस्कान के पोस्टर का अनावरण किया। इस कार्यक्रम के माध्यम से, लापता बच्चों का विवरण एकत्र किया जाता है और उनकी तस्वीरों वाला एक एलबम बनाया जाता है। इन विवरणों के साथ, विशेष टीमें आयुक्तालय के अधिकार क्षेत्र के सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंडों, भीड़-भाड़ वाले जंक्शनों, चौराहों, निर्माण स्थलों, होटलों, पुलों और फ्लाईओवरों का दौरा करेंगी। ये विशेष टीमें बच्चों की मुक्ति के लिए भी काम कर रही हैं। कार्यक्रम में कमिश्नर डीएस चौहान ने कहा कि जिन बच्चों को स्कूल में आराम से पढ़ाई करनी चाहिए उनका बचपन खराब करने वाली बाल तस्करी और बाल श्रम प्रथा को खत्म करने के लिए पुलिस विभाग पुरजोर प्रयास कर रहा है। कमिश्नर ने कहा कि हर साल कई छापे मारे गए और कई बच्चों को बचाया गया और कई मामले दर्ज किए गए। आयुक्त ने चेतावनी दी कि बाल तस्करी और बाल श्रम में शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

उन्होंने कहा कि ऑपरेशन मुस्कान कार्यक्रम को चलाने के लिए एक एसआई और चार पुलिस कांस्टेबलों की विशेष टीमें बनाई गई हैं। यह उल्लेख किया गया है कि यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए गए हैं कि प्रत्येक टीम में एक महिला स्टाफ सदस्य हो। बताया गया है कि चिन्हित बच्चों की फोटो सहित जानकारी चाइल्ड ट्रैक पोर्टल पर अपलोड की जाएगी। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन मुस्कान में चिन्हित एवं पकड़े गए बच्चों को 24 घंटे के अंदर संबंधित जिलों की बाल कल्याण समितियों को सौंप दिया जाएगा। बाल कल्याण समितियों द्वारा पाए गए बच्चों को उनके माता-पिता को सौंप दिया जाएगा, जो बच्चे उचित नहीं मिलेंगे आश्रय गृहों में रखा जाएगा पता, पाए गए बच्चों में से यदि कोई नशे का आदी है तो उसे इलाज के लिए नशा मुक्ति केंद्र भेजा जाएगा। इस कार्यक्रम के दौरान होटल, रेस्टोरेंट और ढाबों में बाल श्रमिक पाए जाने पर संबंधित नियोक्ता के खिलाफ बाल श्रम निषेध अधिनियम, श्रम निवारण अधिनियम आदि कानूनों का पालन करते हुए मामला दर्ज किया जाएगा। कार्यक्रम में कर्मचारियों को दर्पण मोबाइल एप्लिकेशन पर प्रशिक्षण देना शामिल था जिसका उपयोग अपराधियों और लापता बच्चों को ट्रैक करने के लिए किया जा सकता है। राचकोंडा के संयुक्त आयुक्त सत्यनारायण, एसएचआई टीम के एसीपी वेंकट रेड्डी, मानव तस्करी विरोधी इकाई के सीआई चंद्रबाबू, एसएसआईएलयू शंबैया, करुणाकर रेड्डी, एएसआई पुलिकंती श्रीनिवास राव, रंगारेड्डी जिला बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष नरेंद्र रेड्डी, मेडचल जिला बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष राजा रेड्डी, यादाद्री जिला बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष जयश्री, डॉ. कपूर, बाला रक्षा सदन और बचपन बचाओ संगठनों के प्रतिनिधियों, श्रम विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया।

इंदिरा द्वारा गरीबों को दी गई जमीनें सीएम केसीआर ने छीन लीं : वीएच

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। वरिष्ठ कांग्रेस नेता वी हनुमंत राव ने आज आरोप लगाया कि बीआरएस सरकार कांग्रेस शासन के दौरान प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी द्वारा गरीबों को दी गई जमीनों को "छीन" रही है। बुधवार को मीडियाकर्मियों से बात करते हुए, हनुमंत राव ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बीसी जनगणना कराने का वादा किया था और कहा कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अब तक बीसी के लिए कुछ नहीं किया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव ने वीआरओ (ग्राम राजस्व अधिकारी) प्रणाली को समाप्त कर दिया है और तहसीलदारों को बेरोजगार कर दिया है।

उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने अगले चुनाव में बीसी को प्राथमिकता देने का वादा किया था. उन्होंने मांग की कि प्रत्येक संसदीय क्षेत्र में बीसी को तीन विधानसभा सीटें आवंटित की जानी चाहिए और कहा कि राहुल गांधी का संदेश हर जिले तक ले जाया जाएगा। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि राज्य सरकार धरणी पोर्टल के माध्यम से किसानों के साथ अन्याय कर रही है। वीएच ने कहा कि वे बहुत जल्द बीसी गर्जना सभा आयोजित करेंगे और कहा कि कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को बैठक में आमंत्रित किया जाएगा।

यह कहते हुए कि तेलंगाना में भाजपा अतीत की बात है, उन्होंने कहा कि तेलंगाना में लोग अब कांग्रेस पार्टी की ओर देख रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि सीएम केसीआर ने तेलंगाना में किसानों की मृत्यु के बाद उन्हें कोई वित्तीय सहायता नहीं दी और कहा कि सीएम ने इसके बजाय बिहार और पंजाब राज्यों के किसानों को पैसा दिया।

वाटर वर्क्स के महाप्रबंधक से गोशामहल क्षेत्र में शुद्धजल समस्या की शिकायत

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। गोशामहल निर्वाचन क्षेत्र में शुद्धजल की आपूर्ति की कमी के कारण स्थानीय लोगों को गंभीर समस्याओं का सामना किये जाने की शिकायत गोशामहल बीआरएस नेता एम. आनंद कुमार गौड़ ने वाटर वर्क्स, रेड हील्स के महाप्रबंधक जॉन शरीफ से मुलाकात कर की। आनंद कुमार गौड़ ने उनका ध्यान दिलाया कि पड़ रहा है। आने वाले दिनों में बोनालू और अन्य त्योहारों के मद्देनजर लोगों को बिना किसी असुविधा के पानी की आपूर्ति करने के लिए एक समय निर्धारित करने को कहा गया। इस मुद्दे पर जीएम ने डीजीएम व प्रबंधकों के साथ बैठक की। जीएम ने कहा कि ऊपर से पर्याप्त पानी नहीं मिलने के कारण यह समस्या उत्पन्न हुई है। आनंद कुमार गौड़ ने कहा कि वह इस मामले को मंत्री तलसानी श्रीनिवास यादव और उच्च अधिकारियों के संज्ञान में ले जाएंगे और गोशामहल के लोगों की पानी की समस्या का समाधान करेंगे। आनंद कुमार गौड़ ने कहा कि कुछ स्थानीय भाजपा नेता गलत प्रचार कर रहे हैं कि गोशामहल निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा विधायक की मौजूदगी के कारण पानी की आपूर्ति नहीं हो रही है, जबकि उनके आरोप सही नहीं हैं। कार्यक्रम में जामबाग प्रभाग अल्पसंख्यक अध्यक्ष अहमद भाई ने भाग लिया।

सिखवाल युवा प्रकोष्ठ तेलंगाना व महिला प्रकोष्ठ द्वारा शोभायात्रा का भव्य स्वागत

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। सिखवाल युवा प्रकोष्ठ तेलंगाना व महिला प्रकोष्ठ द्वारा श्रृंगऋषि जयंती पर बेगम बाजार हैदराबाद व रंगरेज बाजार सिकंदराबाद पर संस्था के सभी सदस्यों द्वारा शोभायात्रा का सम्मान किया गया। साथ ही सिकंदराबाद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष नटवरलाल व्यास, मंत्री भागीरथ पांडेय व उपाध्यक्ष महेश व्यास का संस्था द्वारा सम्मान किया गया।

पीआरएसआई ने बाबजी को सेवाओं के लिए सम्मानित किया

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीआरएसआई) हैदराबाद चैप्टर ने बुधवार को यहां एक समारोह में वरिष्ठ पीआर व्यवसायी और 'पीआर वॉयस' के संपादक वाई. बाबजी को पेशेवर निकाय में उनके राष्ट्रीय महासचिव के रूप में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया। पीआरएसआई के महासचिव (2019-2023) के रूप में बाबजी की शानदार सेवाओं की सराहना करते हुए हैदराबाद चैप्टर के अध्यक्ष डॉ. एस. रामू ने कहा कि उन्होंने देश भर में पीआर और कॉर्पोरेट संचार पेशेवरों के लाभ के लिए निस्वार्थ सेवाएं प्रदान की हैं। जिस समृद्ध लोकतांत्रिक परंपरा में वे विश्वास करते थे, उसके अनुरूप, बाबाजी ने अपने दूसरे कार्यकाल के बाद पद से हटना पसंद किया। डॉ. रामू ने कहा कि बाबजी ने खुद को एक पूर्ण पीआर नेता के रूप में साबित किया। उन्होंने हैदराबाद चैप्टर के अध्यक्ष और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (दक्षिण) और प्रतिष्ठित महासचिव पद के रूप में काम किया। 65 साल पुराने पीआरएसआई में उनका योगदान सराहनीय है। उन्होंने बाबजी को पीआरएसआई के कानूनी सलाहकार पद पर बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजीत पाठक को धन्यवाद दिया। हैदराबाद के सचिव के. यादगिरी ने कहा कि बाबाजी का कानूनी कौशल संगठन को सिस्टम को सुव्यवस्थित करने और मानक परिचालन प्रक्रियाओं को स्थापित करने में काम आया। पीआरएसआई के सबसे वरिष्ठ सदस्यों में से एक और वर्तमान राष्ट्रीय समिति के सदस्य कृष्णा बाजी ने सभी पेशेवरों को एक छत के नीचे लाने में बाबाजी के प्रयासों की सराहना की। एक अन्य राष्ट्रीय समिति के सदस्य मोहन राव ने कहा कि बाबजी की विवरण पर नजर ने उन्हें पेशे में नाम दिलाया। हैदराबाद चैप्टर के पूर्व अध्यक्ष डॉ. जे. चेन्नाया ने कहा कि बाबजी पेशे से जुड़े मुद्दों को सुलझाने में सबसे आगे थे। बाबजी ने डॉ. अजीत पाठक को राष्ट्रीय स्तर पर पीआरएसआई की सेवा करने का अवसर देने और हैदराबाद चैप्टर को सम्मान देने के लिए धन्यवाद दिया।

बस ने वाहनों को टक्कर मारी, कई घायल

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। एर्रागड्डा ट्रैफिक सिग्नल पर बुधवार सुबह एक निजी बस ने दो खड़ी कारों और बाइक को टक्कर मार दी, जिससे चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। एसआर नगर पुलिस के अनुसार, बुधवार तड़के, धनुंजय ट्रैवल्स की एक बस एर्रागड्डा से ईएसआई की ओर जा रही थी, तभी ड्राइवर ने स्टीयरिंग से नियंत्रण खो दिया और रैतू बाजार सिग्नल के पास खड़ी कारों और दोपहिया वाहनों से टकरा गई। घटना के बाद पुलिस टीम घटनास्थल पर पहुंची और घायल लोगों को अस्पताल पहुंचाया। इस बीच, एसआर नगर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच चल रही है।

सोशल मीडिया पर महिलाओं के खिलाफ अश्लील मैसेज पोस्ट करने वालों पर होगी सख्त कार्रवाई : वासिरेड्डी पद्मा

विजयवाड़ा, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। एपी महिला आयोग ने सोशल मीडिया पर महिलाओं के उत्पीड़न के मुद्दों पर एक दिवसीय सेमिनार आयोजित किया। इस मौके पर सेमिनार की अध्यक्षता करने वाली आंध्र प्रदेश महिला आयोग की अध्यक्ष वासिरेड्डी पद्मा ने कहा कि राज्य में सोशल मीडिया की स्थिति पाषाण युग से भी बदतर है। यह बुरा है कि महिलाएं महिलाओं पर अश्लील पोस्ट कर रही हैं और कुछ लोग राजनीतिक कारणों से उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि सोशल मीडिया पर महिलाओं के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट करना निंदनीय है और अब से हर शुक्रवार को महिला स्वाभिमान दिवस के रूप में मनाया जाएगा और जागरूकता बैठकें आयोजित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि मॉर्फिंग तस्वीरें डालकर महिलाओं को अपमानित करने वालों को सजा मिलनी चाहिए और सभी को ऐसे कृत्यों की निंदा करने की जरूरत है। सेमिनार में विजयवाड़ा शहर की मेयर रायना भाग्यलक्ष्मी, बाल अधिकार अध्यक्ष अप्पाराव, रेशिमुन्निशा बेगम, विजयवाड़ा डीसीपी अजिता, विजयवाड़ा की उप महापौर शैलजा रेड्डी, बेल्लम दुर्गा, सेवानिवृत्त आईएएस उषा कुमारी, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय की रजिस्ट्रार करुणा, कीर्ति, राज्यलक्ष्मी, एसईआरपी निदेशक विजया कुमारी, डॉ. शारदा, साई, चन्द्रशेखर रेड्डी, बंदी श्रीनिवास राव, ऐडवा रामादेवी, सुप्रजा और अन्य ने भाग लिया।

लक्ष्य फाउंडेशन द्वारा विद्यार्थियों में पाठ्य सामग्री का वितरण

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। लक्ष्य फाउंडेशन द्वारा दो अलग अलग कार्यक्रमों में उप्पल मंडल के मंडल परिषद प्राइमरी स्कूल अशोक नगर एवं सुभाष नगर के स्कूलों के विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री का वितरण किया गया। संस्थापक सुनील कुमार द्वारा जारी एक प्रेसविज्ञप्ति के अनुसार अभी तक उप्पल मंडल के चार स्कूल और सेरिलिंगमपल्ली मंडल के तीन स्कूलों में पाठ्य सामग्री का वितरण चुका है। भविष्य में और भी बच्चों को नोटबुक उपलब्ध कराई जाने का प्रयास रहेगा। पिछले वर्ष बिभिन्न स्कूलों के लगभग 700 बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित की गई थी। इस वर्ष का लक्ष्य एक हजार से ज्यादा बच्चों का है। कार्यक्रम में लक्ष्य फाउंडेशन की अध्यक्षा श्रीमती शीला, सह संस्थापक वी. तारा सिंह, एस. वेंकटेश्वरलु और कुलदीप सिंह हांडा उपस्थित रहे। एक अन्य कार्यक्रम सेरिलिंगमपल्ली मंडल केमंडल परिषद् प्राइमरी स्कूल, तारानगर, लिंगमपल्ली संपन्न हुआ, जिसमें पी. सुधाकर राव एवं सुनील कुमार उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रधान अध्यापक के. रामलु एवं अध्यापक जी रामलु का विशेष योगदान रहा।

जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम पर परिचर्चा आयोजित

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। चित्रनगरी संवाद मंच के सृजन संवाद में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय की पुस्तक 'जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम' पर चर्चा हुई। ग्रंथ का परिचय देते हुए इसके लेखक डॉ करुणाशंकर उपाध्याय ने कहा कि प्रसाद का सक्रिय रचनात्मक लेखन 31 वर्षों का रहा है और इस का ग्रंथ लेखन भी 31 वर्षों में हुआ है। यह भी एक संयोग है कि इसमें कुल 31 अध्याय हैं और 31 जनवरी 2022 को यह पूरा हुआ है। इस ग्रंथ में जयशंकर प्रसाद के संपूर्ण लेखन का वैश्विक प्रतिमानों के आलोक में नए सिरे से विश्लेषण किया गया है और उन्हें बीसवीं शती का विश्व का सबसे बड़ा महाकवि सिद्ध किया गया है। इसके लिए विश्व के 15 महाकवियों और रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महर्षि अरविंद तथा टी.एस.एलियट से इनकी तुलना की गई है। उपाध्याय ने कहा कि प्रसाद का सर्जनात्मक व्यक्तित्व इतना ऊर्जावान और चिंतक व्यक्तित्व इतना ऊंचा है कि उसे कोई विदेशी विचारधारा नियंत्रित नहीं कर पाती।

इन्होंने अपने जीवनानुभवों एवं विश्व- संदृष्टि के आधार पर जिस विराट बोध का विकास किया था ,वह संपूर्ण भारतीय साहित्य की अस्मिता का प्रतीक बन जाता है। महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. शीतला प्रसाद दुबे ने कहा कि जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी साहित्य के अप्रतिम रचनाकार हैं। उनके व्यक्तित्व और रचनात्मकता को केंद्र में रखकर अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों ने आलोचनात्मक ग्रंथों की रचना की है।

डॉ करुणाशंकर उपाध्याय की पुस्तक 'जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम' अपने आप में विशिष्ट है। समकालीन कविता के प्रमुख कवि डॉ. बोधिसत्व ने कहा कि डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय की नवीनतम कृति "जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम" प्रसाद जी को समझने के लिए एक आवश्यक पुस्तक है। कार्यक्रम के संचालक देवमणि पांडेय ने कहा कि डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय ने प्रसाद के संपूर्ण साहित्य का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण पेश करने का सराहनीय प्रयास किया है।

बुधवार को मसाब टैंक स्थित कार्यालय में ऐतिहासिक श्री अक्कन्ना मदन्ना महंकाली मंदिरम, हरिबोवली हैदराबाद के 75वें वज्रोत्सव बोनालू निमंत्रण ब्रोकर का लांच करते हुए तेलंगाना सरकार के सलाहकार डॉ. के.वी.रमना चारी। साथ में हैं मंदिर समिति के अध्यक्ष रामदेव अग्रवाल, सलाहकार जी.राजरत्नम, आयोजन सचिव एस.पी.क्रांति कुमार, प्रतिनिधि जगमोहन कपूर, जी.श्रीनिवास और अन्य।

मोहरा कला इच्छाधारी बालाजी मंदिर में दर्शन-वंदनकर पूज्य गुरुवर संत श्री सुरेन्द्रदासजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भगवान सिंह-वीणाकंवर, रविराज सिंह, रितु, रक्षिता सोलंकी, अशोक पालड़िया, बबलु सिंह, गोपालसिंह राठौड़ व अन्य।

भाजपा जामबाग मंडल के शक्ति केंद्र की बैठक में वरिष्ठ भाजपा नेता अमरसिंह राजपुरोहित, श्रीनिवास, मयूर कालेकर, शैलेंद्र, प्रमोद, साईकिरन व अन्य।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

सात-आठ जुलाई को...

पीएम के इस दौरे की शुरुआत छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से होगी। इस दौरे के साथ ही पीएम इस सूबे में चुनाव अभियान का शंखनाद करेंगे।

विधानसभा चुनाव प्रचार का शंखनाद करेंगे

छत्तीसगढ़ दौरे की शुरुआत शुक्रवार सुबह पौने ग्यारह बजे रायपुर में कार्यक्रम से होगी। राज्य की राजधानी में पीएम कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे। योजनाओं के शिलान्यास और उद्घाटन के बाद पीएम साढ़े ग्यारह बजे रायपुर में जनसभा के जरिए इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव प्रचार का शंखनाद करेंगे। राज्य इकाई ने इस जनसभा के लिए दो लाख लोगों को इकट्ठा करने का लक्ष्य रखा है।

चुनाव अभियान का करेंगे शंखनाद

छत्तीसगढ़ में चुनावी अभियान का शंखनाद करने के बाद पीएम शनिवार को सुबह तेलंगाना आएंगे। पौने ग्यारह बजे वह वारंगल में विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास करेंगे। इसके बाद सुबह साढ़े ग्यारह बजे वारंगल में जनसभा करेंगे। इसी दिन पीएम चुनावी राज्य राजस्थान भी जाएंगे। यहां शाम सवा चार बजे बीकानेर में विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करने के बाद शाम पांच बजे बीकानेर में जनसभा को संबोधित करेंगे।

अजित बने एनसीपी...

ये भाजपा के खिलाफ लड़ाई है। एनसीपी को नेचुरली करप्ट पार्टी कहा था और कहा था ना खाउंगा न खाना दूंगा, लेकिन अब जरूरत पड़ी तो उसी का समर्थन ले लिया भाजपा ने। मैं दिखाउंगी कैसे तुमने खाया। मैं आज के बाद तुम्हें महाराष्ट्र में खाने नहीं दूंगी। भाजपा ने पिछले 9 साल में दिया क्या है। गैस सिलिंडर एक हजार रुपए का कर दिया। एनसीपी का एक ही सिक्का है शरद पवार्।

अजित गुट ने 29 विधायकों के नाम भी दिए: अजित पवार, छगन भुजबल, हसन मुश्रीफ, नरहरि झिरवाल, दिलीप मोहिते, अनिल पाटिल, माणिकराव कोकाटे, दिलीप वाल्से पाटिल, अदिति तटकरे, राजेश पाटिल, धनंजय मुंडे, धर्मराव अत्राम, अन्ना बंसोड़, नीलेश लंके, इंद्रनील नाइक, सुनील शेलके, दत्तात्रय भरणे, संजय बंसोड़, संग्राम जगताप, दिलीप होना, सुनील टिंगरे, सुनील शेलके, बालासाहेब अजाबे, दीपक चव्हाण, यशवंत माने, नितिन पवार, शेखर निकम, संजय शिंदे, राजू कोरमारे। विधान परिषद सदस्य: अमोल मिटकरी, रामराजे निंबालकर, अनिकेत तटकरे, विक्रम काले।

खालिस्तान मूवमेंट...

रेफरेंडम 2020 के नाम से चला रहा था खालिस्तानी आंदोलन

गुरपतवंत पन्नू अमेरिका में बैठकर पिछले लंबे समय से 'पंजाब रेफरेंडम 2020' नाम से खालिस्तानी आंदोलन चला रहा था। यहां वह सिखों को उकसाने की कोशिश कर रहा था। सिखों को खालिस्तान मुहिम से जोड़ने के लिए पन्नू सोशल मीडिया का सहारा लेता था।

पन्नू के लिए खालिस्तानी नारे लिखने के लिए वह फंडिंग भी करता था। पंजाब में ऐसे कई लोग पकड़े गए, जिन्होंने पन्नू के कहने पर सरकारी और सार्वजनिक जगहों पर खालिस्तानी नारे लिखकर माहौल भड़काने का काम किया था।

2 महीने में 3 आतंकी मारे जा चुके

अवतार खांडा: 14 जून को भारतीय दूतावास पर हमले की योजना बनाने वाले खालिस्तान समर्थक नेता अवतार सिंह खांडा की ब्रिटेन में मौत हो गई। सूत्रों ने बताया कि वह ब्लड कैंसर से पीड़ित था। हालांकि उसको जहर देने की भी चर्चा हुई।

परमजीत पंजवड़: 6 मई को खालिस्तान कमांडो फोर्स के चीफ परमजीत सिंह पंजवड़ की लाहौर में हत्या कर दी गई। लाहौर के जौहर कस्बे की सनफ्लावर सोसाइटी में घुसकर गोलियां मारी गईं। पंजवड़ की मौके पर ही मौत हो गई। वह 1990 से पाकिस्तान में शरण लेकर बैठा था। वह यहां मलिक सरदार सिंह के नाम से रह रहा था।

भगवान महावीर के बाद...

उनकी गतिशीलता विश्राम तक चलती रहती है। सूरज डूबने के पहले गर्म पानी की अंतिम बूंद जो ले ली, वही आहार है। इसके बाद गर्म पानी भी नहीं लेते।

मुनि श्री का समूचा परिवार ही संन्यासी

जैन समाज के साधक मनोज डाकलिया से मुनि श्री विरागमुनि जी महाराज साहब बनने तक का उनका पूरा जीवन प्रेरणादायी और पथ प्रदर्शक है। राजस्थान के पाली निवासी मनोज डाकलिया ने पूरे परिवार के साथ श्री कुशलमुनिजी महाराज साहब से अहमदाबाद के नवरंगपुर दादावाड़ी में 21 जून 2014 को दीक्षा ली थी। पत्नी सुश्राविका मोनिका जी वर्तमान में साध्वी श्री विरतियशाश्री जी, पुत्र भव्य वर्तमान में मुनि श्री भव्यमुनि, पुत्री कुमारी खुशी वर्तमान में श्री विनयम्रयशाश्री जी ने भी दीक्षा ली है। पुत्र मुनि श्री भव्यमुनि उनके साथ हैं। बताया जाता है कि करोड़ों की मोह-माया को त्याग, भगवान महावीर के रास्ते पर चलने का संकल्प पूरे परिवार ने लिया।

मुनि श्री ने बताया 14 जनवरी 2023 को अंतिम बार आहार लेने के बाद उन्होंने 171 दिनों से अन्न का एक दाना भी ग्रहण नहीं किया है। रोजाना सिर्फ आधा लीटर गरम पानी ग्रहण करते हैं वह भी सूर्योदय से 48 मिनट बाद और सूर्यास्त के पूर्व।

आम आदमी के लिए इस तरह का तप करना तो दूर, सोचने पर भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि कोई संत व्यक्ति स्वाद का अनुराग छोड़कर इतना "विरागी' कैसे हो सकता है। इतने लंबे उपवास के बाद उनका शरीर दुर्बल जान पड़ता है, लेकिन चेहरे का तेज बढ़ता ही गया है।

अजित अगरकर इंडियन क्रिकेट टीम के चीफ सिलेक्टर बने

स्टिंग ऑपरेशन के कारण हटे चेतन शर्मा की जगह ली; आयरलैंड सीरीज पहली चुनौती

मुंबई, 5 जुलाई (एजेंसियां)। पूर्व तेज गेंदबाज अजित अगरकर टीम इंडिया की सिलेक्शन कमेटी के नए चेयरमैन बनाए गए हैं। बीसीसीआई ने मंगलवार रात को जारी एक मीडिया ब्रीफ में इसका ऐलान किया। बोर्ड ने लिखा, 'अगरकर को टेस्ट मैचों में सीनियॉरिटी के आधार पर चीफ सिलेक्टर बनाया गया है।'

पहले से तय था अगरकर का चीफ सिलेक्टर बनना

बोर्ड ने अगरकर को चीफ सिलेक्टर बनाने की तैयारी पहले ही कर ली थी। 2 पॉइंट्स में समझते हैं...

आईपीएल टीम दिल्ली कैपिटल्स ने रिलीज किया : डब्ल्यूटीसी फाइनल के बाद आईपीएल फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स ने अगरकर को अपनी टीम के असिस्टेंट कोच के पद से रिलीज कर दिया। इसके ठीक बाद पूर्व तेज गेंदबाज ने सिलेक्शन कमेटी के सदस्य पद के लिए अप्लाय किया।

बीसीसीआई ने उम्र सीमा कम घटाई : चेतन शर्मा के जाने के बाद सिलेक्शन कमेटी में एक पद खाली था। बीसीसीआई ने इस पोस्ट के लिए एप्लिकेशन उम्र सीमा कम कर दी। पहले यह 60 साल थी, लेकिन नई एज लिमिट 45 साल कर दी गई, जिस कारण 45 साल के अगरकर को कमेटी का हिस्सा बनने का मौका मिला।

349 इंटरनेशनल विकेट ले चुके हैं

अगरकर करियर में 349 इंटरनेशनल विकेट ले चुके हैं। उन्होंने टेस्ट में 58, वनडे में 288 और टी-20 इंटरनेशनल में 3 विकेट लिए हैं। देखें उनके 3 रिकॉर्ड्स...

टी-20 वर्ल्ड कप जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा रहे : अजित अगरकर 2007 में टी-20 वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम इंडिया का हिस्सा रहे। उन्होंने टूर्नामेंट के 2 मैचों में 15 रन बनाने के साथ एक विकेट भी लिया था। साउथ अफ्रीका में हुए टूर्नामेंट के फाइनल में भारत ने पाकिस्तान को हराकर खिताब जीता था।

वनडे में सबसे तेज अर्धशतक लगाने वाले भारतीय : अजित अगरकर वनडे में सबसे तेज हाफ सेंचुरी जमाने वाले भारतीय बैटर हैं। उन्होंने साल 2000 में जिम्बाब्वे के खिलाफ 21 बॉल पर अर्धशतक जमाया था।

सबसे तेज 50 विकेट लिए : अगरकर ने भारत के लिए सबसे तेज 50 विकेट पूरे किए हैं। उन्होंने 23 मुकाबलों में यह कारनामा किया था।

चेतन शर्मा के हटने के बाद से खाली था पद

45 साल के पूर्व गेंदबाज ने पूर्व क्रिकेटर चेतन शर्मा की जगह ली है। एक टीवी चैनल ने चीफ सिलेक्टर चेतन शर्मा का स्टिंग ऑपरेशन किया था, जिसमें वे कह रहे थे कि टीम इंडिया के खिलाड़ी फिट रहने के लिए इंजेक्शन लेते हैं।

इसी कारण उन्हें चीफ सिलेक्टर पोस्ट से हटाया गया। चेतन शर्मा के हटने के बाद चीफ सिलेक्टर का पद पिछले 5 महीनों से खाली था। उनकी जगह शिव सुंदर दास को इंटेरिम सिलेक्टर बनाया गया गया था।

भारतीय खिलाड़ियों से मिलने पहुंचे सर गैरी सोबर्स

कोहली और रोहित ने किया अभिवादन

बारबाडोज, 5 जुलाई (एजेंसियां)। टेस्ट सीरीज के लिए बारबाडोज में अभ्यास कर रही भारतीय टीम से वेस्टइंडीज के पूर्व खिलाड़ी सर गैरी सोबर्स ने मुलाकात की।

वेस्टइंडीज के खिलाफ 12 जुलाई से खेली जाने वाली सीरीज के लिए बारबाडोज में अभ्यास कर रही भारतीय क्रिकेट टीम को मंगलवार को एक बड़ा सरप्राइज मिला। दरअसल वेस्टइंडीज के दिग्गज खिलाड़ी सर गैरी सोबर्स भारतीय प्लेयर्स से मिलने पहुंचे। उन्हें देखते ही खिलाड़ी गदगद हो गए और विराट कोहली, रोहित शर्मा समेत अन्य ने उनसे हाथ मिलाया। इसका वीडियो बीसीसीआई द्वारा शेयर किया गया है।

कौन हैं सर गैरी सोबर्स?

सर गैरी रिचर्ड्स का जन्म 28 जुलाई 1936 को हुआ था। उन्होंने 1954 से 1974 तक वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम के लिए क्रिकेट खेला। उनका जन्म बारबाडोस में ही हुआ था, वह अभी अपने परिवार के साथ वहीं रहते है। सोबर्स एक शानदार गेंदबाज थे और कमाल के फील्डर भी थे। सोबर्स ने 93 अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट मैच खेले, जिसमे उन्होंने 8032 रन बनाए और 235 विकेट चटकाए हैं। उन्हें टेस्ट के सबसे बेहतरीन खिलाड़ियों में गिना जाता है।

विराट और रोहित ने की मुलाकात

सर गैरी सोबर्स कोहली के सबसे पसंदीदा खिलाड़ियों में से एक हैं। ऐसे में उन्हें देखकर कोहली तुरंत उनके पास गए और लंबे समय तक चर्चा की। इसका वीडियो हर तरफ वायरल हो रहा है। कई लोग इस पर कमेंट कर रहे हैं कि 'जब एक दिग्गज दूसरे से मिलता है'। वहीं कप्तान रोहित ने भी वेस्टइंडीज के दिग्गज से मुलाकात की और उन्हें आने के लिए धन्यवाद कहा। इसके अलावा राहुल द्रविड़ ने शुभमन गिल को मजेदार अंदाज में मिलवाया।

वेस्टइंडीज दौरे के लिए भारत की टेस्ट टीम

रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, रुतुराज गायकवाड़, विराट कोहली, यशस्वी जयसवाल, अजिंक्य रहाणे (उपकप्तानी), केएस भरत (विकेटकीपर), ईशान किशन (विकेटकीपर), आर अश्विन, आर जड़ेजा, शार्दुल ठाकुर, अक्षर पटेल , मो. सिराज, मुकेश कुमार, जयदेव उनादकट, नवदीप सैनी।

वेस्टइंडीज दौरे के लिए भारत की वनडे टीम

रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, रुतुराज गायकवाड़, विराट कोहली, सूर्य कुमार यादव, संजू सैमसन (विकेटकीपर), इशान किशन (विकेटकीपर), हार्दिक पंड्या (उपकप्तान), शार्दुल ठाकुर, आर जड़ेजा, अक्षर पटेल, युजवेंद्र चहल, कुलदीप यादव, जयदेव उनादकट, मो. सिराज, उमरान मलिक, मुकेश कुमार।

इंडियन फुटबॉल टीम एसएएफएफ चैंपियन, टॉप-100 रैंकिंग में वापसी

किंग्स कप-एशियाड अगली चुनौती, वर्ल्ड कप क्वालिफायर्स में भी उम्मीद बढ़ी

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। भारतीय फुटबॉल टीम ने सीजन में धमाकेदार आगाज किया है। टीम ने पिछले एक महीने में 3 बड़े अचीवमेंट हासिल कर लिए।

सुनील छेत्री की कप्तानी में टीम इंडिया ने अपने इंटरनेशनल कैंपेन की शुरुआत इंटरकॉन्टिनेंटल कप जीतकर की। फिर फीफा की टॉप-100 रैंकिंग में 5 साल बाद वापसी और मंगलवार रात को तीसरी बार साउथ एशियन फुटबॉल फेडरेशन चैम्पियनशिप के टाइटल का सफल बचाव किया। भारत ने फाइनल में कुवैत को पेनल्टी शूटआउट में 5-4 से हराया।

ऐसे में जानना जरूरी है कि क्या साल 2023 भारतीय फुटबॉल के लिए गेमचेंजर साबित होगा। क्या इस साल की सफलताएं भविष्य में भारतीय फुटबॉल को सुनहरे भविष्य की ओर ले जाएंगी। दिसंबर 1992 में फीफा का रैंकिंग सिस्टम शुरू होने के बाद भारतीय टीम के उल्लेखनीय प्रदर्शन का एनालिसिस आगे स्टोरी में हम जानेंगे।

शुरुआत करते हैं 3 अचीवमेंट से...

1. घर लौटा इंटरकॉन्टिनेंटल कप, लेबनान को 46 साल बाद हराया

18 जून को टीम इंडिया ने इंटरकॉन्टिनेंटल कप अपने नाम किया। यह कप 5 साल बाद घर आया। इससे पहले भारतीय टीम 2018 में चैम्पियन बनी थी।

भुवनेश्वर के कलिंगा स्टेडियम में भारतीय टीम ने फाइनल में लेबनान को 2-0 से हराया। भारत ने लेबनान को 46 साल बाद हराया। टीम इंडिया ने इससे पहले लेबनान को प्रेसिडेंट कप में 1977 में हराया था।

2. अपनी चौथी बेस्ट रैंकिंग में पहुंचा भारत

इंटरकॉन्टिनेंटल कप के बाद भारत को फीफा रैंकिंग में फायदा हुआ और टीम अपने इतिहास की चौथी बेस्ट रैंकिंग पर पहुंच गई। टीम ने 5 साल बाद टॉप-100 रैंकिंग में वापसी की थी, जो बताता है कि टीम पिछले कुछ समय से अपना बेस्ट फुटबॉल खेल रही है।

3. 9वीं बार साउथ एशियन चैम्पियन बना भारत

भारत ने एसएएफएफ चैम्पियनशिप भी जीत ली। भारतीय टीम 9वीं बार साउथ एशियन चैम्पियन बनी है। फुल टाइम और एक्स्ट्रा टाइम में मुकाबला 1-1 से ड्रॉ रहने के बाद टीम ने कुवैत को पेनल्टी शूटआउट में 5-4 से हराया। 2023 से पहले भारतीय टीम गोल खाने के बाद कमजोर पड़ जाती थी, लेकिन एसएएफएफ फाइनल में भारत ने अपना नया रूप दिखाया। टीम ने फर्स्ट हाफ में ही गोल खाने के बावजूद शानदार कमबैक किया और सेकंड हाफ में गोल स्कोर कर बराबरी हासिल की। टीम ने फिर पेनल्टी शूटआउट में मुकाबला भी जीता।

2 पॉइंट्स में समझते हैं भारत के सर्वश्रेष्ठ साल...

1. भूटिया-विजयन की जोड़ी ने 1996 में बेस्ट रैंकिंग दिलाई

दिसंबर 1992 में पहली बार फीफा रैंकिंग की शुरुआत हुई। तब भारत के पास आई एम विजयन, जो पॉल आंचेरी और ब्रूनो कॉटिन्हो के दमदार आक्रमण वाली टीम थी। तब भारत ने 1993 में शानदार प्रदर्शन किया और साउथ एशियन गेम्स में सिल्वर जीतकर साल के अंत तक पहली बार टॉप-100 टीमों की रैंकिंग में प्रवेश किया।

उस साल भारत ने लेबनान से ड्रॉ खेला और 1994 फीफा विश्व कप क्वालिफायर्स में हॉन्गकॉन्ग पर जीत हासिल की। इतना ही नहीं, दो इंटरनेशनल मैच ड्रॉ भी कराए। टीम ने कैमरून और फिनलैंड को बराबरी पर रोका, जिसका फायदा रैंकिंग में मिला।

2. 2017 में अजेय रहा था भारत, 21 साल बाद टॉप-100 में वापसी की

टीम का बेहतरीन प्रदर्शन साल 2017 में दिखा, जब भारत पूरे साल अजेय रहा, 9 में से 2 मैच ड्रॉ खेले और 7 मैच जीते। इस प्रदर्शन के दम पर टीम ने 2019 एएफसी एशियन कप के लिए भी क्वालिफाई किया।

भारत ने 2017 के मई में 21 साल बाद फिर फीफा रैंकिंग की टॉप-100 टीमों में एंट्री की, टीम तब जुलाई में 96वें स्थान पर पहुंची। टीम ने साल का अंत 105वें नंबर पर रहकर किया, तब से लेकर अब तक टीम 100 से 109 रैंक पर बनी हुई है।

इस साल भारत के 4 इम्पॉर्टेंट टास्क...

1. किंग्स कप: यूएई को हराना चुनौतीपूर्ण होगा

किंग्स कप की शुरुआत 1968 में हुई। यह टूर्नामेंट फुटबॉल एसोसिएशन ऑफ थाईलैंड कराता है। भारत 1977 और 2019 में इस टूर्नामेंट के ब्रॉन्ज मेडल जीत चुका है। ब्लू टाइगर्स एक बार फिर टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए तैयार हैं। टूर्नामेंट 7 सितंबर से 10 सितंबर के बीच होगा। इसमें यूएई, लेबनान, भारत और थाईलैंड हिस्सा लेंगे।

2. एशियाड-2023: 1970 से फुटबॉल में मेडल नहीं जीत सका भारत

एशियन गेम्स इसी साल 23 सितंबर से 8 अक्टूबर के बीच चीन के हांगझू में होंगे। एशियाड में फुटबॉल की यू-23 टीमों के मुकाबले ही होंगे। जिसमें सीनियर टीम के 3 ही खिलाड़ी हिस्सा ले सकेंगे। भारत ने एशियन गेम्स (1951 और 1962) में 2 गोल्ड मेडल जीते हैं। टीम 1970 में एक ब्रॉन्ज मेडल भी जीत चुकी है।

3. मर्डेका कप: पेलेस्टाइन से जीतना जरूरी

मलेशिया फुटबॉल एसोसिएशन के आयोजन में मर्डेका कप का 42वां एडिशन 14 से 17 अक्टूबर, 2023 के बीच खेला जाएगा। इसमें भारत के अलावा, पेलेस्टाइन, लेबनान और मेजबान मलेशिया भाग लेंगे। फीफा रैंकिंग में पेलेस्टाइन भारत से बेहतर 96वें नंबर पर है। ऐसे में भारत के लिए पेलेस्टाइन के खिलाफ जीतना जरूरी होगा। प

4. फीफी वर्ल्ड कप 2026 क्वालिफायर

वर्ल्ड कप 2026 में भारत फिलहाल नहीं है, लेकिन टीम इंडिया के पास इसमें क्वालिफाई करने का मौका है। बेहतर रैंकिंग के कारण भारत को 2026 फीफा वर्ल्ड कप में एशिया क्वालिफायर के लिए राउंड-1 में हिस्सा नहीं लेना होगा। वह सीधे राउंड 2 में खेलगा। क्वालिफिकेशन के लिए कुल 5 राउंड होंगे, टीम इंडिया इसी साल नवंबर में क्वालिफायर खेलेगी।

भारत के लिए सबसे मुश्किल वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफाई करना होगा। यहां टीम का मुकाबला एशिया की टॉप टीमों से होगा। इनमें जापान और कोरिया भी शामिल हैं। ऐसे में टीम इंडिया के लिए आने वाले सालों में अपना बेस्ट देना और भी जरूरी हो जाता है। इस समय एशिया के 46 देशों में भारत 18वीं रैंक पर है। पॉइंट्स में समझें क्वालिफिकेशन प्रोसेस..

पहला राउंड - एशिया की 27 से 46 रैंक की टीम एक दूसरे के खिलाफ खेलेगी। 10 विनर राउंड-2 में जाएंगे।

क्रिकेटर प्रवीण कुमार कार एक्सीडेंट में बाल-बाल बचे

हाईवे पर ट्रक ने टक्कर मारी; भतीजे के साथ लैंड-रोवर में सवार थे

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। 36 साल के प्रवीण मंगलवार देर रात को अपने भतीजे के साथ लैंड रोवर कार में सवार थे। वह पांडव नगर से मेरठ जा रहे थे, तभी हाईवे पर एक ट्रक तेज रफ्तार से आई और उन्हें टक्कर मार दी। दोनों को ज्यादा चोटें नहीं आईं, हॉस्पिटल में उन्हें ट्रीटमेंट दिया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि ट्रक ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया गया है। एक्सीडेंट के बाद न्यूज एजेंसी पीटीआई को प्रवीण ने बताया, 'एक्सीडेंट खतरनाक हो सकता था, लेकिन भगवान की दया से हम बच गए। मैं अपने भतीजे को छोड़ने के लिए जा रहा था, तभी रात 9:30 बजे के करीब एक ट्रक ने मेरी कार को पीछे से टक्कर मार दी। अच्छा हुआ कार बड़ी थी तो हम बच गए, हमें ज्यादा चोटें भी आ सकती थीं। पहले मुझे लगा कि सिर्फ बम्पर टूटा है, लेकिन मेरी कार बुरी तरह से टूट गई है।' प्रवीण कुमार का दूसरी बार कार एक्सीडेंट हुआ है। वह 2007 में जीप से गिर गए थे, इसी साल उन्होंने टीम इंडिया के लिए इंटरनेशनल डेब्यू किया था। मेरठ के रहने वाले प्रवीण उत्तर प्रदेश से ही घरेलू क्रिकेट खेलते थे। नई गेंद को दोनों तरफ स्विंग कराने के लिए पहचाने जाने वाले प्रवीण ने 2018 में इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लिया।

उन्होंने टीम इंडिया 6 टेस्ट, 68 वनडे और 10 टी-20 खेले हैं। टेस्ट में उनके नाम 27, वनडे में 77 और टी-20 में 8 विकेट हैं। वह आईपीएल में मुंबई इंडियंस, गुजरात लायंस, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, सनराइजर्स हैदराबाद और किंग्स इलेवन पंजाब से खेल चुके हैं। प्रवीण कुमार ने भारत के लिए तीनों फॉर्मेट में डेब्यू किया, लेकिन उन्होंने टीम के लिए वनडे मैच ज्यादा खेले। वह 2008 में टीम इंडिया की सीबी सीरीज (ट्राई सीरीज) जीत का हिस्सा भी रहे थे। तब भारत ने ऑस्ट्रेलिया में पहली बार ट्राई सीरीज जीती थी। प्रवीण ने सीरीज के 4 ही मैचों में 10 विकेट लिए थे।

प्रवीण कुमार से पहले पिछले साल दिसंबर में विकेटकीपर ऋषभ पंत भी कार एक्सीडेंट का शिकार हुए थे। वह अपनी कार से रुड़की जा रहे थे। लेकिन एलएच 58 नेशनल हाईवे (दिल्ली-हरिद्वार) पर गड्ढे और गिट्टी बिखरी पड़ी होने के कारण क्रिकेटर ने कार से कंट्रोल खो दिया और सड़क के दूसरी तरफ कार चली गई, जिसके बाद उसमें आग लग गई।

साई सुदर्शन को इंडिया-ए टीम में जगह

एमर्जिंग एशिया कप के लिए टीम जारी, यश धुल कप्तानी करेंगे; नेहल वाधेरा स्टैंड-बाय प्लेयर

मुंबई, 5 जुलाई (एजेंसियां)। एमर्जिंग एशिया कप के लिए इंडिया की ए टीम जारी कर दी गई है। टीम इंडिया के 15 मेंबर्स स्क्वॉड की कप्तानी यश धुल को मिली है। आईपीएल में गुजरात टाइटंस से बेहतरीन परफॉर्म करने वाले साई सुदर्शन भी टीम का हिस्सा हैं। वहीं मुंबई इंडियंस के विस्फोटक बैटर नेहल वाधेर स्टैंड बाय प्लेयर्स में शामिल हैं। पंजाब के ऑलराउंडर अभिषेक शर्मा को टीम के उप कप्तान बनाए गए। टूर्नामेंट 14 जुलाई से श्रीलंका में खेला जाएगा। 23 जुलाई तक चलने वाले टूर्नामेंट में भारत के साथ 7 और टीमें भी शामिल हैं।

साई सुदर्शन के साथ आईपीएल में परफॉर्म करने वाले कई प्लेयर्स को टीम में शामिल किया गया। वहीं रियान पराग पर भी सिलेक्टर्स ने भरोसा दिखाया। तेज गेंदबाज हर्षित राणा को जगह दी गई, जिन्होंने पिछले सप्ताह दलीप ट्रॉफी में शतक लगाया। निशांत सिंधु को भी दलीप ट्रॉफी में परफॉर्मेंस के आधार पर सिलेक्ट किया गया। चेन्नई सुपर किंग्स टीम से आईपीएल में अच्छा परफॉर्म करने वाले लेफ्ट आर्म पेसर आकाश सिंह और ऑलराउंडर राजवर्धन हंगरगेकर को भी टीम में जगह मिली। स्टैंड बाय प्लेयर्स में 4 खिलाड़ियों के नाम दिए गए। इनमें नेहल वाधेरा, मोहित रेडकर, हर्ष दुबे और स्नेल पटेल शामिल हैं। एमर्जिंग एशिया कप के लिए किसी भी तरह की उम्र सीमा नहीं है। लेकिन नए प्लेयर्स को मौका मिले, इसलिए भारत ने 23 साल से कम उम्र के खिलाड़ियों को ही टीम में चुना। स्टैंडबाय में शामिल 4 में से 3 खिलाड़ियों की उम्र भी 23 साल से ज्यादा नहीं है। इसी कारण आईपीएल में पिछले दिनों अच्छा परफॉर्म करने वाले रिंकू सिंह को टीम में जगह नहीं मिली। रिपोर्ट्स के अनुसार, उन्हें वेस्टइंडीज दौरे पर भारत की टी-20 टीम में जगह मिलेगी। विकेटकीपर स्नेल पटेल ही एकमात्र ऐसे प्लेयर हैं, जिनकी उम्र 29 साल है। हालांकि वह स्टैंड-बाय प्लेयर्स की लिस्ट में शामिल हैं। उनके अलावा टीम में प्रभसिमरन सिंह और ध्रुव जुरेल भी बतौर विकेटकीपर शामिल किए गए हैं। दोनों ही खिलाड़ियों ने पिछले दिनों आईपीएल में बेहतरीन प्रदर्शन किया था। इंडिया-ए टीम में प्लेयर्स का सिलेक्शन जूनियर सिलेक्शन कमेटी ने किया है। टीम इंडिया के साथ सितांशु कोटक बतौर हेड कोच जाएंगे। साईराज बहुतुले बॉलिंग कोच और मनीष बाली फील्डिंग कोच रहेंगे।

पीवी सिंधु की रैंकिंग 3 पायदान गिरी

12वीं से 15वीं रैंक पर पहुंची, अप्रैल में टॉप 10 से हुई थी बाहर

नई दिल्ली, 5 जुलाई (एजेंसियां)। डबल ओलंपिक मेडल विनर पीवी सिंधु मंगलवार को जारी नई विमेंस सिंगल्स बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड रैंकिंग में तीन स्थान फिसलकर 15वें स्थान पर आ गईं। सिंधु इस साल अपील में एलिट टॉप 10 से बाहर हो गई थी। सिंधु के अब 13 टूर्नामेंटों में 51,070 अंक हैं। विमेंस सिंगल्स में जापान की अकाने यामागुची 1 लाख 03 हजार 717 पॉइंट्स के साथ टॉप पर है।

सबसे ज्यादा 13 हजार पॉइंट्स वर्ल्ड चैंपियनशिप और ओलिंपिक जीतने पर मिलते है। टोटल पॉइंट्स आधार पर वर्ल्ड रैंकिंग तय होती है। विनर के अलावा, फाइनलिस्ट, सेमीफइनलिस्ट से ले कर टूर्नामेंट में हिस्सा लेने वाले शटलर्स को भी ग्रेड और पायदान के हिसाब से पॉइंट्स दिए जाते है। जिसके ज्यादा पॉइंट्स होते है, वह ऊपर होता है।

इंजरी की वजह से फॉर्म बिगड़ा

27 वर्षीय सिंधु इस सप्ताह कनाडा ओपन सुपर 500 में भाग लेंगी, कॉमनवेल्थ गेम्स में गोल्ड मेडल जीतने के बाद सिंधु को टखने में फ्रैक्चर हो गया था। पांच महीने की लंबी चोट के बाद सिंधु ने वापसी की थी।

सिंधु के लिए इस सीजन बेस्ट परफॉरमेंस मैड्रिड स्पेन मास्टर्स सुपर 300 का फाइनल और मलेशिया मास्टर्स सुपर 500 का सेमीफाइनल रहा है।

जिम्बाब्वे वनडे वर्ल्ड कप रेस से बाहर : स्कॉटलैंड ने 31 रन से हराया; अब नीदरलैंड और स्कॉटलैंड ही रेस में

बुलवायो, 5 जुलाई (एजेंसियां)। जिम्बाब्वे वर्ल्ड कप क्वालिफिकेशन की रेस से बाहर हो गया। मंगलवार को बुलवायो में स्कॉटलैंड ने जिम्बाब्वे को 31 रन से हराया। जिम्बाब्वे ने टॉस जीत कर गेंदबाजी चुनी। स्कॉटलैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 8 विकेट खो कर 234 रन बनाए। जवाब में जिमबब्वे 41.1 ओवर में 203 रन बना कर ऑलआउट हो गया।

वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफाई करने के लिए जिम्बाब्वे का जीतना जरूरी था। पूरे 5 मैच खेलने के बाद अब जिम्बाब्वे पॉइंटस टेबल में तीसरे नंबर पर आ गया। वहीं, 4 मैच खेलने के बाद स्कॉटलैंड पॉइंट्स टेबल में दूसरे नंबर पर आ गया है। स्कॉटलैंड के अलावा नीदरलैंड वर्ल्ड कप क्वालिफिकेशन की रेस में बना हुआ है। नीदरलैंड और स्कॉटलैंड के बीच सुपर-6 स्टेज का मुकाबला होगा, इसे जीतने वाली टीम वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफाई कर जाएगा।

छोटी पारियों ने सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया

स्कॉटलैंड ने पहले बल्लेबाजी की। क्रिस्टोफर मैकब्रिज और मैथ्यू क्रॉस ओपनिंग करने उतरे। मैकब्रिज 28 रन और कोर्स 38 रन बना कर आउट हुए। दूसरी और ब्रैंडन मैक्मुलेन 34 और जॉर्ज मुन्से 31 रन बना कर पवेलियन लौटे। कप्तान रिची बैरिंगटन 7 रन ही बना सके। वहीं, टॉमस मैकिनतोश 13 रन बना कर आउट हुए।

लोअर आर्डर पर माइकल लीस्क आए और उन्होंने 34 गेंद में 48 रन की धमाकेदार पारी खेली। वहीं, क्रिस ग्रीव्स 1 रन बना कर पवेलियन लौटे। मार्क वाट ने 15 गेंद में 21 रन बना कर स्कोर 234 तक पहुंचाया। 8 विकेट के नुकसान पर स्कॉटलैंड ने 234 रन बनाए।

किसान कम बारिश के बावजूद दो फसलें उगाने को लेकर आश्वस्त : हरीश राव

सिद्दीपेट, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। वित्त मंत्री टी. हरीश राव ने कहा कि सिद्दीपेट जिले के लोगों को भरोसा है कि कलेश्वरम लिफ्ट सिंचाई योजना (केएलआईएस) उन्हें बचाएगी, भले ही दक्षिण-पश्चिम मानसून के पहले महीने के दौरान जिले में पर्याप्त वर्षा नहीं हुई है।

बुधवार को कोमुरावेल्ली श्री मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर में एक आधुनिक कतार परिसर की नींव रखने के बाद सभा को संबोधित करते हुए, मंत्री ने कहा कि सिंचाई टैंक पानी से भरे हुए हैं, क्योंकि क्षेत्र को देवदुला लिफ्ट सिंचाई परियोजना से पानी मिल रहा है, जिससे अंततः केएलआईएस से पानी मिलेगा।

चूंकि पर्याप्त भूजल है, किसान केएलआईएस से पानी मिलने की उम्मीद से धान की रोपाई कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोगों को रैतु बंधु के साथ-साथ चौबीसों घंटे बिजली की आपूर्ति भी मिल रही है। यह कहते हुए कि सिद्दीपेट के किसानों को इस वर्ष पर्याप्त वर्षा नहीं होने पर भी दो फसलें प्राप्त करने का भरोसा था, राव ने कहा कि मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव ने मल्लिकार्जुन स्वामी के आशीर्वाद से गोदावरी का पानी प्राप्त करके इसे संभव बनाया है। मंदिर के विकास के बारे में बात करते हुए, मंत्री ने मंदिर प्रशासन से अन्य पर्यावरण-अनुकूल सामग्रियों का उपयोग करके इसे प्लास्टिक मुक्त मंदिर बनाने के लिए कहा। यह कहते हुए कि तेलंगाना गठन के बाद मंदिर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, राव ने कहा कि मंदिर का राजस्व 4 करोड़ रुपये से बढ़कर 18 करोड़ रुपये प्रति वर्ष हो गया है। उन्होंने आगे कहा कि आधुनिक कतार परिसर, जिसे 12 करोड़ रुपये की लागत से बनाया जाएगा, इष्टदेव के दर्शन के दौरान भक्तों की आवाजाही को आसान बना देगा।

राज्य सरकार राज्य के विभिन्न हिस्सों से आने वाले भक्तों को सर्वोत्तम आवास प्रदान करने के लिए 100 मुर्गीघर भी बना रही है। उन्होंने कहा कि तलसानी श्रीनिवास यादव, वी श्रीनिवास गौड़ और अन्य नेताओं सहित कई मंत्री अपने खर्च पर मुर्गीघर बनाने के लिए आगे आ रहे हैं।

तेलंगाना में 8 नए मेडिकल कॉलेज स्वीकृत

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के सभी 33 जिलों में मेडिकल कॉलेज स्थापित करने के अपने प्रयासों को जारी रखते हुए, राज्य सरकार ने बुधवार को आठ और मेडिकल कॉलेज स्थापित करने की अनुमति दे दी है, जिन्हें विकसित किया जाएगा और मेडिकल उम्मीदवारों के लिए अगले शैक्षणिक वर्ष के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।

जिन जिलों में नए मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जाएंगे उनमें जोगुलंबा गदवाल, नारायणपेट, मुलुगु, वारंगल, मेडक, यदाद्री भोंगिर, रंगारेड्डी और मेडचल मल्काजगिरी शामिल हैं। तेलंगाना के एक जिले में एक मेडिकल कॉलेज स्थापित करना मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव का दृष्टिकोण है और यह वास्तविकता बनने जा रहा है।

स्वास्थ्य मंत्री टी. हरीश राव ने बुधवार को कहा कि राज्य सरकार ने मौजूदा मेडिकल कॉलेजों की सूची में शामिल करते हुए बुधवार को 8 नए मेडिकल कॉलेजों को मंजूरी दे दी है। आरोग्य तेलंगाना के दृष्टिकोण के अनुरूप, ये कॉलेज छात्रों के लिए चिकित्सा शिक्षा हासिल करने और जिलों में स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर बनाने के अधिक अवसर पैदा करेंगे।

फर्जी वाहन बीमा प्रमाण पत्र बनाने वाले 6 गिरफ्तार

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। राचकोंडा की स्पेशल ऑपरेशंस टीम (एसओटी), एलबी नगर जोन के अधिकारियों ने आदिबाटला पुलिस के साथ मिलकर वाहन फिटनेस प्रमाणपत्र प्राप्त करने और स्वामित्व के हस्तांतरण के लिए फर्जी बीमा प्रमाणपत्र, आधार कार्ड आदि तैयार करने वाले 6 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी अवैध रूप से आरटीए एजेंट का काम करते है। आरोपियों के पास से फर्जी वाहन बीमा प्रमाणपत्र, आधार कार्ड और अन्य आपत्तिजनक सामग्री बरामद की गई। आरोपियों में संगिरेड्डी राघवेंदर रेड्डी आरटीए एजेंट, निवासी साई नगर कॉलोनी, सिरिपुरम रोड, नगरकुर्नूल, कोंगाला आनंद आरटीए एजेंट, निवासी। ब्राह्मणपल्ली (वी), अब्दुल्लापुरमेट (एम), आरआर जिला, अदुशेट्टी वेणु आरटीए एजेंट, निवासी एनएसआर नगर कॉलोनी, मन्नेगुडा (वी), अब्दुल्लापुरमेट (एम), आरआर जिला, पुट्टाबाथिनी श्रीधर आरटीए एजेंट, निवासी संतोष थिएटर के पास, इब्राहिमपटनम (वी एंड एम), आरआर जिला, अनुपति श्रीशैलम आरटीए एजेंट, निवासी नवभारत कॉलोनी, कम्मागुडा (वी), यमजाल, अब्दुल्लापुरमेट (एम), आरआर जिला, चपला यादगिरी आरटीए एजेंट, निवासी ब्राह्मणपल्ली (वी), अब्दुल्लापुरमेट (एम), आरआर जिला शामिल है। पुलिस ने आरोपियों के पास नकली वाहन बीमा प्रमाणपत्र 31, फर्जी वाहन फिटनेस प्रमाण पत्र 4, नकली वाहन गति सीमा प्रमाणपत्र 2, नकली बैंक एनओसी प्रमाणपत्र 9, नकली आधार कार्ड 10, फर्जी गैस बिल 9, कम्प्यूटर सेट, मोबाइल, लैपटाप, नकदी मिली है। सभी आरोपी संगिरेड्डी राघवेंदर रेड्डी, कोंगाला आनंद, अदुशेट्टी वेणु, पुट्टाबाथिनी श्रीधर, अनुपति श्रीशैलम और चपला यादगिरी निजी आरटीए एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं और उन्होंने एक गिरोह बना लिया था। उनकी कमाई उनके परिवार और भारी भरकम खर्चों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।

इस प्रकार उन्होंने परिवहन व गैर-परिवहन वाहनों के फर्जी बीमा प्रमाणपत्र तैयार करने की योजना बनाई ताकि उन्हें जरूरतमंद ग्राहकों से मोटी रकम वसूल कर बेचा जा सके। अपनी योजना के अनुसार उन्होंने वाहन मालिकों से अपना कमीशन वसूल कर वाहन फिटनेस प्रमाण पत्र, स्वामित्व हस्तांतरण, डुप्लीकेट आरसी प्राप्त करने के लिए फर्जी बीमा प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, खोए प्रमाण पत्र, वाहन फिटनेस प्रमाण पत्र, बैंक एनओसी प्रमाण पत्र तैयार करना शुरू कर दिया। वे कंप्यूटर का उपयोग करके तारीखों को संपादित करके समाप्त हो चुके वाहन बीमा प्रमाणपत्रों को स्कैन करते थे और रंगीन प्रिंटआउट निकालते थे और वाहनों के स्वामित्व व फिटनेस के हस्तांतरण के लिए आरटीए को जमा करते थे। वे वाहन के प्रकार के अनुसार दो हजार से दस हजार रुपये लोगों से वसूलते थे।

यहां तक कि वाहन मालिकों के पास वैध बीमा या स्थानीय पते का प्रमाण नहीं है और उनसे भारी रकम वसूलते हैं। आरोपी नकली प्रमाण पत्र बनाकर सरकार को धोखा दे रहे थे। गुप्त सूचना पर स्पेशल ऑपरेशंस टीम (एसओटी), एलबी नगर जोन ने आदिबाटला पुलिस के साथ मिलकर लक्षिता ज़ेरॉक्स शॉप, मन्नेगुडा, आदिबाटला में आरोपियों को पकड़ा और उनके कब्जे से फर्जी वाहन बीमा प्रमाण पत्र और आपत्तिजनक सामग्री जब्त की।

सीएम केसीआर ने आदिवासियों के लंबे समय से लंबित सपने को साकार किया : कोनप्पा

कुमराम भीम आसिफाबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। सिरपुर (टी) के विधायक कोनेरू कोनप्पा ने कहा कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव के प्रयासों के कारण आदिवासियों को पोडु भूमि पट्टे मिल सके। उन्होंने बुधवार को पेंचिकलपेट, बेज्जूर, चिंतालमनेपल्ली और कौटाला मंडल केंद्रों में पात्र लाभार्थियों को औपचारिक रूप से भूमि का मालिकाना हक सौंपा। लाभार्थियों को संबोधित करते हुए, कोनप्पा ने कहा कि सभी पात्र आदिवासियों को चरणबद्ध तरीके से भूमि का मालिकाना हक प्रदान किया जाएगा, जबकि गैर-आदिवासियों को जल्द ही पट्टे मिलने वाले हैं। उन्होंने कहा कि यह राव ही थे जिन्होंने कठिनाइयों का सामना करने वाले आदिवासियों के लंबे समय से लंबित सपने को साकार किया। उन्होंने कहा कि लाभार्थी शीर्षकों का उपयोग करके रायथु बंधु, रैतु बीमा, फसल ऋण और इलेक्ट्रिक मोटर पंप और बिजली की आपूर्ति का लाभ उठा सकते हैं।

विधायक ने आगे कहा कि भारत राष्ट्र समिति सरकार कृषक समुदाय के कल्याण के लिए कई योजनाएं लागू कर रही है। उन्होंने कहा कि राव तेलंगाना में विभिन्न नवीन योजनाओं को लागू करने और अभूतपूर्व विकासात्मक गतिविधियों को शुरू करके देश के लिए एक आदर्श मॉडल के रूप में खड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि योजनाओं और विकास से सभी वर्गों को लाभ मिल रहा है। कोनप्पा ने आगे कहा कि आदिवासी अब जमीन के स्वामित्व को लेकर असुरक्षित महसूस किए बिना खुशी-खुशी विभिन्न फसलें उगा सकते हैं और कोई भी वन अधिकारी उन्हें जमीन जोतने के लिए परेशान नहीं करेगा। अतीत में, आदिवासी इस डर में जी रहे थे कि उनकी ज़मीनें वापस ले ली जाएंगी। उन्होंने कहा कि आदिवासी हमेशा के लिए भूमि स्वामित्व जारी करने के लिए राव के ऋणी रहेंगे। कलेक्टर हेमंत बोरकड़े और भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के स्थानीय नेता उपस्थित थे।

सीवी आनंद ने सड़क दुर्घटना पर जताया अफसोस

सतर्कता बरतने का आह्वान किया

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। एक घातक सड़क दुर्घटना की दिल दहला देने वाली खबर के बाद मंगलवार को शहर निराशा और दुख की स्थिति में डूब गया, जिसमें एक मां और उसकी बेटी की जान चली गई। अनुराधा (45) और ममता (25) की नियमित सुबह की सैर के दौरान लापरवाही से चलाई गई कार की चपेट में आने से दर्दनाक मौत हो गई। हैदराबाद के पुलिस आयुक्त, सीवी आनंद ने सोशल मीडिया पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा, लापरवाही से, लापरवाही से गाड़ी चलाने, कम उम्र के ड्राइवर द्वारा कीमती जिंदगियों को बर्बाद कर दिया गया-दिल दहला देने वाला। हमारी भलाई के लिए, अपने बच्चों पर नियंत्रण रखने और उनकी हरकतों पर कड़ी नजर रखने का समय आ गया है।'' आयुक्त का ट्वीट एक शोक संतप्त समुदाय के साथ गूंज उठा जो कम उम्र में ड्राइविंग के अंतर्निहित मुद्दे और इसके संभावित घातक परिणामों को संबोधित करने के लिए उत्सुक था। इस दुखद घटना ने समुदाय के भीतर बढ़ती सतर्कता की आवश्यकता और कम उम्र में ड्राइविंग पर अंकुश लगाने के उपायों के बारे में बातचीत शुरू कर दी है।

मानव तस्करों की निगरानी के लिए साइबराबाद पुलिस ने का विशेष अभियान

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। साइबराबाद पुलिस ने साइबराबाद के सभी पांच क्षेत्रों बालानगर, माधापुर, राजेंद्र नगर, शमशाबाद और मेडचल में 142 मानव तस्करों पर निगरानी कार्यक्रम चलाया। ऐसे लोगों की गतिविधियों पर नजर रखी गई जो सेक्स रैकेट के आयोजक या उप आयोजक या बिचौलिए थे और अनैतिक यौन शोषण के लिए लड़कियों को लाते या उपलब्ध कराते रहे हैं। साइबराबाद पुलिस मानव तस्करी को रोकने के लिए बेहद गंभीर है, जैसा कि पहले भी देह व्यापार रैकेटों के सक्रिय भंडाफोड़ में देखा गया है। यह निगरानी और ट्रैकिंग कार्यक्रम पिछले कार्यक्रम के अनुरूप है जिसमें यौन अपराधियों को बीट पुलिसिंग और स्थानीय खुफिया नेटवर्क की प्रणाली के माध्यम से ट्रैक किया गया था।

पिछले ट्रैकिंग कार्यक्रम की तरह इस कार्यक्रम में सभी तस्करों के वर्तमान ठिकाने, उनके आवासीय क्षेत्रों और उनके पड़ोस के क्षेत्रों में उनकी गतिविधियों की जाँच करना, क्या अपराधी किसी अन्य क्षेत्र में किसी अन्य अपराध में शामिल है और अपराधियों के अद्यतन आवासीय विवरण दर्ज किए गए थे। तस्करों पर नियमित निगरानी रखने से वे दोबारा अपराध करने और देह व्यापार करने से बचते हैं। पुलिस अधिकारियों के अनुसार साइबराबाद पुलिस द्वारा सभी यौन अपराधियों और मानव तस्करों का रिकॉर्ड रखा जा रहा है। जनता की सुरक्षा, संरक्षा और संरक्षा के लिए ऐसी गतिविधियों पर सावधानीपूर्वक और बार-बार नजर रखना आवश्यक है।

भारी बारिश से आखिरकार सिद्दिपेट व संगारेड्डी और मेदक की प्यास बुझी

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। एक महीने के लंबे इंतजार के बाद आखिरकार सिद्दीपेट, संगारेड्डी और मेडक जिलों में पिछले 24 घंटों में बहुत जरूरी भारी बारिश हुई है, जिससे सूखी जमीनों को राहत मिली है। इन तीन जिलों में मंगलवार तक जारी सूखा दौर अब भारी बारिश के कारण बाधित हो गया है, जिससे किसानों और निवासियों की उम्मीदें फिर से जीवंत हो गई हैं। विशेष रूप से सिद्दीपेट जिले में मंगलवार को 62.4 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई, जबकि धूलमिट्टा मंडल मुख्यालय में अभूतपूर्व 159.5 मिमी वर्षा हुई, जिसने एक नया रिकॉर्ड बनाया। थोगुटा और मिरुदोड्डी में क्रमशः 125.3 मिमी और 128.5 मिमी औसत वर्षा हुई, जबकि मद्दुरु मंडल में 116 मिमी बारिश हुई। बुधवार शाम तक सिद्दीपेट जिले के कई हिस्सों में भारी बारिश जारी रही, 1 जून से अब तक कुल 142.5 मिमी बारिश हुई, जो सामान्य औसत 125.7 मिमी से 13 प्रतिशत अधिक है। इस स्वागत योग्य अधिशेष ने किसानों के चेहरे पर मुस्कान ला दी, क्योंकि धाराएँ बहने लगीं और टैंकों में आशाजनक प्रवाह प्राप्त हुआ।

मेदक जिले में इसी अवधि के दौरान औसतन 44.6 मिमी बारिश दर्ज की गई। चिलपिचेड और अल्लादुर्गम मंडल में क्रमशः 116.6 मिमी और 105.5 मिमी वर्षा हुई। संगारेड्डी जिले में औसतन 41.8 मिमी बारिश हुई, वटपल्ली और रायकोड मंडल में क्रमशः 128.7 मिमी और 114.3 मिमी बारिश हुई, जबकि एंडोले मंडल में 105.9 मिमी बारिश हुई। इन जिलों के किसान आशावादी हैं कि समान तीव्रता वाली कुछ और दिनों की बारिश महीने की उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त होगी।

सीपी ने तीन इंपेक्टरों और छह कांस्टेबलों को पुरस्कृत किया

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। नगर पुलिस आयुक्त सीवी आनंद ने तीन निरीक्षकों, एम. नरेंद्र, एस. सईदा बाबू, और मोहम्मद खलील बाशा, और छह कांस्टेबलों मोहम्मद हसीब अहमद, एस. शिवाजी, शेख खादीर, एम. गणेश, के. साई प्रसाद, भानु चंदर, के साथ ही सहायक लोक अभियोजक (ग्रेड -1) श्रीमती श्रीवाणी को भिखारियों की हत्या करने वाले कुख्यात मनोरोगी हत्यारे को आजीवन कारावास की सजा सुनिश्चित करने में उनके ठोस प्रयासों की सराहना की। सीमित सुराग के बावजूद, पुलिस ने इसे एक चुनौती के रूप में लिया और मामले की जांच की जिसके कारण आरोपी पकड़ा गए। एपीपी के साथ संपर्क करके, स्टाफ अधिकारियों की सहायता से आईओ ने अदालत के सामने ठोस तथ्य पेश किए। उनके प्रयासों के फलस्वरूप दोषसिद्धि हुई और अदालत ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई। सीपी आनंद ने टीम के काम की सराहना की और नकद पुरस्कार, प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर एआर श्रीनिवास, अतिरिक्त सीपी (अपराध एवं एसआईटी) उपस्थित रहे।

रोनाल्ड रॉस ने जीएचएमसी आयुक्त के रूप में कार्यभार संभाला

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। रोनाल्ड रॉस ने बुधवार को जीएचएमसी के नए आयुक्त के रूप में कार्यभार संभाला। रोनाल्ड रोज़ ने लोकेश कुमार का स्थान लिया है जो पहले जीएचएमसी आयुक्त के रूप में कार्यरत थे। रोनाल्ड रोज़ पहले वित्त सचिव के रूप में कार्यरत थे। अब उनको जीएचएमसी आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया है। यहां जीएचएमसी आयुक्त के रूप में काम कर चुके लोकेश कुमार को केंद्रीय चुनाव आयोग की सिफारिश पर राज्य सरकार ने राज्य चुनाव का अतिरिक्त सीईओ नियुक्त किया है। नये आयुक्त का पदभार ग्रहण करने के बाद रोनाल्ड रोज ने मेयर गद्दवाल विजयालक्ष्मी से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर, संबंधित विभागों के एचओडी, जोनल और डिप्टी कमिश्नरों ने जीएचएमसी के नए आयुक्त के रूप में कार्यभार संभालने वाले रोनाल्ड रॉस और स्थानांतरण पर आए लोकेश कुमार से मुलाकात की। नए आयुक्त के रूप में कार्यभार संभालने वाले रोनाल्ड रॉस ने पहले मेदक, निज़ामाबाद, महबूबनगर के जिला कलेक्टर, वित्त सचिव, गुरुकुल स्कूल सचिव, अतिरिक्त आयुक्त और जीएचएमसी में जोनल कमिश्नर के रूप में काम कर चुके है। इस अवसर पर ईवीडीएम निदेशक प्रकाश रेड्डी, ईएनसी जियाउद्दीन, अतिरिक्त आयुक्त प्रियंका आला, वी.कृष्णा, सरोजा, विजयालक्ष्मी, जयराज कैनेडी, एचआरडीसीएल सीई सरोजिनी देवी, प्रोजेक्ट सीई देवानंद, सी.सी. पी देवेंदर रेड्डी, मुख्य परीक्षक वेंकटेश्वर रेड्डी, अतिरिक्त सीपी श्रीनिवास, हाउसिंग ओएसडी सुरेश कुमार, सीएम और एचओ डॉ. पद्मजा, सीपीआरओ मोहम्मद मुर्तुजा, सचिव लक्ष्मी, पीडी सौजन्या, संयुक्त आयुक्त शशि रेखा वेंकट रेड्डी, संध्या, एसई वेंकटरमण, विद्यासागर, रविंदर राजू, रत्नाकर, अशोक रेड्डी, चिन्ना रेड्डी, शंकर पीआरओ पद्मा और अन्य ने भाग लिया।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

केरल पुलिस के हत्थे चढा तेलंगाना निवासी 'फ्लाइंग' चोर

तिरुवनंतपुरम, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। केरल पुलिस ने यहां एक 'हाई प्रोफाइल' चोर को गिरफ्तार किया है, जो बंद घरों से सोना चुराने के लिए हवाई जहाज से यात्रा करता था। तेलंगाना निवासी उमा शंकर को यहां हवाई अड्डे से गिरफ्तार किया गया। खम्मम जिले के रहने वाले शंकर मई में मंदिर दर्शन के लिए राज्य की राजधानी आए थे। पुलिस के मुताबिक, शंकर अपने गृह राज्य से उड़ान भरता है और पिछले दो महीनों में उसने चार बार उड़ान भरी। जून में वह उन घरों की पहचान करने के लिए एक ऑटो-रिक्शा में शहर में घूमे, जहां ताले लगे हुए थे। रेकी के बाद, वह रात में गूगल मैप का उपयोग करके फिर से आया और घरों में घुस गया। पुलिस ने कहा कि शंकर के पास उपकरणों की एक पूरी किट है जिसका उपयोग वह घरों में सेंध लगाने के लिए करता है और केवल सोना लेता है। सोना लेकर भागने के बाद, वह उसे गिरवी रख देता है और गिरवी रखा हुआ सोना लेने के लिए कभी नहीं लौटता। राज्य की राजधानी में, शंकर ने तीन सफल प्रयास किए और छह लाख रुपये में सोना गिरवी रखा। लूट की वारदातें दर्ज होने के बाद पुलिस को एक ऑटो रिक्शा चालक से अहम जानकारी मिली, जो दिन में शंकर को घुमाने ले गया था। इससे पुलिस को शंकर को गिरफ्तार करने में मदद मिली। पुलिस ने यह भी कहा कि शंकर अपनी किशोरावस्था में तेलंगाना में हिस्ट्रीशीटर था।

महिलाओं को मासिक धर्म पर खुलकर चर्चा करने के लिए आगे आना चाहिए : डॉ. जयामोहन

विजयवाड़ा रेलवे स्टेशन पर सिक्का संचालित सेनेटरी नैपकिन डिस्पेंसर का उद्घाटन

हैदराबाद, 5 जुलाई (स्वतंत्र वार्ता)। विजयवाड़ा स्टेशन की जरूरतमंद महिला यात्रियों और कामकाजी महिला बल की सुविधा के लिए, दक्षिण मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन (एससीआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ), विजयवाड़ा द्वारा स्वर्ण जयंती वेटिंग हॉल, प्लेटफार्म नंबर 1, विजयवाड़ा स्टेटिन में एक सिक्का संचालित सेनेटरी नैपकिन डिस्पेंसर और नैपकिन इंसीनरेटर स्थापित किया गया था। डॉ. जया मोहन, अध्यक्ष, एससीआरडब्ल्यू डब्ल्यूओ, विजयवाड़ा और एससीआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ टीम ने नैपकिन डिस्पेंसर का उद्घाटन किया। नैपकिन डिस्पेंसर और भस्मक की खरीद एससीआरडब्ल्यू डब्ल्यूओ, विजयवाड़ा के फंड से की गई थी। विजयवाड़ा स्टेशन के स्टेशन निदेशक कार्यालय के वीआईपी लाउंज रूम में महिला कर्मचारियों की एक सभा को संबोधित करते हुए डॉ. जया मोहन ने कहा कि यह किसी भी कार्यस्थल पर सबसे अधिक मांग वाली और आवश्यक सुविधा है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिए दैनिक गतिविधियों में सक्रिय और फिट रहने के लिए उचित मासिक धर्म स्वच्छता बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। डॉ. जया मोहन ने महिलाओं से मासिक धर्म स्वास्थ्य से जुड़े कलंक और शर्म को तोड़ने का आह्वान किया और खुले मंचों पर चर्चा के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने कर्मचारियों से इस बात का प्रचार-प्रसार करने और महिला यात्रियों को विजयवाड़ा स्टेशन पर उपलब्ध इस आवश्यक सुविधा के बारे में जागरूक करने की अपील की। उन्होंने फील्ड स्टाफ को समय-समय पर सेनेटरी नैपकिन डिस्पेंसर की उचित रीफिल और कार्यशील स्थिति सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया। डॉ. के. सारदा, स्त्री रोग विशेषज्ञ, एसीएमएस और उपाध्यक्ष, एससीआरडब्ल्यू डब्ल्यूओ ने अच्छे मासिक धर्म स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए बहुमूल्य सुझाव दिए और वर्तमान में बाजार में उपलब्ध विभिन्न सैनिटरी नैपकिन उत्पादों के बारे में जानकारी दी। डॉ. के. सारदा ने कहा कि किसी भी पैड को निपटाने का आदर्श समय 6-8 घंटे के बीच है और उन्होंने कर्मचारियों से लंबे समय तक उपयोग से बचने की अपील की। उन्होंने मासिक धर्म कप के उपयोग और इस्तेमाल किए गए नैपकिन के निपटान के लिए पर्यावरण-अनुकूल तरीकों का भी सुझाव दिया। पी.बी.एन. स्टेशन निदेशक प्रसाद ने महिला यात्रियों की सहायता के लिए परोपकारी पहल के लिए एससीआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ टीम को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि सैनिटरी नैपकिन अब पांच रुपये की मामूली कीमत पर उपलब्ध हैं। इस अवसर पर स्वर्ण जयंती प्रतीक्षालय में महिला यात्रियों को सेनेटरी डिस्पेंसर और इंसीनरेटर के उपयोग के संबंध में एक लाइव प्रदर्शन दिया गया। महिला यात्रियों से इस आवश्यक सुविधा का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करने का आग्रह किया गया। श्रीमती डी. श्रीदेवी, एससीआरडब्ल्यू डब्ल्यूओ, उपाध्यक्ष, पी.बी.एन. प्रसाद, स्टेशन निदेशक, विजयवाड़ा सुश्री नुसरत एम मंदरूपकर, पीआरओ, एससीआरडब्ल्यू डब्ल्यूओ कार्यकारी सदस्य, निरीक्षक, सभी विभागों के कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.